ISBN: 978-93-342-5461-7

विद्यार्थियों में गढ़कुंडार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन



• डॉ. राजीव अग्रवाल
• दीपक कुमार
• सजल बाजपेयी

विद्यार्थियों में गढ़कुंडार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन

डॉ. राजीव अग्रवाल
एसोसिएट प्रोफेसर- शिक्षा संकाय
अतर्रा पी० जी० कॉलेज, अतर्रा (बाँदा)

दीपक कुमार
एम०ए० (इतिहास), एम०एड०

सजल बाजपेयी
बी०एल०एड०

विद्यार्थियों में गढ़कुंडार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन

डॉ. राजीव अग्रवाल
दीपक कुमार
सजल बाजपेयी

E-book संस्करण: 2024
मूल्य: रु 69

ISBN: 978-93-342-5461-7

प्रकाशक-
सजल बाजपेयी
ग्राम, पोस्ट - मऊ, जिला - चित्रकूट (उत्तर प्रदेश) - 210209
Mob - 8887913538
E-mail : sajalbajpai256@gmail.com

प्राक्कथन

किसी भी राष्ट्र का इतिहास, उसके वर्तमान और भविष्य की नीव होता है। देश का इतिहास जितना गौरवमयी होगा वैधिक स्तर पर उसका स्थान उतना ही ऊंचा माना जावेगा। वैसे तो बीता हुआ कल कभी वापस नहीं आता लेकिन उस काल में बनी इमारती और लिखे गये साहित्य उन्हें हमेशा सजीव बनाये रखते हैं।

यह सत्य है कि वक्त रहते यदि हमने अपनी गलतियों को नहीं सुधारा तो हम अपनी ऐतिहासिक विरासतों को खो देंगे। अतः आवश्यकता है कि हम सभी अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक हो। साथ ही आवश्यकता इस बात की भी है कि समाप्त हो चुकी या समाप्ति की कगार पर पहुंच चुकी ऐतिहासिक विरासतों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाये तथा भविष्य के लिये इन्हें संरक्षित किया जाये। यह तभी सम्भव होगा जब देल का प्रत्येक नागरिक अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक होगा तथा उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी को समझेगा।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक **"गढ़कुंडार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन"** है। इस पुस्तक को छः अध्यायों में विभक्त किया गया है, जिनका विवरण निम्न प्रकार है-

प्रथम अध्याय में शिक्षाः विकास की प्रक्रिया, इतिहास का आशय, वर्गीकरण एवं महत्वः शिक्षा में इतिहास का स्थान, इतिहास शिक्षण की समस्याएँ, निवाड़ी का इतिहास, निवाड़ी की ऐतिहासिक विरासत, प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या, अध्ययनके उद्देश्य, परिसीमांकन, शोध विधि, शोध उपकरण, शोध का महत्व एवं सार्थकता पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय में अध्ययन से सम्बन्धित कतिपय शोध कार्य की समीक्षा प्रस्तुत की गयी है।

तृतीय अध्याय गढ़कुंडार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत का सचित्र वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में शोध विधि, शोध अभिकल्प, लक्षित प्रतिदर्श, जनपद एवं संस्थाओं का चयन, शोध उपकरण,परीक्षण को प्रशासन, फलांकन एवं सांख्यिकीय प्रविधियों का सविस्तार वर्णन किया गया है।

पंचम अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन प्रस्तुत किया गया है।

षष्ठ अध्याय में निष्कर्ष, सुझाव, शैक्षिक उपादेयता एवं अध्ययन की सीमाएँ प्रस्तुत की गयी हैं।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबन्ध पर आधारित है। शोध कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है एवं नवीन अनुसन्धानों को प्रेरणा मिलती है। किसी भी शोध कार्य का तब तक कोई अर्थ नहीं है जब तक कि वह जनसामान्य के लिए सुलभ न हो। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया

गया एक प्रयास है। यह पुस्तक विद्यालय से सम्बन्धित विभिन्न घटकों में प्रेरणा का संचार करने में निश्चय ही सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वभाविक है। अतः यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो हम अत्यन्त आभारी होंगे तथा भावी संस्करण में संशोधन का प्रयास करेंगे।

दिनांक

18/05/2025

डॉ. राजीव अग्रवाल

दीपक कुमार

सजल बाजपेयी

अनुक्रमणिका

अध्याय प्रथम

अध्ययन परिचय

1.1 प्रस्तावना

किसी भी देश की पहचान उस देश के सांस्कृतिक और पुरातात्विक विकास से होती है। भारत में भी वैदिक काल से लेकर वर्तमान समय तक अनेक शहरों, मंदिरों और स्थलों इत्यादि की खोज की जा चुकी है, जिन्होंने इस देश के महत्व को विश्व स्तर पर कई गुना बढ़ाया है। भारत एक जीवंत और विविध सांस्कृतिक, विशाल भूगोल और इतिहास से जुड़ा हुआ देश है। देश की ऐतिहासिक उपलब्धियों के सबूत अभी भी वास्तुकला, विरासत स्थलों और परंपराओं के पूजा और अध्ययन में दिखाई देते हैं। इन विरासत स्थलों में से कुछ बहुत अधिक वैश्विक और राष्ट्रीय ध्यान आकर्षित करते हैं। हालांकि, इन विरासत स्थलों को शहरीकरण की जोखिम, आर्थिक विकास और अप्रत्याशित परिवर्तन के निहितार्थ का सामना करना पड़ता है। विश्व धरोहर स्थलों, प्राचीन स्मारकों और पुरातात्विक स्थलों का संरक्षण राष्ट्रीय महत्व को बनाये रखने का एक महत्वपूर्ण साधन है और पर्यटन के विकास, जो आर्थिक विकास के प्रमुख स्रोत में से एक है को बढ़ावा देने में मदद करता है।

गढ़कुंडार दुर्ग मध्यप्रदेश के निवाड़ी जिले में स्थित एक ऐतिहासिक स्थल है। बुंदेलखण्ड क्षेत्र में निवाड़ी जिले के कुढ़ार गाँव के निकट स्थित यह स्थल निवाड़ी रेलवे स्टेशन से लगभग 34.5 किमी दूर है। वहीं दूसरी ओर राजा महल, ओरछा का किला, जहाँगीर महल, शीश महल, फूल बाग़ आदि निवाड़ी जनपद के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। गढ़कुंडार दुर्ग को निवाड़ी के सुन्दर व मध्यकाल के ऐतिहासिक स्थलों में गिना जाता रहा है। इस स्थल में माँ गिद्धवाहिनी का प्रसिद्ध मंदिर स्थित है।

गढ़कुंडार दुर्ग ऐतिहासिक दृष्टि से भी यह स्थान काफी महत्वपूर्ण है। काफी समय तक चंदेलों ने यहाँ शासन किया है। अपने शासनकाल के दौरान चंदेल राजाओं ने कई ऐतिहासिक किलों और मंदिरों आदि का निर्माण करवाया था। इसके पश्चात इस जगह पर कई बुंदेलों वखंगार राजाओं ने शासन किया। गढ़कुंडार दुर्ग ऐतिहासिक दृष्टि से काफी प्रमुख माना जाता है। इस स्थल में कई स्थानों पर टूटी हुई शिल्पाकृतियाँ व मूर्तियाँ बिखरी हुई हैं, जिन्हें पुरातत्व विभाग द्वारा एकत्र करके संग्रहालय में सुरक्षित रखवा दिया गया है। ये शिल्पाकृतियाँ व मूर्तियाँ रोचक तथा आनंददायक हैं जिनके माध्यम से विद्यार्थियों की रचनात्मक क्षमता, सौंदर्यबोध व आलोचनात्मक समझ विकसित होती है।

गढ़कुंडार दुर्ग मध्यप्रदेश के निवाड़ी जिले तरीचरकला रोड में कुढ़ारगांव के निकट स्थित है। यह एक तरह का किला है यह किला चंदेलों का सूबाईमुख्यालय और सैनिक अड्डा था। इसकी दीवारें चौड़ी और मजबूत हैं। इस स्थल में स्थापत्य कला की कई शैलियाँ दिखाई देती हैं।

वास्तुकला की दृष्टि से यह क्षेत्र महत्वपूर्ण रहा है। यहाँ पर खजुराहो शैली, तथा पंचायतन नागर शैली के दर्शन होते हैं। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि गढ़कुंडार दुर्ग निश्चित ही निवाड़ी जिले की बहुमूल्य ऐतिहासिक धरोहर है। यह क्षेत्र शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं तथा पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करने में पूर्ण समर्थ है।

यहाँ के समृद्ध दुर्ग, मंदिर तथा बावड़ी की प्रकृति व रचना से स्पष्ट होता है कि यह क्षेत्र आर्थिक दृष्टि से एक समृद्धशाली क्षेत्र रहा है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र के समीप कई पहाड़ी तथा अन्य बहुमूल्य धातुओं के संबंध में जानकारी मिली है। इसके अतिरिक्त आस-पास के क्षेत्रों में कीमती पत्थर पाए जाते हैं जो उस समय के आर्थिक समृद्धि के घोतक थे। इस प्रकार इस क्षेत्र में आर्थिक समृद्धि ने यहाँ की कला तथा संस्कृति को विकसित होने का शुभ अवसर प्रदान किया है।

मध्यप्रदेशके बुंदेलखंड क्षेत्र में निवाड़ी जिले में स्थित पौराणिक संदर्भ वाले ऐसे कई ऐतिहासिक दुर्ग व स्थल है। जो भारतीय इतिहास में सामरिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण रहे हैं। यह धरोहर स्थल निवाड़ी जिला मुख्यालय के निकट ही स्थित है। यह स्थल निवाड़ी के शानदार ऐतिहासिक स्थलों में एक माना जाता है। निवाड़ी जिले के ऊँची पहाड़ी के नजदीक स्थित इस स्थल में अनेक स्मारकों और मूर्तियों का खजाना है। इन चीजों से इतिहास के विभिन्न पहलुओं का पता चलता है। चंदेलों द्वारा बनवाया गया यह स्थल चंदेल शासन काल की वास्तु कला का उदाहरण है। दुर्ग के अंदर कई भवन और मंदिर हैं। इस दुर्ग में एक शानदार भव्य षट्कोणीयमंदिर है और बैठने का स्थान हैं, जिन पर बारीक डिजाइन और नक्काशी की गई है।

1.1.1 शिक्षा: विकास की प्रक्रिया

शिक्षा ही मानव विकास का मूल आधार है | शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपनी शारीरिक मानसिक, संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक शक्तियों को अनुशासित करता है । इस प्रकार मनुष्य के स्वानुशासन के विकास में 'शिक्षा' का महत्वपूर्ण स्थान है। जब से बालक इस संसार में जन्म लेताहै, तभी से वह वातावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करना प्रारंभ कर देता ।वातावरणएवंपर्यावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करने में शिक्षा की महती भूमिका होती है।

प्रारंभिक अवस्था में बालक की सीखने की गति प्रायः कम होती है। धीरे-धीरे जब बच्चा बड़ा होता है तो वह वातावरण से कुछ नए अनुभव अर्जित करता है और उसके फलस्वरुप उसका व्यवहार परिवार एवं समाज तथा समुदाय के अनुकूल हो जाता है। बालक के अनुभव का यह क्रम दिन-प्रतिदिन बढ़ता रहता है, जिसके परिणामस्वरूप उसका व्यवहार

संयमित होने लगता है। शिक्षा के द्वारा ही एक असभ्य, अविकसित, अपरिपक्व मानव, सुसभ्य एवं सुविकसित इंसान के रूप में परिवर्तित हो जाता है|

शिक्षा केवल मानव जाति के व्यवहार में परिवर्तन लाने तक ही सीमित नहीं है "अपितु उसका चारित्रिक विकास भी करती है संसार के अन्य प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य पर शिक्षा का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक होता है क्योंकि मनुष्य एक विवेकशील एवं बुद्धिमान प्राणी है शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य के पशुवत व्यवहार में परिवर्तन करके उसे एक सामाजिक प्राणी बनाया जाता है। सामाजिक प्राणी बनने की प्रक्रिया में परिवार विद्यालय, समाज तथा समुदाय बालक की सहायता करते हैं। बालक की शिक्षा के विकास में प्राथमिक माध्यमिक तथा उच्च स्तर पर अलग-अलग कार्यक्रम निर्धारित किए जाते हैं, जिससे बालक के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य की प्राप्ति आसानी से की जा सके। बालक की शिक्षा में माध्यमिक शिक्षा अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है| उच्च माध्यमिक शिक्षा स्तर पर ही बालक की शैक्षिक व्यवसायिक एवं सामाजिक परिपक्वता की प्राप्ति होती है, जो उसके आगे आने वाले भविष्य की दिशा निर्धारित करती है।

समाज की आर्थिक व्यवस्था चार प्रकार की श्रेणियों में विभक्त रही है ब्राह्मण वर्ग से अपेक्षा की जाती थी कि वह समुदाय को पुरोहित, चिंतक, लेखक, विधायक, धार्मिक नेता तथा पथ प्रदर्शक देंगे। क्षत्रिय वर्ण समाज को योद्धा शासक प्रशासक, वैश्य समाज को उत्पादक, कृषक, शिल्पकार, व्यापारी देते थे। शूद्र वर्ण छोटे-छोटे कार्यों के लिए भृत्यों या नौकरी की आपूर्ति करते थे| इस प्रकार की प्रणाली में धर्म चिंतन तथा विद्या को सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया गया| सामाजिक व्यवस्था जन्म के आधार पर नहीं, अपितु व्यक्ति क्षमता व आंतरिक व्यवस्था के आधार पर निर्धारित की गई| वर्णों के आधार पर तदानुरूपी चार पुरुषार्थ स्थापित किए गए जो उस समय की दार्शनिक सोच के द्योतक हैं- ब्राह्मण-मोक्ष, क्षत्रिय काम, वैश्य अर्थ, शूद्र-धर्म कालांतर में यही वर्ण व्यवस्था जाति व्यवस्था में परिणत हुई तथा जातीय संघर्ष का जन्म हुआ जो आज के सूचना तकनीकी युग में भी यह संघर्ष उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यमान है, चाहे वह राजनीति में हो, शिक्षा में हो, या शासन में हो, यह राष्ट्र निर्माण में बाधा स्वरूप है। इस सामाजिक विघटन को दूर करने के लिए समाज में ऐसी शिक्षा का होना नितांत आवश्यक है जो हमें संकीर्ण सोच से ऊपर उठाकर वैश्विक स्तर तक पहुंचा सके, और इस सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी युग में एक सकारात्मक सोच का विकास कर सके। वर्तमान समय में उच्च माध्यमिक शिक्षा की जो स्थिति है उसमें कुशल शिक्षक के साथ वर्तमान तकनीकी भी महत्वपूर्ण भूमिका में होती है, क्योंकि उच्च माध्यमिक शिक्षा के संदर्भ भारत की स्थिति अभी निराशाजनक है।

1.1.2 इतिहास का आशय, वर्गीकरण एवं महत्व

इतिहास मानव जीवन की समस्त क्रियाओं पर प्रकाश डालने वाला एक कथ्य या कहानीहै, जिसमें मानव की समस्त क्रियाओं तथा उत्थान पतन की झाँकी हमें देखने को मिलती है। इतिहास के द्वारा हम अतीत के उन सारे गुण दोषों को देख पाते

हैं जो मानव के द्वारा सम्पादित किये जाते रहे हैं। वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में इतिहास विषय का शिक्षण व अध्ययन की महती आवश्यकता है। इस विषय का अर्थ, परिभाषाएं, अवधारणाएं, उद्देश्य तथा उपयोगिता अत्यन्त व्यापक एवं दूरगामी है। अतः भविष्य निधि के रुप में इतिहास विषय का अध्ययन व शिक्षण की व्यवस्था आवश्यक है। अतः समस्त मानव जाति को इतिहास विषय के अध्ययन हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए तथा इसकी सुरक्षा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

इतिहास मानव जीवन की समस्त क्रियाओं पर प्रकाश डालने वाला एक कथ्य या कहानी है जिसमें मानव जीवन की समस्त क्रियाओं तथा उत्थान पतन की झाँकी हमें देखने को मिलती है। इसमें समस्त कृत्यों को क्रमवार ढंग से निष्पक्ष रुप से प्रस्तुत करने की क्षमता है। इतिहास नामक शिक्षा शाखा की उत्पति सर्वप्रथम यूनान में मिलती है। परीक्षा सिद्ध गवेषणा के अर्थ में स्वयं इतिहास शब्द का प्रयोग उस समय हुआ जब किसी विशेषज्ञ के द्वारा वाद विवाद के निबटारे के लिए अभ्यर्थना की जाती थी। अतः इतिहासकार से अभिप्राय वाद-विवाद के निर्णय करने वाले व्यक्ति से होता था। सर्वप्रथम हिस्ट्री शब्द का प्रयोग करने वाला इतिहास का जनक हेरोडोटस था। इस प्रकार यह सर्वमान्य है कि हिस्ट्री अथवा इतिहास का उद्गम स्थल प्राच्च संस्कृति का केन्द्र यूनान रहा है। वैसे विद्वानों और इतिहासकारों ने इतिहास शब्द का प्रयोग संकीर्ण तथा व्यापक दोनों अर्थों में किया हैं। सबसे पहले हम इसके शाब्दिक अर्थ पर प्रकाश डालना चाहेंगे तदुपरांत इसके संकीर्ण और व्यापक अर्थों का विवेचन करेंगे।

इतिहास विषय की आवश्यकता पर बल देते हुए इतिहासकार रोमिलाथापर का मानना है कि मानवीय एवं राष्ट्रीय विरासत को समझने के लिये बालकों को इतिहास का ज्ञान देना अत्यावश्यक है। इतिहास विषय के अध्ययन से बालकों में स्थानीय राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के ज्ञान से परिचित होने का सुअवसर प्राप्त होता है जिससे वे अपने देश के स्थानीय स्तर के इतिहास को जानते हुए राष्ट्रीय तथा स्तर के इतिहास को समझ पाते है। 19 वीं शताब्दी के अन्तिम चरण तथा 20 वीं सदी के प्रारम्भ में जब विज्ञान का बोलबाला हो गया था,तब इतिहास को समाज के सच्चे विज्ञान के रूप में देखा जाने लगा था। केवल इतिहासकारों ने ही नहींवरन राजनीति शास्त्रियों तथा दार्शनिकों ने भी इसे विज्ञानों के विज्ञान का अध्ययन करना आरम्भ कर दिया था। फिर भी इतिहास की प्रकृति के सम्बन्ध में विवाद बना रहा। कुछ विद्वानों ने इतिहास को कारण तथा कार्यकारण भाव का सूचक माना। इसके विपरीत दूसरे विद्वानों ने इतिहास की समाज के सच्चे विधान या विज्ञानों के विज्ञान के रूप में देखा। आज कोई भी इस बात से सहमत नहीं होता है कि इतिहास अलौकिक शक्तियों के हस्तक्षेप से प्रभावित होता है। अब सामान्यतः यह विश्वास किया जाने लगा है कि इतिहास को उन्हीं विधियों का अनुसरण करके समझा जा सकता हैए जिनका अनुसरण भौतिक और सामाजिक वैज्ञानिक करते हैं। इसी कारण आज इतिहास को उस अध्ययन क्षेत्र के रूप में देखा जाता है जो वास्तविकता का वर्णन करता है। इस अध्ययन क्षेत्र में वैज्ञानिक विधि का प्रयोग करके ही वास्तविकता की खोज की जाती है।

इतिहास को सार्वभौमिक रूप से विद्यालय पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण विषय माना गया है। यह समाज में मनुष्य के विकास का अध्ययन है। इतिहास के अध्ययन के अभाव में न तो हम अपने वर्तमान को समझ सकते हैं और न भविष्य का आंकलन कर सकते हैं। इसी कारण पाठ्यक्रम में इतिहास को स्थान प्रदान किया गया है। इतिहास के शिक्षण से विद्यार्थियों में अपने देश के अतीत के प्रति प्रेम एवं गौरव की भावना उत्पन्न होती है एवं इसके ज्ञान से जाति ए धर्म ए भाषा आदि के बन्धनों को समाप्त कर भावनात्मक एकता का विकास किया जा सकता है। इतिहास के द्वारा छात्रों को ज्ञान का भण्डार प्रदान किया जाता है अर्थात् इतिहास स्वयं ज्ञान का भण्डार है जिसमें बालक स्वेच्छानुसार अन्वेषण कर सकते हैं। इतिहास उनको विभिन्न राष्ट्रों व्यक्तियों, उनके विचारों, परम्पराओं, प्रथाओं तथा समस्याओं का ज्ञान प्रदान करता है। इतिहास में बालक को अपने मस्तिष्क का सबसे अधिक उपयोग करना पड़ता है उनको स्मरण रखने के लिए स्मरण शक्ति का उपभोग करना पड़ता है। जब बालक इतिहास में विभिन्न सभ्यताओं एवं संस्कृतियों संस्थाओं आदि के विषय में ज्ञान प्राप्त करता है तब उसकी कल्पना शक्ति को विकसित होने के बहुत से अवसर प्राप्त होते हैं। इन सभी में प्रमुख लाभ इतिहास के अध्ययन से यह होता है कि बालक निष्पक्षता एवं अपनी योग्यता के अनुसार तथ्यों को संकलित, परीक्षित एवं समन्वित करना सीख जाता है। इतिहास बालक के मानसिक अन्तरिक्ष को विस्तृत करता है, जिससे वह समस्त वसुधा को कुटुम्ब समझने के लिए उद्यत हो जाता है। वह समस्त विश्व को ऐक्य के दृष्टिकोण से देखता है। इस प्रकार इससे उसमें सत्य, देश, प्रेम के साथ-साथ विश्वबन्धुत्व की भावना भी विकसित हो जातीहै।

इतिहास का प्रमुख कार्य यह स्पष्ट करना है कि मानव तथा समाज का विकास किस प्रकार हुआ। उसका यह कार्य नहीं है कि वह राजाओं, रानियों, युद्धों, सन्धियों तथा तिथियों के विषय में ही विवरण प्रस्तुत करे इतिहास अतीत के वर्णन द्वारा वर्तमान का स्पष्टीकरण करता है। वर्तमान की विषद रीति से सहृदयतापूर्वक व्याख्या करना ही इतिहास का महान उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य है। भावनात्मक एवं राष्ट्रीय एकता आधुनिक भारत की एक महत्वपूर्ण माँग है जिसे किसी के द्वारा अस्वीकृत नहीं किया जा सकता। भावात्मक एकता के लिए इतिहास का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है जिसके महत्व को निम्न बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

➢ शैक्षिक महत्व

शैक्षिक दृष्टि से इतिहास का ज्ञान अत्यंत महत्वपूर्ण है। इतिहास भावी शिक्षा का आधार है। इतिहास मानव जीवन को परिष्कृत, पुष्पित तथा पल्लवित करती है। यह मनुष्य को परिपक्व बुद्धिमान तथा अनुभवी बनाने वाला एक उपयोगी विषय है। अतीत के आधारशिला पर वर्तमान का निर्माण करने तथा भावी मार्गदर्शन के लिए इतिहास मनुष्य को सक्षम बनाता है। हीगेल ने लिखा है कि मनुष्य इतिहास से वह शिक्षा प्राप्त करता है जो अन्य विषयों में अप्राप्त है।

➢ व्यावसायिक महत्व

व्यावसायिक दृष्टि से भी इतिहास का कम महत्व नहीं हैं। इतिहास का ज्ञान प्राप्त करने वाले व्यक्ति पुस्तकालयों संग्रहालयों तथा अन्य संस्थाओं में कार्य करने का सुअवसर प्राप्त कर सकते हैं। पत्रकारिता के लिए तो इतिहास का ज्ञान वरदान हैं। प्रशासकीय सेवा में भी इतिहास का ज्ञान सहायता कराता है क्योंकि इसके ज्ञान के माध्यम से प्रशासक मानवीय एवं सामाजिक समस्याओं को समझने एवं उनके समाधान में समर्थ होता है।

➢ नैतिक महत्व

इतिहास का नैतिक दृष्टि से भी महत्व है क्योंकि यह नैतिकता की शिक्षा प्रदान करता है। यह समाज के नैतिक मूल्यों को भी संरक्षित रखता है। विश्व के तमाम महापुरुषों की जीवनी को यह मानव समुदाय के समक्ष परोसकर उसकी नैतिकता का पाठ हमें पढ़ाताहै। इसके अतिरिक्त इतिहास अध्ययन के माध्यम से छात्र विश्व के महान व्यक्तियों के जीवन दर्शन से परिचित होता हैं तथा उनके आदर्शों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करते हैं। इससे छात्रों व पाठक के व्यक्तित्व में नैतिक गुणों का विकास होता है।

➢ अनुशासनात्मक महत्व

इतिहास विषय का अनुशासनात्मक महत्व भी कम नहीं है क्योंकि इतिहास अध्ययन द्वारा छात्रों की मानसिक शक्तियां प्रशिक्षित होती है। अन्य विषयों की तुलना में इतिहास अध्ययन में छात्रों को स्मरण एवं कल्पना के लिए अधिक अवसर प्राप्त होते है। जब छात्र इतिहास अध्ययन में किसी ऐतिहासिक घटना के कारण एवं परिणाम का सूक्ष्म अध्ययन करते हैं तो वे तथ्यों का परीक्षण एवं विवेचन करके साक्ष्यों के आधार पर निष्कर्ष निकालने का प्रयास करते हैं। इतिहास पुरुषों की जीवनी से छात्र अनुशासन, समय की उपयोगिता एवं आचरण आदि की बातों को सिखाता है।

➢ सांस्कृतिक महत्व

सांस्कृतिक दृष्टि से भी इतिहास का व्यापक महत्व है क्योंकि यह मानव मस्तिष्क एवं आचरण को सुसंस्कृत बनाने का प्रमुख एवंप्रभावपूर्ण साधन है। इसके अध्ययन से छात्र अपने देश की अतीत कालीन सभ्यता एवं संस्कृति के आधार पर वर्तमान संस्कृति को समझने में समर्थ होते हैं और उसके क्रमिक विकास का ज्ञान प्राप्त करते हैं। इतिहास द्वारा विद्यमान तथ्यों की अभिव्यक्ति, अपनी रीति रिवाज, अपनी प्रथाओं एवं अपनी परम्पराओं आदि का ज्ञान कराया जाता है। प्राचीन सभ्यता संस्कृति के अनुसार जो हमें आज वर्तमान संस्कृति प्राप्त हुई है,इसका श्रेय इतिहास को ही जाता है।

➢ सूचनात्मक महत्व

इतिहास का सूचनात्मक महत्व भी अधिक है। यह एक तरफ से सूचनाओं का विशाल और अद्भुत भण्डार है। छात्र इसके अध्ययन द्वारा विविध मानवीय समस्याओं के समाधान खोज सकते हैं। इसके वास्तविक अध्ययन से अवबोध के नये आयाम जोड़े जा सकते है। अतीत कालीन अनुभवों के अध्ययन से व्यक्तियों में विद्वेष संकीर्णता दूर करने में सहायता मिलती है।

➢ राष्ट्रीय महत्व

इतिहास राष्ट्रीय महत्व का विषय है क्योंकि छात्र जब अपने देश के ऐतिहासिक दुर्गों,खण्डहरों,भवनों,राज प्रसादों,मीनारों,गुफाओं,स्तूपों, स्तम्भोंएवंशिलालेखों आदि के विषय में पढ़कर ऐतिहासिक ज्ञान प्राप्त करता है तो राष्ट्रीय स्तर के महत्व से वह परिचित होता है। आज ताजमहल विश्व के अजूबों में शामिल है। इस जानकारी से छात्रों में राष्ट्रीय महत्व के प्रति जागृति पैदा होती है। इसके साथ ही इतिहास अध्ययन द्वारा देश की गौरवशाली गाथाओं से वह परिचित होता है। एक तरह से इतिहास छात्रों में देशप्रेम की भावना जागृत करने का काम करता है। यह राष्ट्रीय गौरव को प्रदान कर अच्छे नागरिक बनाने का प्रयत्न करता है। इतिहास अध्ययन से छात्र देश के महापुरुषों के शौर्य, त्याग, बलिदान एवं अन्य महत्वपूर्ण कार्यों का अध्ययन कर प्रेरणा प्राप्त करता है।

➢ अंतर्राष्ट्रीय महत्व

इतिहास का अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना की दृष्टि से भी विशेष महत्व है क्योंकि विश्व इतिहास के ज्ञान द्वारा ही छात्रों को विभिन्न देशों की सभ्यता एवं संस्कृति का ज्ञान कराया जा सकता है। इसके साथ ही इतिहास अध्ययन द्वारा विभिन्न राष्ट्रों के संबंधों, प्रभावों एवं उनकी सामाजिक,सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों को समझने की क्षमता उत्पन्न की जा सकती हैं परिणामस्वरुप इससे छात्रों में विश्व बंधुत्व की भावना विकसित होगी जो अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना एवं महत्व के लिए आधार बनेगी।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि विभिन्न क्षेत्रों में इतिहास का अध्ययन विशेष महत्व रखता है। इतिहास के ज्ञान के बिना विश्व की विविध समस्याओं का ज्ञान और उसका समाधान संभव नहीं है। अतः सभी को इतिहास का ज्ञान अवश्य प्राप्त करना चाहिए।

1.1.3 शिक्षा में इतिहास का स्थान

इतिहास-लेख या इतिहास-शास्त्र (Historiography) से दो चीजों का बोध होता है

- **इतिहास के विकास एवं क्रिया पद्धति का अध्ययन तथा**
- **किसी विषय के इतिहास सम्बन्धित एकत्रित सामग्री।**

इतिहासकार इतिहास शास्त्र का अध्ययन विषयवार करते हैं। भारत का इतिहास, जापानी साम्राज्य का इतिहास आदि। जैसे- इतिहास के मुख्य आधार युगविशेष और घटनास्थल के वे अवशेष हैं जो किसी न किसी रूप में प्राप्त होते हैं। जीवन की बहुमुखी व्यापकता के कारण स्वल्प सामग्री के सहारे विगत युग अथवा समाज का चित्रनिर्माण करना दुःसाध्य है। सामग्री जितनी ही अधिक होती जाती है उसीअनुपात से बीते युग तथा समाज की रूपरेखा प्रस्तुत करना साध्य होता जाता है। पर्याप्त साधनों के होते हुए भी यह नहीं कहा जा सकता कि कल्पनामिश्रित चित्र निश्चित रूप से शुद्ध या सत्य ही होगा। इसलिए उपयुक्त कमी का ध्यान रखकर कुछ विद्वान कहते हैं कि इतिहास की संपूर्णता असाध्य सी है, फिर भी यदि हमारा अनुभव और ज्ञान प्रचुर हो, ऐतिहासिक सामग्री की जाँच पड़ताल को हमारी कला तर्कप्रतिष्ठितहो तथा कल्पना संयत और विकसित हो तो अतीत का हमारा चित्र अधिक मानवीय और प्रामाणिक हो सकता है। सारांश यह है कि इतिहास की रचना में पर्याप्त सामग्री, वैज्ञानिक ढंग से उसकी जाँच, उससे प्राप्त ज्ञान का महत्व समझने के विवेक के साथ ही साथ ऐतिहासिक कल्पना की शक्ति तथा सजीव चित्रण की क्षमता की आवश्यकता है। स्मरण रखना चाहिए कि इतिहास न तो साधारण परिभाषा के अनुसार विज्ञान है और न केवल काल्पनिक दर्शन अथवा साहित्यिक रचना है। इन सबके यथोचित सम्मिश्रणसे इतिहास का स्वरूप रचा जाता है।

इतिहास न्यूनाधिक उसी प्रकार का सत्य है जैसा विज्ञान और दर्शनों का होता है। जिस प्रकार विज्ञान और दर्शनों में हेरफेर होते हैं उसी प्रकार इतिहास के चित्रण में भी होते रहते हैं। मनुष्य के बढ़ते हुए ज्ञान और साधनों की सहायता से इतिहास के चित्रों का संस्कार उनकी पुनरावृत्ति और सुसंस्कृत होती रहती है। प्रत्येक युग अपने-अपने प्रश्न उठाता है और इतिहास सेउनका समाधान ढूंढता रहता है। इसीलिए प्रत्येक युग समाज अथवा व्यक्ति इतिहास का दर्शन अपने प्रश्नों के दृष्टिबिंदुओं से करता रहता है। यह सब होते हुए भी साधनों का वैज्ञानिक अन्वेषण तथा निरीक्षण, कालक्रम का विचार, परिस्थिति की आवश्यकताओं तथा घटनाओं के प्रवाह की बारीकी से छानबीन और उनसे परिणाम निकालने में सतर्कता और संयम की अनिवार्यता अत्यंत आवश्यक है। उनके बिना ऐतिहासिक कल्पना और कपोलकल्पना में कोई भेद नहीं रहेगा।

इतिहास की रचना में यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि उसमें जो चित्र बनाया जाए वह निश्चित घटनाओं और परिस्थितियों पर दृढ़ता से आधारित हो। मानसिक काल्पनिक अथवा मनमाने स्वरूप को खड़ा कर ऐतिहासिक घटनाओं द्वारा

उसके समर्थन का प्रयत्न करना अक्षम्य दोष होने के कारण सर्वथा वर्जित है। यह भी स्मरण रखना आवश्यक है कि इतिहास का निर्माण बौद्धिक रचनात्मक कार्य है अतएव अस्वाभाविक और असंभाव्य को प्रमाणकोटि में स्थान नहीं दिया जा सकता। इसके सिवा इतिहास का ध्येय विशेष एवंयथावत ज्ञान प्राप्त करना है। किसी विशेष सिद्धांत या मत की प्रतिष्ठा, प्रचार या निराकरण अथवा उसे किसी प्रकार का आंदोलन चलाने का साधन बनाना इतिहास का दुरुपयोग करना है। ऐसा करने से इतिहास का महत्व ही नहीं नष्ट हो जाता, वरन् उपकार के बदले उससे अपकार होने लगता है जिसका परिणाम अंततोगत्वा भयावह होता है।

1.1.4 इतिहास शिक्षण की समस्याएं

इतिहासशिक्षणकी वास्तविक संरचना को समझने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है,जिनमेंसे कुछनिम्नलिखितहैं—

➢ इतिहास का डरावना ज्ञान

एक सामान्य इतिहास शिक्षक आमतौर पर अपने विषय में ज्यादा दिलचस्पी नहीं रखता है और वह इतिहास के अपने ज्ञान के पूरक के लिए बहुत उत्साही नहीं है जो उसने कॉलेज की उम्र में हासिल किया है। उसे न तो पढ़ने में दिलचस्पी है और न ही सैर-सपाटे में। वह स्कूल में खुद को वैज्ञानिक तरीके से प्रशिक्षित करने के लिए इच्छुक नहीं है। आम तौर पर ऐतिहासिक तथ्यों के बारे में उनकी गलत धारणाएं हैं और इससे विनाशकारी स्थिति पैदा होती है। इस तरह के शिक्षक से विद्यार्थियों को विकृत तथ्य प्रस्तुत करने की संभावना होती है और इस प्रकार उनके व्यक्तित्व को विकृत किया जा सकताहै।

➢ विश्व इतिहास का ज्ञान खो देता है

आमतौर पर हमारे स्कूलों में इतिहास के शिक्षकों में विश्व इतिहास के ज्ञान की कमी पाई जाती है। ज्ञान की इस कमी के कारण वे ऐतिहासिक तथ्यों को उनके वास्तविक प्रभाव में देखने में विफल होते हैं। दुनिया के किसी भी हिस्से में हर सामाजिक या राजनीतिक आंदोलन का प्रभाव पूरी दुनिया पर पड़ता है, इसलिए किसी के लिए भी अपने देश के इतिहास से काफी हद तक निपटना संभव नहीं है। इस प्रकार विश्व इतिहास का ज्ञान किसी भी सफल इतिहास शिक्षक के लिए जरूरी है, इसके बिना उसका शिक्षण अपूर्ण रहेगा।

➢ धार्मिक या सामाजिक पूर्वाग्रह

अधिकांश शिक्षक ऐसे पूर्वाग्रह से ग्रस्त हैं और इससे पीड़ित कोई भी व्यक्ति इतिहास का सही ज्ञान नहीं दे सकता है। यदि कोई हिंदू शिक्षक कट्टर है और नस्लीय पूर्वाग्रह रखता है तो वह मुसलमानों के इतिहास को सही और निष्पक्ष रूप से नहीं सिखा सकता है। वह निश्चित रूप से शिक्षण में बेईमान होंगे क्योंकि उनके लिए यह समझाना काफी मुश्किल होगा कि मुसलमान कैसे हिंदू शासकों पर विचार करते हैं। अन्य धर्मों के शिक्षक के लिए भी ऐसी ही स्थिति होगी।

➢ राष्ट्रीय पूर्वाग्रह

इतिहास के शिक्षण में राष्ट्रीय पूर्वाग्रह उतना ही हानिकारक है जितना कि धार्मिक या नस्लीय पूर्वाग्रह। "मेरा देश, सही या गलत" एक निंदा का नारा है। देशभक्ति के महान गुण हैं और एक देशभक्ति होनी चाहिए लेकिन देशभक्ति और राष्ट्रीय पूर्वाग्रह के अलग-अलग अर्थ हैं। एक सच्चा देशभक्त अपने देश की कमजोरियों को देखता है और स्वीकार करता है जबकि राष्ट्रीय पूर्वाग्रह रखने वाला व्यक्ति ऐसा नहीं कर सकता। राष्ट्रीय पूर्वाग्रह से पीड़ित इतिहास का एक शिक्षक अपने विद्यार्थियोंको उनके देश की कमजोरियों के बारे में कभी नहीं समझाएगा।यदि भारत में एक इतिहास के शिक्षक के पास राष्ट्रीय पूर्वाग्रह है, तो वह बच्चों के सामने यह नहीं समझाएगा कि अंग्रेज अपने देश की कमजोरियों के कारण इस देश में अपना शासन करने में सक्षम थे। दूसरी ओर, वह विद्यार्थियोंको बताएगा कि भारतीय शासकों में कोई कमजोरियां नहीं थीं और यह केवल अंग्रेजों की चालाक थी कि वे भारतीयों पर हावी थे। एक इतिहास शिक्षक को देशभक्त होना चाहिए लेकिन उसे कभी राष्ट्रीय पूर्वाग्रह नहीं होना चाहिए, उसे अपने और अपने लोगों में अंतर्राष्ट्रीय समझ विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।

➢ शिक्षण की दोषपूर्ण विधि

हमारे देश में आम तौर पर इतिहास को मृत राजकुमारों और बीती घटनाओं से निपटने के लिए माना जाता है और इस तरह सेशिक्षा निर्जीव हो जाएगी। हालांकि, इतिहास एक जीवित विषय है क्योंकि यहमानव के नाटक या दुनिया के मंच से संबंधित है जो अभी भी बढ़ रहा है। इस नाटक को बच्चों के सामने कक्षा-कक्ष में विषय केरूप से प्रस्तुत किया जाना चाहिए। इसके लिए एक इतिहास शिक्षक को सक्रिय औरअनुभव से भरा होना चाहिए।

➢ सहसंबंध की कमी

इतिहास पढ़ाने वाले अधिकांश शिक्षक अन्य विषयों के साथ इतिहास को सहसम्बंधितकरने में विफल होते हैं। चूंकि किसी भी विषय को अलगाव में नहीं पढ़ाया जा सकता है, इसलिए इतिहास को कभी भी इस तरह से नहीं पढ़ाया जाना चाहिए।

इतिहास के शिक्षक के लिए भूगोल, नागरिक शास्त्र, अर्थशास्त्र, शिल्प या किसी अन्य विषय के साथ सहसम्बंधबनाना हमेशा संभवहै।

1.1.5 निवाड़ी का इतिहास

निवाड़ी मध्य प्रदेश का एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध जिला है। इसका इतिहास प्राचीन काल से लेकर मध्यकाल और आधुनिक काल तक फैला हुआ है। इस जिले का इतिहास बुंदेलखंड क्षेत्र के इतिहास से गहराई से जुड़ा हुआ है। आइए, निवाड़ी के इतिहास को विस्तार से जानते हैं:

➢ **प्राचीन काल**

- **प्राचीन सभ्यता के निशान:**निवाड़ी क्षेत्र में प्राचीन काल से मानव सभ्यता के होने के प्रमाण मिले हैं। यहां से प्राप्त पुरातात्विक अवशेष इस बात के प्रमाण हैं कि यह क्षेत्र प्राचीन काल में भी आबाद था।
- **व्यापारिक मार्ग:**निवाड़ी प्राचीन काल में महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्गों पर स्थित था। यह क्षेत्र विभिन्न सभ्यताओं और संस्कृतियों का संगम रहा है।

➢ **मध्यकाल**

- **बुंदेला शासन:**मध्यकाल में निवाड़ी क्षेत्र बुंदेला राजवंश के अधीन रहा। बुंदेलों ने इस क्षेत्र में कई किले, महल और मंदिर बनवाए, जो आज भी इस क्षेत्र की शान हैं।
- **ओरछा की स्थापना:**बुंदेलों ने ओरछा को अपनी राजधानी बनाया और इसे एक भव्य शहर के रूप में विकसित किया। ओरछा में आज भी कई भव्य महल, मंदिर और किले मौजूद हैं।
- **मुगलों के साथ संघर्ष:**बुंदेला शासकों ने मुगलों के साथ कई युद्ध लड़े। इन युद्धों का निवाड़ी के इतिहास पर गहरा प्रभाव पड़ा।

➢ **आधुनिक काल**

- **अंग्रेजों का शासन:** 18वीं शताब्दी में अंग्रेजों ने बुंदेलखंड क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया और निवाड़ी भी उनके अधीन आ गया।

- **स्वतंत्रता संग्राम:**भारत की स्वतंत्रता संग्राम में निवाड़ी के लोगों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।
- **नया जिला:** 1 अक्टूबर 2018 को निवाड़ी को टीकमगढ़ जिले से अलग कर एक नए जिले के रूप में गठित किया गया।

1.1.6 निवाड़ी जनपद की ऐतिहासिक विरासत

निवाड़ी जिले की ऐतिहासिक धरोहरें–

➢ ओरछा:

ओरछाभारत के मध्य प्रदेश राज्य के निवाड़ी जिले में स्थित एक ऐतिहासिक नगर है। यह बुंदेलखंड क्षेत्र में बेतवा नदी के किनारे बसा हुआ है। अपनी भव्य वास्तुकला, समृद्ध इतिहास और शांत वातावरण के लिए प्रसिद्ध, ओरछा एक ऐसा स्थान है जहां समय लगभग थम गया है।

➢ ओरछा का इतिहास

ओरछा की स्थापना 16वीं शताब्दी में बुंदेला राजपूत प्रमुख रुद्र प्रताप ने की थी। इसने जल्द ही बुंदेला राजवंश की राजधानी के रूप में ख्याति प्राप्त की। ओरछा के महल और मंदिर मुगल वास्तुकला और बुंदेला शैली का एक अद्भुत मिश्रण हैं।

➢ ओरछा के प्रमुख आकर्षण

- **रामराजा मंदिर:**यह मंदिर ओरछा का सबसे प्रसिद्ध आकर्षण है। यहां भगवान राम को राजा के रूप में पूजा जाता है। यह दुनिया का एकमात्र मंदिर है जहां भगवान राम को राजा के रूप में पूजा जाता है।
- **जहांगीर महल:**मुगल सम्राट जहांगीर द्वारा बनवाया गया यह महल अपनी भव्य वास्तुकला के लिए जाना जाता है।
- **छतरियां:**ये बुंदेला शासकों की समाधियां हैं और अपनी नक्काशीदार पत्थरों और भव्य डिजाइन के लिए प्रसिद्ध हैं।

- **लक्ष्मीनारायण मंदिर:** यह एक भव्य मंदिर है जो भगवान विष्णु को समर्पित है।

➢ गढ़कुढ़ार किला:

गढ़कुढ़ार किलामध्य प्रदेश के निवाड़ी जिले में स्थित एक ऐतिहासिक किला है। यह किला अपनी रणनीतिक स्थिति और भव्य वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। गढ़कुढ़ार किला बुंदेलखंड क्षेत्र के इतिहास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और यह क्षेत्र के सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है।

➢ किले का इतिहास

गढ़कुढ़ार किले का निर्माण कब हुआ था, इस बारे में कोई निश्चित जानकारी नहीं है, लेकिन माना जाता है कि इसे बुंदेला शासकों ने बनवाया था। यह किला कई युद्धों का साक्षी रहा है और इसका उपयोग दुश्मनों से रक्षा के लिए किया जाता था। बुंदेला शासकों ने इस किले को अपनी शक्ति और प्रभाव का प्रतीक बनाया था।

➢ किले की विशेषताएं

- **रणनीतिक स्थिति:** गढ़कुढ़ार किला एक पहाड़ी पर बना हुआ है और इसकी रणनीतिक स्थिति इसे दुश्मनों के हमलों से बचाने में मदद करती थी।
- **मजबूत दीवारें:** किले की दीवारें बेहद मजबूत हैं और इन्हें पत्थरों से बनाया गया है। ये दीवारें किले को दुश्मनों के हमलों से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं।
- **कई द्वार:** किले में कई द्वार हैं जो इसे दुश्मनों के लिए अभेद्य बनाते थे। इन द्वारों पर सैनिक तैनात रहते थे जो किले में प्रवेश करने वालों को रोकते थे।
- **भव्य महल:** किले के अंदर एक भव्य महल है जो बुंदेला शासकों का निवास था। यह महल अपनी भव्य वास्तुकला और सुंदर नक्काशी के लिए प्रसिद्ध है।
- **मंदिर:** किले के परिसर में कई मंदिर भी हैं। ये मंदिर हिंदू देवी-देवताओं को समर्पित हैं और यहां पूजा-अर्चना की जाती है।

➢ अछरू माता मंदिर

निवाड़ी जिले में स्थित अछरू माता मंदिर एक प्रसिद्ध शक्तिपीठ है।

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

अनुसंधान समस्या की उत्पत्ति प्रायः इस अनुभूति के द्वारा होती है कि किसी क्षेत्र विशेष में किसी कार्य के सुचारू ढंग से संचालन में कोई बाधा है एवं उस बाधा को दूर किया जा सकता है।वस्तुतः आवश्यकता, जिज्ञासा व असन्तोष को आविष्कार की पृष्ठभूमि तैयार करने में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

किसी भी राष्ट्र का इतिहास उसके वर्तमान और भविष्य की नींव होता है। इतिहास जितना गौरवमयी होगा वैश्विक स्तर पर उसका स्थान उतना ही ऊंचा माना जाएगा। देश कायूं तो बीता हुआ कल कभी वापस नहीं आता लेकिन उस काल में बनी इमारतें और लिखे गए साहित्य उन्हें हमेशा सजीव बनाए रखते हैं। यही वजह है कि ऐसी वर्षों पुरानी या यूँ कहें कई सदियों पुरानी ऐतिहासिक इमारतें जो संबंधित राष्ट्र के वर्षों पुरानी इतिहास की गौरव गाथा कहती हैं, उनके संरक्षण का पूरा-पूरा प्रयास किया जाता है। भारत में भी कई ऐतिहासिक मंदिर, पुरास्थल एवं अन्य इमारतें हैं जो स्वयं हमारे विशाल और सम्मानजनक इतिहास की कहानी कहती हैं। लेकिन समय के साथ-साथ इन इमारतों और उनमें रखे गए साहित्य को बहुत नुकसान पहुंचा है । हमने भी परवाह किए बगैर उन अनमोल धरोहरों को मनमाने ढंग से खंडित किया है।

यह भी सत्य है कि वक्त रहते यदि हम अपनी भूल को पहचान नहीं पाए तो अपनी विरासत को धीरे-धीरे खो देंगे आज आवश्यकता यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक हो साथ ही आवश्यकता इस बात की भी है कि पुरानी हो चुकी जर्जर इमारतों की मरम्मत की जाएतथा भवनों और महलों को पर्यटन स्थल बना कर उनकी चमक को बनाये रखने का प्रयास किया जाये किताबों और स्मृति चिन्होंको संग्रहालय में जगह दी जाए। यह तभी सम्भव होगा जब प्रत्येक व्यक्ति अपनी विरासतों के प्रति जागरूक और जिम्मेदार होगा। विरासतों को संभाल कर रखना इतना आसान नहीं है इसलिए यूनस्को द्वारा हर वर्ष विश्व विरासत दिवस मनाया जाता है जिसका स्पष्ट उद्देश्य इन इमारतों और उनमें रखी गई धरोहरों की देखभाल करना है।ऐसी ही महत्वपूर्ण इमारतों में से एक निवाड़ी स्थित गढ़कुढ़ारदुर्ग भी है।

अतः उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर ही प्रस्तुत समस्या का चयन किया गया है। इस समस्या के अध्ययन से केवल विद्यार्थियों का ही नहीं अपितु अभिभावक, शिक्षक, समाज तथा राष्ट्र को भी लाभ होगा।

1.3 समस्या कथन

प्रस्तुत अध्ययन का समस्या कथन इस प्रकार है–

"गढ़कुढ़ार दुर्ग, निवाड़ीकी ऐतिहासिक विरासतके प्रति विद्यार्थियों में जागरूकताका अध्ययन।"

1.4 अध्ययन का औचित्य

शोधकर्ता को समस्या का चयन करने से पूर्व उसके औचित्य एवं उपयोगिता के सम्बन्ध में विचार कर लेना चाहिये। शोध वस्तुतःज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में व्यवस्थित संज्ञान है।शोध में गहन निरीक्षण का प्रत्यय होता है। इसमें किसी सीमित क्षेत्र की किसी समस्या का सर्वांगीण विश्लेषण होता है। उसकी निरीक्षण प्रक्रिया में वैज्ञानिक निरीक्षण ही क्रमबद्ध सोद्देश्य सुनियोजित होते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में गढ़कुढ़ार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रतिजागरूकता का अध्ययन किया गया है। हमारी ऐतिहासिक विरासतेंह में अतीत के बारे में बहुत कुछ सिखाती और बतलाती है। साथ ही इस ऐतिहासिक विरासत को देखने के लिए दूर-दूर से पर्यटक यहाँ आते हैं। वर्तमान समाज एवं आने वाली पीढ़ियों को ऐतिहासिक स्थलों को देखने की जिज्ञासा होती है। दर्शनीयता, कलात्मकता दृश्यों के प्रति आकर्षण व्यक्ति को बार-बार उस स्थल पर आने की प्रेरणा प्रदान करता है। उन्हें दुर्गम स्थलों गुफाओं, प्राकृतिक दृश्यों को देखने की जिज्ञासा रहती है साथ ही विभिन्न सामाजिक संगठनों, वर्गों, समुदायों के लोग जब किसी स्थान विशेष पर आते हैं तो स्थानीय जनता का उनसे संपर्क होता है। वे उन्हें आवश्यकतानुसार आश्रय, भोजन आदि संसाधनों को उपलब्ध कराते हैं। उनकी हर प्रकार से व्यवस्था करते हैं। इस प्रकार से उनमें एक दूसरे को समझने व परखने के साथ-साथ उत्तरदायित्व पूर्ण भावना की अनुभूति होती है। किन्तु आज हमारी ऐतिहासिक विरासतों को पर्याप्त संरक्षण एवं लोगों को सही जानकारी न होने की वजह से इनका अस्तित्व समाप्त हो रहा है। इसके आस-पास साफ सफाई न होने से लोगों का रुझान इस ओर कम होता जा रहा है। इस समय कई स्मारक अतिक्रमण का शिकार हो गए हैं। आस-पास बस्ती होने की वजह से इसके अस्तित्व को खतरा हो रहा है। जब तक लोग अपने ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरुक नहीं होंगे तब तक इन विरासतों को संरक्षण दे पाना मुश्किल होगा। अतःप्रस्तुत अध्ययन इन्हीं तथ्योंको ध्यान में रखकर किया गया है।

1.5 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

परिभाषीकरण से तात्पर्य अध्ययन की समस्या को चिंतन द्वारा सम्पूर्ण समस्या क्षेत्र सेबा हर निकल कर स्पष्ट करना है। प्रस्तुत अध्ययन के शीर्षक में प्रयुक्त कठिन शब्दों की व्याख्या निम्नानुसार है—

1.5.1 गढ़कुढ़ार दुर्ग

गढ़कुढ़ार दुर्ग से तात्पर्य निवाड़ी जनपद में 25.4815°N, 78.8986° E अक्षांश और देशांतर पर स्थित चन्देल शासकों द्वारा 11वीं शताब्दी में निर्मित दुर्ग से है।

1.5.2 निवाड़ी

निवाड़ी भारत देश के मध्यप्रदेश का नवनिर्मित 52 वां जिला है। पूर्व में निवाड़ी टीकमगढ़ जिले का एक हिस्सा हुआ करता था जिसे 1 अक्टूबर 2018 को इसे अलग कर एक नए जिले में बनाया गया।

इस जिले के अंतर्गत, पृथ्वीपुर तहसील की 56 पंचायतें, निवाड़ी की 54 पंचायतें, ओरछा की 17 पंचायतें शामिल थीं। इस प्रकार यहां कुल 127 ग्राम पंचायतों को शामिल किया गया है। यह जनसंख्या और क्षेत्रफल दोनों के मामले में मध्य प्रदेश का सबसे छोटा जिला है।

बेतवा नदी इस जिले से गुजरती है, इस नदी के किनारे पर ओरछा शहर बुंदेलखंड के प्राचीन राजाओं द्वारा स्थापित किया गया था। राष्ट्रीय राजमार्ग 39 और राष्ट्रीय राजमार्ग 44 और राष्ट्रीय राजमार्ग 539 निवाड़ी से होकर गुजरता है।

➢ निवाड़ी जनपद का विस्तार

निवाड़ी जिला भले ही मध्य प्रदेश का एक नया जिला हो, लेकिन इसका विस्तार और भौगोलिक स्थिति काफी महत्वपूर्ण है। आइए इसके बारे में विस्तार से जानते हैं-

- **क्षेत्रफल:** निवाड़ी जिले का कुल क्षेत्रफल लगभग 1170 वर्ग किलोमीटर है।
- **स्थिति:** यह जिला मध्य प्रदेश के दक्षिणी भाग में स्थित है और बुंदेलखंड क्षेत्र का एक हिस्सा है।
- **सीमाएं:** निवाड़ी जिला उत्तर में टीकमगढ़, दक्षिण में ललितपुर (उत्तर प्रदेश), पूर्व में छतरपुर और पश्चिम में सागर जिलों से घिरा हुआ है।

- **उत्तर:** टीकमगढ़ जिला
- **पूर्व:** पन्ना जिला
- **दक्षिण:** छतरपुर जिला
- **पश्चिम:** ललितपुर, जिला (उत्तर प्रदेश)
- **नदियां:** बेतवा नदी इस जिले से होकर बहती है, जिसके किनारे ऐतिहासिक नगर ओरछा बसा हुआ है।
- **भूगोल:** जिला मुख्य रूप से मैदानी क्षेत्र है, कुछ पहाड़ी क्षेत्र भी हैं।

➢ प्राकृतिक रचना

निवाड़ी जनपद, मध्य प्रदेश का एक खूबसूरत जिला है जो अपनी समृद्ध प्राकृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां की विविधतापूर्ण भौगोलिक संरचना, वनस्पति और जीव-जंतु इसे एक अनोखा स्थान बनाते हैं। आइए निवाड़ी जनपद की प्राकृतिक रचना के बारे में विस्तार से जानें-

➢ भौगोलिक संरचना

- **पहाड़ी क्षेत्र:** निवाड़ी जनपद में पहाड़ी क्षेत्रों का बड़ा हिस्सा है। यहां की पहाड़ियां खनिजों से समृद्ध हैं और कई नदियों का उद्गम स्थल हैं।
- **मैदानी क्षेत्र:** पहाड़ियों के साथ-साथ यहां मैदानी क्षेत्र भी पाए जाते हैं, जो कृषि के लिए उपयुक्त हैं।

➢ मिट्टी

निवाड़ी जनपद मध्य प्रदेश का एक महत्वपूर्ण कृषि क्षेत्र है। यहां की मिट्टी की प्रकृति और विस्तार, क्षेत्र के कृषि उत्पादन को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख कारक है। आइए, निवाड़ी की मिट्टी के बारे में विस्तार से जानते हैं।

➢ निवाड़ी की प्रमुख मिट्टियाँ

निवाड़ी में मुख्य रूप से निम्नलिखित प्रकार की मिट्टियाँ पाई जाती हैं:

- **काली मिट्टी:**यह मिट्टी काली रंग की होती है और इसमें कार्बनिक पदार्थ की मात्रा अधिक होती है। यह मिट्टी कपास, सोयाबीन और अन्य दलहनी फसलों के लिए उपयुक्त होती है।
- **जलोढ़ मिट्टी:**नदियों के किनारे जमा होने वाली यह मिट्टी उपजाऊ होती है। यह मिट्टी गेहूं, चावल और अन्य खाद्यान्न फसलों के लिए उपयुक्त होती है।

- **लाल मिट्टी:**यह मिट्टी लाल रंग की होती है और इसमें लोहे की मात्रा अधिक होती है। यह मिट्टी दलहनी फसलों और तिलहन फसलों के लिए उपयुक्त होती है।

➢ मिट्टी का विस्तार और कृषि पर प्रभाव

- **काली मिट्टी का विस्तार:**निवाड़ी के कुछ क्षेत्रों में काली मिट्टी का विस्तार अधिक है। यह मिट्टी पानी को सोखने की क्षमता रखती है, लेकिन इसमें नाइट्रोजन की कमी होती है।
- **जलोढ़ मिट्टी का विस्तार:**नदियों के किनारे स्थित क्षेत्रों में जलोढ़ मिट्टी का विस्तार अधिक है। यह मिट्टी उपजाऊ होती है और इसमें सभी आवश्यक पोषक तत्व पाए जाते हैं।
- **लाल मिट्टी का विस्तार:**निवाड़ी के कुछ ऊंचाई वाले क्षेत्रों में लाल मिट्टी पाई जाती है। यह मिट्टी पानी को जल्दी सोख लेती है और इसमें नमी की कमी होती है।

➢ कृषि पर प्रभाव

- **फसल चयन:** मिट्टी के प्रकार के आधार पर किसान विभिन्न प्रकार की फसलें उगाते हैं। उदाहरण के लिए, काली मिट्टी में कपास और सोयाबीन, जलोढ़ मिट्टी में गेहूं और चावल तथा लाल मिट्टी में दलहनी फसलें उगाई जाती हैं।
- **सिंचाई:** विभिन्न प्रकार की मिट्टी में पानी सोखने की क्षमता अलग-अलग होती है। इसलिए, किसानों को विभिन्न प्रकार की मिट्टी के लिए अलग-अलग सिंचाई विधियों का उपयोग करना होता है।
- **खाद और उर्वरक:** मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखने के लिए किसानों को विभिन्न प्रकार के खाद और उर्वरक का उपयोग करना होता है।

➢ वनस्पतियाँ:

- **वन:** निवाड़ी जनपद में घने जंगल पाए जाते हैं। इन जंगलों में विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे पाए जाते हैं जैसे सागौन, साल, महुआ आदि।
- **औषधीय पौधे:** यहां कई प्रकार के औषधीय पौधे भी पाए जाते हैं जिनका उपयोग आयुर्वेदिक दवाओं में किया जाता है।

➢ **वन्य जीव:** जंगलों में विभिन्न प्रकार के वन्य जीव पाए जाते हैं जैसे हिरण, तेंदुआ, भेड़िया आदि।।

➢ **पर्वत:** निवाड़ी मध्य भारत के बुंदेलखंड क्षेत्र में स्थित है। यह क्षेत्र मुख्य रूप से मैदानी और पठारी है। इस क्षेत्र की भूगर्भीय संरचना पर्वत निर्माण के लिए अनुकूल नहीं है।निवाड़ी की जलवायु गर्म और शुष्क होती है, जो पर्वत निर्माण के लिए अनुकूल नहीं है। हालांकि निवाड़ी में विशाल पर्वत नहीं हैं, लेकिन यहां कुछ छोटी-छोटी पहाड़ियां और टीले अवश्य हैं। ये पहाड़ियां स्थानीय लोगों के लिए धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व रखती हैं।

➢ **नदियाँ**

- **बेतवा नदी:** निवाड़ी जिले की सबसे प्रमुख नदी बेतवा है। यह नदी ओरछा शहर के पास से होकर गुजरती है। बेतवा नदी न केवल सिंचाई का प्रमुख स्रोत है, बल्कि यह धार्मिक महत्व की भी है। ओरछा शहर में बेतवा नदी के किनारे कई प्राचीन मंदिर और किले स्थित हैं।
- **जामनी नदी:** जामनी नदी भी निवाड़ी जिले की एक महत्वपूर्ण नदी है। यह नदी जिले के कई हिस्सों से होकर गुजरती है और कृषि के लिए पानी का प्रमुख स्रोत है।

प्रस्तुत लघु-शोध में निवाड़ी से तात्पर्य 2018 में टीकमगढ जनपद से अलग करके बनाए गए मध्यप्रदेश के 'निवाड़ी' जनपद से है।

1.5.3 ऐतिहासिक विरासत- ऐतिहासिक विरासत स्थल खास स्थलों जैसे- वनक्षेत्र, पर्वत, झील, मरुस्थल, स्मारक, भवन इत्यादि को कहा जाता है। प्रत्येक विरासत स्थल उस देश विशेष की संपत्ति होती है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में ऐतिहासिक विरासत से अभिप्राय गढ़कुंडार की ऐतिहासिक विरासत के स्थल से है जिसका सांस्कृतिक महत्त्व है।

1.5.4 विद्यार्थी- According to Wikipedia– विद्यार्थी वह व्यक्ति होता है जो कोई चीज सीख रहा होता है। विद्यार्थी दो शब्दों से मिलकर बना होता है- 'विद्या'+ 'अर्थी' जिसका अर्थ होता है 'विद्या चाहने वाला'। विद्यार्थीकिसी भी आयु वर्ग का हो सकता है बालक, किशोर, युवा या वयस्क। लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि वह कुछ सीख रहा होता है।

प्रस्तुत लघुशोध में विद्यार्थियों से तात्पर्य मान्यता प्राप्त विद्यालयों/महाविद्यालयों में अध्ययनरत संस्थागत/नियमित छात्र- छात्राओं से है।

1.5.5 जागरूकता- जागरूकता यानी सजगजीवन- चैतन्य जीवन अर्थात चिंतन पर आधारित जीवन, मंथन से निकला जीवन जागरूकता यानी बाहरी संसार भीतरी संसार की संपूर्ण जानकारी, उचित-अनुचित की जानकारी।

वेबस्टर डिक्शनरीज के अनुसार-

"जागरूकता का अर्थ देखना, समझना, विचारना या ज्ञान को प्राप्त करना है।"

प्रस्तुत लघु शोध में जागरूकता से तात्पर्य के विद्यार्थियों को गढ़कुढ़ार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत की जानकारी से है।

1.5.6 अध्ययन-किसी विषय के सभी अंगों, गुणों एवं तत्वों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसे समझने या पढ़ने की क्रिया अध्ययन कहलाती है।

1.6 अध्ययन के उद्देश्य

- गढ़कुढ़ार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत का अध्ययन करना।
- गढ़कुढ़ार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के विद्यार्थियों में जागरूकता के अध्ययन हेतु गढ़कुढ़ार दुर्ग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण करना।
- गढ़ कुंडार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता से संबंधित प्रदत्तों की प्रकृति का अध्ययन करना।
- गढ़कुढ़ार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति के विद्यार्थियों की जागरूकता का उनके लिंग एवं विद्यालय लिंग अनुसार अध्ययन करना।
- गढ़ कुंडार दुर्ग के ऐतिहासिक विरासत के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का प्रश्न: श विशेषण करना।
- गढ़कुढ़ार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता संवर्धन के सम्बन्ध में सुझाव प्रस्तुत करना।
- गढ़कुढ़ार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत का ई- ब्रोशर (E-brochure) तैयार करना।

1.7 अध्ययन के चर

शोध अध्ययन के संदर्भ में निम्नलिखित चरों को प्रमुख रूप से लिया गया है।

- **मापदंड चर:**

गढ़कुढ़ार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता

- **वर्गीकरण चर:**
    - **लिंग:**
        - छात्र
        - छात्राएं

1.8 परिकल्पना

प्रस्तुत लघुशोध की निम्नलिखित परिकल्पना है-

गढ़कुढ़ार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

1.9 अध्ययन का परिसीमांकन

किसी भी अनुसंधान कार्य में एक महत्वपूर्ण सोपान समस्याओं को सीमांकित करना है। कोई भी शोधकर्ता शोधकार्य के लिए किसी विशेष समस्याग्रस्त क्षेत्र का चुनाव करती है तथा विस्तृत अध्ययन के स्थान में गहन अध्ययन को वरीयता देता है। समस्या का स्वरुप साधारणत: अधिक व्यापक होता है। समस्या का व्यावहारिक रूप में अध्ययन करने के लिए सीमांकन करना आवश्यक होता है। सीमांकन अध्ययन की चाहर दीवारी होता है। शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित सीमांकन किया है:

- प्रस्तुत अध्ययन मध्य प्रदेश के निवाड़ी नगर तक सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन उच्चतर माध्यमिक तथा महाविद्यालयीन विद्यार्थियों तक सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन चयनित विद्यार्थियों के लिंगानुसार तुलनात्मक अध्ययन तक सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन स्मार्टफोन प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों के अध्ययन तक सीमित है।

1.10 अध्ययन का महत्त्व एवं सार्थकता

भारत की कला-संस्कृति एवं इसका इतिहास अत्यंत समृद्ध है एवं हमारी कला-संस्कृति की आधरशिला हमारे विरासत स्थल हैं। इन स्थलों के सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व के साथ-साथ इनका व्यापक आर्थिक महत्त्व भी है। हमारी एक बहुत बड़ी समस्या ऐतिहासिक विरासतों को सुरक्षित रखने की भी है। पूरे देश में ऐसी अनगिनत प्राचीन और ऐतिहासिक महत्व की इमारतें हैं जिनकी देखभाल ठीक से नहीं हो रही हैं। कुछ इमारतें तो पूरी तरह उपेक्षित हैं और अगर उन पर ध्यान न

दिया गया तो वे गिर जाएँगी। सरकारी विभाग अपनी सीमा और साधनों की कमी के कारण केवल उन्हीं विरासतों की देखभाल करते हैं जो उनकी सूची में शामिल हैं पर यह काफी नहीं है। देश की सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण की ज़िम्मेदारी केवल सरकार की ही नहीं है। वरन यह लोगों का मौलिक कर्तव्य भी है। किन्तु यह तभी सम्भव होगा जब लोग अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक होगे अतः इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत लघु शोध कार्य किया जा रहा है।

अध्याय द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

2.1 प्रस्तावना

मानव ज्ञान के तीन पक्ष होते हैं- ज्ञान को एकत्र करना, एक-दूसरे तक पहुँचाना और ज्ञान में वृद्धि करना। किसी भी विषय के विकास में विशेष स्थान की प्राप्ति के लिए शोधकर्ता को पूर्व सिद्धांतों से भली-भांति अवगत होना चाहिए। सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा शोधकर्ता यह निश्चित कर सकता है कि उसके द्वारा प्रस्तावित शोध से सम्बन्धित विषयों पर विचारणीय कार्य पहले हो चुका है अथवा नहीं।

प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसन्धान में चाहे वह भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में हो यह सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में, साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य एवं प्रारम्भिक कथन है। सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान-कोषों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रति-लेखों, विज्ञप्तियों, प्रकाशित-अप्रकाशित शोध-प्रबन्धोंआदि से है; जिनके अध्ययन से अनुसन्धानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा निर्मित करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। एक अनुसन्धान दूसरे अनुसन्धान के लिए सहायक सिद्ध होता है। इससे एक तो कार्य की पुनरावृत्ति नहीं होती, दूसरा पूर्व में जिन तथ्यों पर प्रकाश नहीं डाला गया उन पर प्रकाश डालकर शोध ग्रन्थ को महत्वपूर्ण बनाया जा सकता है।

जॉन डब्ल्यू॰ बेस्ट के अनुसार "मान्यता प्राप्त अधिकारियों और पिछले शोध के लेखन का सारांश इस बात का प्रमाण प्रदान करता है कि शोधकर्ता पहले से ज्ञात, अज्ञात और अनुपयोगी से परिचित है।"

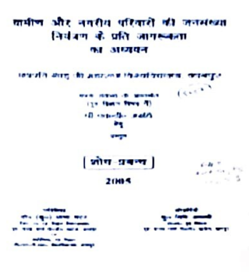
"A summary of the writings of recognized authorities and of previous research provides evidence that the researcher is familiar with what is already known and what is still unknown and untested."

- John W. Best.

2.2 अध्ययन से सम्बन्धित कतिपय शोध अध्ययन

प्रस्तुत शोध कार्य में जागरूकता से सम्बन्धित विभिन्न शोधों का अध्ययन किया गया है, इनका विवरण निम्न प्रकार है-

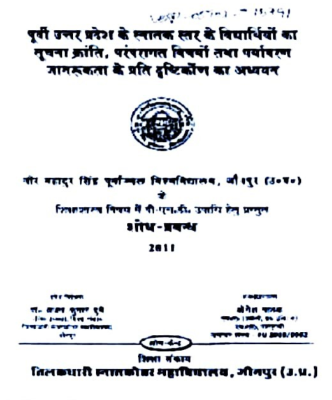
अवस्थी, निधि (2005), ने 'ग्रामीण और नगरीय परिवारों की जनसंख्या नियन्त्रण के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया, जिसमें न्यादर्श के रूप में कानपुर नगर के 400 ग्रामीण तथा 400 नगरीय परिवारों को शामिल किया गया। ग्रामीण और नगरीय परिवारों की जनसंख्या नियंत्रण के प्रति जागरूकता के प्रदत्त संकलन हेतु शोधार्थिनी द्वारा 62 प्रश्नों की स्वनिर्मित


ग्रामीण और नगरीय परिवारों की जनसंख्या नियंत्रण के प्रति जागरूकता का अध्ययन

शोध प्रबन्ध

प्रश्नावली तथा T.S. Sodhi द्वारा निर्मित Attitude Scale Towards small family and population education (ASSFPE) का प्रयोग किया। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि ग्रामीण परिवारों में आयु जागरूकता को प्रभावित कर रही है। ग्रामीण परिवारों में 15-25 आयु वर्ग में अधिक जागरूकता प्राप्त हुई है, परन्तु नगरीय परिवारों की जागरूकता पर आयु का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ रहा है।

योगेश पाठक (2011), ने पूर्वी उत्तर प्रदेश के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का सूचना क्रान्ति, परम्परागत विषयों तथा पर्यावरण जागरूकता के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया, जिसमें न्यादर्श के रूप में वाराणसी मण्डल के 8 ग्रामीण एवं 8 शहरी महाविद्यालयों से कुल 400 विद्यार्थियों का चयन किया गया। पर्यावरण जागरूकता के प्रदत्त संकलन हेतु डॉ० प्रवीण कुमार झा द्वारा निर्मित पर्यावरणीय जागरूकता के प्रति दृष्टिकोण मापनी (EAAM) का प्रयोग किया जिसमें कुल 51 कथनों में से 43 सकारात्मक तथा 8 नकारात्मक कथन हैं। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि शहरी छात्राओं केपर्यावरण जागरूकता के प्रति दृष्टिकोण में शहरी छात्रों कीअपेक्षा अधिक सकारात्मक अन्तर है।


पूर्वी उत्तर प्रदेश के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का सूचना क्रांति, परंपरागत विषयों तथा पर्यावरण जागरूकता के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन

वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ०प्र०)

शोध-प्रबन्ध

2011

तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर (उ.प्र.)

सिंह, लक्ष्मण (2016), ने 'अलीगढ़ मण्डल के ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत शिक्षकों की पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन' किया। इस शोध में न्यादर्श के रूप में उन्होंने अलीगढ़ मण्डल के चार जिलों कासगंज, एटा, हाथरस और अलीगढ़ के 800 शिक्षकों का चयन किया। प्रदत्त संकलन हेतु उन्होंने स्वनिर्मित पर्यावरण जागरूकता मापनी का प्रयोग किया जिसमें 75 प्रश्न रखे गये। शोध के निष्कर्ष रूप में उन्होंने पाया कि ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत महिला एवं पुरुषों की पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता में अन्तर है। महिला शिक्षकों की तुलना में पुरुष शिक्षक अधिक जागरूक हैं। इसी प्रकार शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत पुरुषों के पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता महिला शिक्षकों की तुलना में अधिक है।



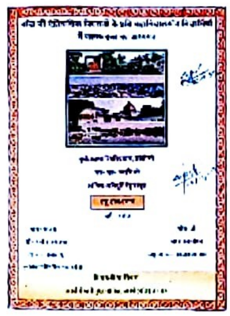
शैलेन्द्र कुमार त्रिपाठी(2018), नेअंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में एड्स के प्रति जागरूकता एवं पर्यावरण ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन में उन्होंने कानपुर नगर के अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के माध्यमिक स्तर के 800 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया। एड्स जागरूकता के प्रदत्त संकलन हेतु डॉ० मधु अस्थाना द्वारा निर्मित एड्स जागरूकता मापनी का प्रयोग किया गया। इस प्रश्नावली में कुल 52 कथन व प्रश्न हैं, जिनके



उत्तर हाँ या नहीं में देना होता है। इस अध्ययन के निष्कर्ष में उन्होंने पाया कि अंग्रेजी तथा हिन्दी माध्यम के छात्रों की एड्स के प्रति जागरूकता छात्राओं की अपेक्षा अधिक है। साथ ही हिन्दी माध्यम की छात्राओं की अपेक्षा, अंग्रेजी माध्यम की छात्राएँ एड्स के प्रति अधिक जागरूक हैं।



पूनम राठौर, (2020) ने 'अनुसूचित पिछड़े एवं सामान्य जाति के स्नातकोत्तर स्तर विद्यार्थियों के मानवाधिकार जागरूकता एवं व्यक्तिगत मूल्य विकास का तुलनात्मक अध्ययन' किया। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उन्होंने मेरठ मण्डल के 2 जिलों मेरठ व गाजियाबाद से 720 स्नातकोत्तर विद्यार्थियों का चयन किया।इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि पिछड़े एवं सामान्य जाति के विद्यार्थियों में मानवाधिकार जागरूकता स्तर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है। साथ ही सामान्य जाति की छात्राओं में मानवाधिकार जागरूकता स्तर छात्रों की अपेक्षा अधिक उच्च है।



सागर सिंह चौहान (2022), ने बाँदा कि 'ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन' किया। इस शोध में न्यादर्श के रूप में इन्होंने बाँदा जनपद के अंतर्गत बाँदा नगर के विभिन्न महाविद्यालयों में अध्ययनरत 200 विद्यार्थियों को शामिल किया। प्रदत्त संकलन हेतु शोधार्थी द्वारा 33 बहुविकल्पीय प्रश्नों की स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन में इन्होंने पाया कि बाँदा जनपद कि ऐतिहासिक विरासत के प्रति महाविद्यालयीन छात्राओं की जागरूकता, छात्रों कि अपेक्षा अधिक है तथा प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों कि जागरूकता का स्तर सामान्य है। बाँदा कि ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थी पर्याप्त जागरूक नहीं है।



दीपक कुमार (2021), ने 'विद्यार्थियों में मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता का अध्ययन' किया। इस शोध में न्यादर्श के रूप में इन्होंने चित्रकूटधाम मण्डल के 2 जिलों बाँदा एवं चित्रकूट से 50 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया। प्रदत्त संकलन हेतु शोधार्थी द्वारा 35 मिश्रित प्रश्नों की स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया। इस अध्ययन में इन्होंने पाया कि मड़फा दुर्ग के प्रति छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अमित कुमार गुप्ता (2023), ने अतर्रा महाविद्यालयीन जड़ी बूटियों के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन किया। इस अध्ययन में इन्होंने अतर्रा महाविद्यालय में अध्ययनरत स्नातक एवं परास्नातक के 116 छात्र-छात्राओं को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया। प्रदत्त संकलन हेतु शोधार्थी द्वारा 18 बहुविकल्पीय प्रश्नों कि स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन में इन्होंने पाया कि अतर्रा महाविद्यालयीन जड़ी बूटियों के प्रति छात्राओं कि जागरूकता छात्रों की अपेक्षा अधिक है। प्रशिक्षित विद्यार्थियों कि जागरूकता का स्तर अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की तुलना में अधिक है। तथा जड़ी बूटियों के प्रति विद्यार्थी अधिक जागरूक नहीं हैं।

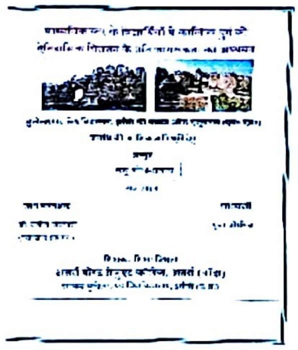


जैनेन्द्र सिंह (2022), ने बुन्देलखण्डीय जल प्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन किया। इस शोध में न्यादर्श के रूप में बाँदा नगर के पांच महाविद्यालयों में अध्ययनरत 200 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया है। प्रदत्त संकलन हेतु 33 प्रश्नों कि स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया है। शोध के निष्कर्ष के रूप में इन्होंने पाया कि-



- बुन्देलखण्डीय जल प्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन छात्र छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता का स्तर समान है।
- महाविद्यालयीन विद्यार्थी बुन्देलखण्डीय जल प्रपातों के प्रति पर्याप्त जागरूक नहीं हैं।

पूजा चौरसिया (2019), ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया। इस अध्ययन में इन्होंने 13 से 15 वर्ष की आयु समूह के बाँदा जनपद के अतर्रा के माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 10 में अध्ययनरत 150 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में शामिल किया। प्रदत्त संकलन हेतु 25 प्रश्नों की स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया। इस शोध अध्ययन में इन्होंने पाया की–



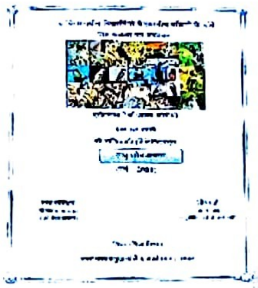
- कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- माध्यमिक विद्यार्थी कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति पर्याप्त जागरूक नहीं है।

धीरेन्द्र कुमार वर्मा (2022), ने गणेश बाग़ की ऐतिहासिक विरासत के प्रति उच्तर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन किया। इस अध्ययन में इन्होंने चित्रकूट जनपद के कर्वी नगर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 157 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में शामिल किया। प्रदत्त संकलन हेतु 31 प्रश्नों कि स्वनिर्मित बंद प्रश्नावली का चयन किया। इस शोध अध्ययन में इन्होंने पाया कि–



- गणेश बाग़ की ऐतिहासिक विरासत के प्रति छात्रों की जागरूकता छात्राओं कि अपेक्षा अधिक है।
- गणेश बाग़ की ऐतिहासिक विरासत के प्रति छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

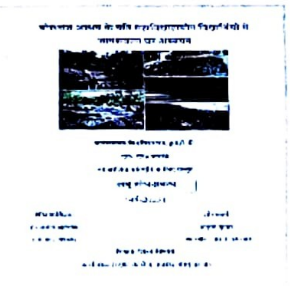
धर्म प्रकाश (2023), ने महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में स्थानीय पक्षियों के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया। इस शोध में इन्होंने न्यादर्श के रूप अतर्रा महाविद्यालय में अध्ययनरत 219 विद्यार्थियों को शामिल किया। प्रदत्त संकलन हेतु शोधार्थी ने 28 प्रश्नों कि स्वनिर्मित बंद प्रश्नावली का प्रयोग किया है। इस अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में इन्होंने पाया कि छात्राएं स्थानीय पक्षियों कि प्रति, छात्रों से अधिक जागरूक हैं।



प्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता का स्तर, अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता से अधिक है।

- स्थानीय पक्षियों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थी पर्याप्त जागरूक नहीं हैं।

अनुराग कुमार (2023), ने मोरध्वज आश्रम के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जारूकता का अध्ययन किया जिसमें न्यादर्श के रूप में चित्रकूट जनपद के कर्वी नगर के महाविद्यालय में अध्ययनरत 97 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया। प्रदत्त संकलन हेतु शोधार्थी 17 बहुविकल्पीय प्रश्नों कि स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया। इस शोध के निष्कर्ष में इन्होंने पाया कि–



- मोरध्वज आश्रम के प्रति छात्रों की जागरूकता, छात्राओं की अपेक्षा अधिक है।
- मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी महावियालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2.4 समीक्षात्मक निष्कर्ष

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के द्वारा शोध प्रबन्ध में उल्लेख किए गए, शोध में अनावश्यक पुनरावृत्ति नहीं होने पाती है। सम्बन्धित साहित्य शोध प्रबन्ध के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में शोधकर्ता के ज्ञान एवं कुशलता को स्पष्ट करता है।

शोध कर्ता द्वारा जागरूकता से सम्बन्धित पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों की समीक्षा की गयी है, जिसमें पाया कि जनसंख्या नियन्त्रण, पर्यावरण प्रदूषण, पर्यावरण संरक्षण, प्रदूषण उन्मूलन, मानवाधिकार, एड्स, बाँदा की ऐतिहासिक विरासत, मड़फा दुर्ग, जड़ी बूटी, जल प्रपात, कालिंजर दुर्ग, गणेश बाग़, स्थानीय पक्षी, तथा मोरध्वज आश्रम के प्रति जागरूकता से सम्बन्धित अध्ययन पहले किए गये किन्तु अभी तक कोई भी शोध कार्य गढ़कुंडार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता के सम्बन्ध में नहीं किया गया है, जिस कारण से शोधकर्ता ने इस विषय को शोध कार्य हेतु चुनने का निश्चय किया।

अध्याय तृतीय
गढ़कुंडार दुर्ग: एक परिचय

3.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

गढ़कुंडार किला झांसी के पास सदियों पुराना है और चारों तरफ से पहाड़ियों से घिरा हुआ है।

गढ़कुण्डार दुर्ग झांसी से 50 किमी. दूर निवाड़ी सेंदरी मार्ग पर ग्राम कुण्डार में स्थित है। जुझौती देश की राजधानी गढ़कुण्डार 11वी. शताब्दी में उत्तर भारत की समृद्धशाली नगरी थी। देश की आजादी तक खंगार राजा का किलेदार रहा। मंजिलों के रहस्य, अफवाहें और कहानियां इस किले के बारे में चलती इसके बाद बुंदेला शासन शुरू हुआ।


चित्र संख्या 3.1.1 गढ़कुंडार दुर्ग

दिल्ली नरेश पृथ्वी राज चौहान और खेत सिंह खंगार ने सन् 1182 ई. में चंदेलो को पराजित कर यहां अपनी विजय पताका फहराई थी। खेतसिंह ने सन् 1182 ई. में खंगार राज्य जुझौती की राजधानी कुण्डार को बनाकर इस अजेय दुर्ग का निर्माण करवाया था। महाराजा खेतसिंह के पश्चात क्रमशः नंदपाल, छत्रपाल सिंह, खूब सिंह तथा मान सिंह राजा हुए। यह दुर्ग बीहड़ वनों एवं पर्वतीय मार्गों के बीच पहाड़ी पर स्थित है। इस किले की यह विशेषता है कि यह दूर से तो दृष्टिगोचर होगा किंतु पहाड़ी शिलाखण्डो के कारण निकट मार्ग से पूर्ण सुरक्षित है। सामाजिक दृष्टि से यह अपने समय का अजेयव अद्वितीय दुर्ग माना जाता है। उस समय दुश्मन की तोपों के गोले किले को अपना निशाना नहीं बना पाते थे, लेकिन किले से जो तोपें वार करती थी, वह मीलों तक दुश्मन के ठिकानों को नष्ट कर देती थी।

दुर्ग के लिए हस्ति पथ द्वारा प्रवेश द्वार तक आसानी से पहुंचा जा सकता है। प्रवेश द्वार के बाहर दो चबूतरे है, जो दीवान चबूतरे कहलाते है। प्रवेश द्वार की ऊंचाई 20 फुट है तथा लम्बाई दोनों बुर्जा सहित 80 फुट है। परकोटे की चौड़ाई लगभग 5-6 फुट है। अन्दर प्रवेश करने पर बाएं हाथ की ओर सैनिक चौकी है, जिसे 12 सीढ़ियो द्वारा पार किया जाता है, मुख्य द्वार के पास ही तोपखाना है। राजमहल के बाहर एक घुड़साल है जिसके 11 दरवाजे है, यह 18 फुट चौड़ी और 100 फुट लंबी है। महल के दक्षिण-पश्चिम में मोती सागर तालाब है जो 200 फुट लंबा व 50 फुट चौड़ा है। महल के उत्तर व दक्षिण में दस पहला (10 भुजकार) बुर्जे अपनी प्राचीनता की गाथा स्वयं कहती है।प्रवेश द्वार के बाद आता है सुन्दर, मजबूत तथा भव्य राजमहल। राजमहल की ऊंचाई 150 फुट तथा चौड़ाई 400 फुट है। दुर्ग की मुख्य बुर्ज दक्षिण पूर्व में है, यह अष्टखण्ड महल का एक भाग है, इसका एक खण्ड तल में व सात खण्ड ऊपर है। दुर्ग के उत्तर व दक्षिण पार्श्व में प्रत्येक मंजिल पर बड़ोरियों की श्रृंखलाएं है। गैलरियां लाल पत्थरों की बनी है। किले के स्तंभ चौकोर है, जिन के ऊपर आड़े स्तंभ है। नीचे के खण्ड से एक रास्ता जमीन के अंदर से मोती सागर जाता है, यह गुप्त मार्ग 200 फुट लंबा व 15 फुट चौड़ा सुरंगनुमा है। महल का आंतरिक

भाग लगभग वर्गाकार व काफी व्यापक है। महल का आंगन उत्तर में 148 फुट 4 इंच, पश्चिम में 149 फुट 7.5 इंच, दक्षिण में 148 फुट 6.5 इंच तथा पूर्व में 148 फुट 2 इंच है। पश्चिम के कोने पर एक बड़ा दरवाजा है तथा उत्तर- पश्चिम कोने पर भण्डार गृह व रसोई गृह है। महल की प्रत्येक मंजिल पर शौचालय, मूत्रालय व पानी रखने की व्यवस्था है। महल में राजा रानी का कक्ष, दरवार के लिए दीवानआम, अतिथिशाला व बंदीगृह भी बने हुए है।महल के अंदर स्थापत्य के कुशल शिल्पियोंमोहन, हेमराज,हेमा एवं तुलसी आदि केनाम उपलब्ध हुए है। इस महल की यहविशेषता है कि किसी भी तरफ से चढ़े एक हीस्थान पर पहुंच जाते है।

खंगार राजकुमारी'केसर दे' का सती स्तंभ किले के प्रांगण में हीरखा है। दुर्ग की छत से उत्तर दिशा में दिखताहै जौहर ताल व जौहर कुआं। उस समय इसकुये से ही दुर्ग के लिए पेयजल की आपूर्तिकी जाती थी। यहां दुर्ग से सुरंग के द्वारा जायाजाता था, सुरंग के अवशेष आज भी विद्यमानहै। खंगार राजवंश की वीरांगनाओं ने इसीकुआ (जौहर कुण्ड) में अग्नि प्रज्जवलित करजौहर किया था।



चित्र संख्या 3.1.2 गजानन माता

डाबर खास के जंगल में पहाड़ी के ऊपर गजानन माता का मन्दिर है। इस मंदिर का निर्माण महाराजा खेत सिंह ने करवाया था। खंगार राजवंश से संबंधित होने के कारण तुगलक ने इसे ध्वस्त कर दिया था। कुछ वर्ष पूर्व यहां मन्दिर का नए सिरे से निर्माण किया गया। नवरात्रियों में तथा महाराजा खेत सिंह की जयन्ति पर यहां भरी संख्या में लोग पूजा अर्चना करने आते है।दुर्ग की उत्तर पूर्व दिशा में है विशाल सिन्दूर सागर ताल, इसे नीमा ताल भी कहते है। खंगार काल में यहां एक समृद्धशाली नगरी थी, जहां बाजार में हाथी घोड़े आदि बिकते थे, गांव के नाम 'हाथी' एवं 'नोटा' बाजार में बिकने के लिऐ लाए जाने वाले हाथी एवं घोड़ों के पड़ाव वाली जगहों से संबंधित है। सन् 1347 ई. में मुहम्मद तुगलक ने कुण्डार के खंगार साम्राज्य पर आक्रमण किया तो इस नगरी को पूर्णतः नष्ट कर दिया। यह दोबारा न बसे इसके लिए तुगलक ने सुरक्षा दीवार को पूर्ण रूप से बन्द करवा दिया। जिससे बरसात का पानी यहाँ एकत्र होता रहा और कालान्तर में एक विशाल तालाब का रूप ले लिया। इस नगर के अवशेष कुंअरपुरा एवं ढीमरपुरा गांवो में भी पाए जाते है जिनकी जमीन अब तालाब में डूब गई है। तालाब के सीढ़ियों के लिए 'सती स्तंभों' का प्रयोग किया गया है, ऐसा कोई हिंदू विरोधीशासक ही कर सकता है। ग्रीष्मकाल में जब तालाब का जलस्तर कम हो जाता है तो प्राचीन नगरी के भग्नावशेष स्पष्ट रूप से दिखाई देते है सिन्दूर सागर ताल की पूर्व दिशा में जंगलों से घिरा हुआ 'मुड़िया महल' अपूर्ण हालत में है। कुछ इतिहासकार इसे गौंड कालीन मानते है जबकि अन्य इसका निर्माण चंदेल काल मानते है। किसी कारणवश इसका निर्माण कार्य अधूरा छोड़ दिया गया। आज भी मुड़िया महल के चारों तरफ पत्थर आदि निर्माण सामग्री फैली हुई देखी जा सकती है। सिन्दूर सागर ताल की उत्तर दिशा वाली पहाड़ी पर 'राजा-रानी' की बैठक आज भी बनी हुई है। परिमर्ददेव के शासन काल में सिया परमार गडकुंडार का शासक था, 'सिया की राबरी' को सिया परमार का निवास माना जाता है। वर्तमान में इस इमारत की केवल एक ही दीवार शेष बची है।

- **चंदेलों की विरासत**

अगर कोई किले के पास पहुंच भी जाए तो इसे जीतना आसान नहीं था। किले की ऊंची और मोटी दीवारों पर चढ़ना लगभग नामुमकिन था। दुश्मन के आते ही दुर्ग की रक्षा कर रही सेना परकोटे के छेदों से नीचे हमला बोल देती। इसे गढ़कुंडार का दुर्ग कहते हैं, जिसे चंदेल राजा यशोवर्मन ने नौवीं सदी में बनवाया था।

- **पृथ्वीराज का कब्जा**

कई पीढ़ियों तक वहां चंदेलों का शासन रहा। सन 1182 में पृथ्वीराज चौहान ने राजा परमार्दि देव को हराकर चंदेलों की राजधानी महोबा पर कब्जा कर लिया। इस जीत के फौरन बाद महोबा से कोई सवा सौ किलोमीटर दूर बना यह दुर्ग भी उनके कब्जे में आ गया। पृथ्वीराज चौहान ने तब अपने खास सेनापति खेतसिंह खंगार को गढ़कुंडार का किलेदार बना दिया।

- **खंगारवंश का राज**

10 साल बाद 1192 में पृथ्वीराज जब मोहम्मद गोरी से युद्ध हार गए, तब खेतसिंह ने खुद को गढ़कुंडार का राजा घोषित कर दिया। इस तरह 12वीं सदी के आखिरी दशक में शुरू हुआ खंगारवंश का राज। इस वंश की चार पीढ़ियों ने गढ़कुंडार पर शासन किया।

- **नारी सम्मान**

इस दौरान खंगार शासकों ने नई सामाजिक और धार्मिक प्रथाएं शुरू कीं, जो बुंदेलखंड के कई ग्रामीण और उपनगरीय क्षेत्रों में आज भी जिंदा हैं। कहते हैं कि खंगार राजा नारी सम्मान को लेकर बेहद सजग थे। उनके दौर में ही बेटी पूजन की शुरुआत हुई। यह प्रथा बुंदेलखंड के कई क्षेत्रों में तब से चली आ रही है।

- **बुंदेला राज**

स्थानीय लोगों के बीच लोककथाएं और लोकगीत भी मशहूर हैं, जिनसे खंगार राज का इतिहास पता चलता है। ऐसी ही दो कथाओं में खंगारवंश के अंत का पता चलता है। एक कथा के मुताबिक, सन 1347 में मोहम्मद बिन तुगलक ने गढ़कुंडार पर हमला किया और खंगार राजा मानसिंह को हरा दिया। तुगलक के बाद गढ़कुंडार बुंदेला शासकों के पास आ गया।

- **खंगार वंश का अंत**

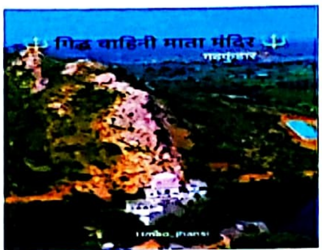
दूसरी कथा भी है, जिसके मुताबिक खंगार वंश के आखिरी राजा हुरमत सिंह ने एक बुंदेला सेनापति सोहनलाल को शरण दी थी। बदले में राजा ने अपने बेटे नागदेव की शादी सोहनलाल की बेटी हेमवती से करवाने का प्रस्ताव रखा। सेनापति ने इससे इनकार कर दिया। कुछ समय बाद सोहनलाल ने एक दूसरे राजा पुण्यपाल परमार के साथ मिलकर हुरमत सिंह के खिलाफ साजिश रची। उसने राजा हुरमत से कहा कि वह राजकुमार से अपनी बेटी की शादी इस शर्त पर करने को तैयार है कि बारात में खंगार वंश का हर सदस्य शामिल होगा।

- **ओरछा बनी राजधानी**

राजा हुरमत ने शर्त मान ली। बारात आई, तो सभी को खूब शराब पिलाई गई। बाराती नशे में डूब गए और मौका देखकर सोहनलाल की सेना ने हमला कर दिया। उसी रात पूरा खंगार वंश खत्म हो गया। इस कथा को लेकर दोनों राजवंशों के अपने अलग-अलग दावे जरूर हैं, लेकिन इस बात पर एक राय है कि खंगार वंश के अंत के बाद ही शुरुआत हुई बुंदेला शासन की। आखिरी खंगार राजा के अंत के बाद सोहनलाल बुंदेला गढ़कुंडार के राजा बने, लेकिन सन 1531 में बुंदेला राजा रूद्र प्रताप सिंह ने अपनी राजधानी गढ़कुंडार से बदलकर ओरछा में बना ली गढ़कुंडार में किलेदार रख दिए गए। देश आजाद हाने तक वहां बुंदेला शासकों के ही किलेदार रहे।

3.2 गढ़कुंडार दुर्ग के महत्वपूर्ण स्थल

3.2.1 गिद्ध वाहिनी मन्दिर



चित्र संख्या 3.2.1 गिद्ध वाहिनी

गढ़कुंडार किले से 2 किलोमीटर दूर ही गिद्ध वाहिनी देवी का प्रसिद्ध मंदिर है। गिद्ध वाहिनी देवी सीता जी का अवतार है। गिद्ध वाहिनी मंदिर मूलतःविंध्यवासिनी देवी का मंदिर है। ऐसी मान्यता है कि विंध्यवासिनी देवी ही बुन्देलों की सहायता करने के लिए विंध्यांचल से गिद्ध बैठकर गढ़कुंडार आयीं इसलिए यहाँ पर उन्हें गिद्ध वाहिनी देवी कहा गया है। इस मंदिर का निर्माण सन् 1213 में सोहनपाल नाम के जमींदार द्वारा करवाया गया था। मान्यता है कि यहाँ जो भी मन्नत मांगी जाती है वह पूरी हो जाती है। मंदिर में एक विद्युत संचालित नगाड़ा रखा हुआ रखा है जो आरती के समय बिना किसी की सहायता के बजता है। यह नगाड़ा काफी आकर्षण का केंद्र हैं।

3.2.2 गिद्ध की प्रतिमा

मंदिर के बाहर एक बहुत ही खूबसूरत गिद्ध की प्रतिमा बनी हुई है जिस पर बैठकर माँ विंध्यवासिनी गढ़कुंडार आई थीं। इस गिद्ध की प्रतिमा का यहाँ निर्माण किया गया है।



चित्र संख्या 3.2.2 गिद्ध की प्रतिमा

3.2.3 हनुमान जी की प्रतिमा

मंदिर के प्रांगण में ही हनुमान जी की प्रतिमा है जो गढ़कुंडार किले से यहाँ लाकर स्थापित की गयी है। बैठकर मा विध्यवासिनी गढ़कुडार आई थी। इस गिद्ध की प्रतिमा का यहाँ निर्माण किया गया है।



चित्र संख्या 3.2.3 हनुमान जी की प्रतिमा

3.2.4 मन्नत बलि पत्थर



चित्र संख्या 3.2.4 मन्नत बलि

मन्दिर के बाहर प्रांगण में मन्नत बलि पत्थर बना हुआ है। इस पत्थर की मान्यता है कि मन्नत पूरी होते ही यहाँ बलि दी जाती।

3.2.5 सिन्दूर सागर तालाब



चित्र संख्या 3.2.5 तालाब

मन्दिर के पीछे विशाल सिंधुसागर तालाब है। इस तालाब का निर्माण सन् 1216 में सोहनपाल नाम के जमींदार द्वारा करवाया गया था। बताया जाता है कि इस तालाब में 168 गंगा माई का जल एकत्रित है। इसके चारों तरफ का वातावरण अत्यंत सौन्दर्यकारी एवं मनमोहक है।

3.2.6 प्राचीन बावड़ी



चित्र संख्या 3.2.6 प्राचीन बावड़ी

बावड़ी तक पहुंचने का रास्ता पहली मंजिल से है। अगर अंधेरे की वजह से आपको बावड़ी का गेट नहीं मिलता है तो पीछे की तरफ से भी जा सकते हैं। हम बावड़ी पीछे की ओर से गए। बावड़ी में आज भी पानी है। प्राचीन बावड़ी किले की तरह बनी हुई है। जिसे देखकर समझ आता है कि पहले लोग हर चीज को भव्य तरीक से बनाते थे।

किले से जुड़े रहस्य

- **भूल-भुलैया**

मध्य प्रदेश के निवाड़ी जिले में एक जगह है। नाम है गढ़कुंडार। इस गढ़कुंडार में एक किला है। दिखने में तो यह विशाल किला सदियों पुराना है लेकिन यह अपने साथ कई रहस्यों को छुपाए बैठा है। कहते हैं कि यह किला दुश्मनों को अपने पास पहुंचने नहीं देता था। दूर से विशाल दिखता पर पास पहुंचते-पहुंचते आंखों से ओझल हो जाता। इसके गायब होने की पहेली को समझना बहुत आसान है। किला असल में चारों तरफ से छोटी-छोटी पहाड़ियों से घिरा है। जैसे-जैसे आप आगे बढ़ेगे, आसपास की पहाड़ियां बड़ी दिखने लगेंगी और किला उनके पीछे छिपता चला जाएगा। आगे चलने पर भी य मुश्किल हल नहीं होती। तब कई रास्ते नजर आने लगते हैं और यह अंदाजा लगाना मुश्किल हो जाता है कि किले की ओर कौन-सा रास्ता जाएगा।

\

- **नायाब वास्तुकला**

गढ़कुंडार की प्राचीन वास्तुकला अब भी वास्तुकारों को हैरान करती है। पांच मंजिला दुर्ग की तीन मंजिलें जमीन के ऊपर हैं, तो दो जमीन के नीचे। निचले हिस्से की संरचना ऐसी है कि कोई बाहरी इन दो मंजिलों का रास्ता आसानी से नहीं ढूंढ सकता। सब रास्ते भूल-भुलैया हैं और एक से दूसरी जगह जाने के लिए बीसियों दरवाजे ।

- **बारात हो गई गायब**

गढ़कुंडार के इस किले की गिनती भारत के कई रहस्यमय किले में होती है। आसपास के लोगों का कहना है कि कुछ समय पहले यहां पास में गांव में एक बारात आई थी। बारात किले में घूमने के लिए आई। घूमते-घूमते लोग तलघर में चले गए, इसके बाद वो अचानक से गायब हो गए। उन 50 से 60 लोगों का आजतक पता नहीं चल पाया। इसके बाद कई ऐसी घटनाएं देखने को मिली, जिसके बाद नीचे के सभी दरवाजों को बंद कर दिया।

- **किले में खजाना**

कहते हैं कि किले में एक खजाने का रहस्य छिपा है, जिसे तलाशने के लिए कई लोगों ने अपनी जान गंवा दी है। इतिहास के जानकार का कहना है कि यहां रहने वाले राजाओं के पास सोने-हीरे हुआ करते थे। उन्हें ढूंढने के लिए कई लोगों ने आज अपनी जान गंवा दी है।

अध्याय चतुर्थ

अध्ययन विधि एवं प्रक्रिया

4.1 प्रस्तावना

जब कोई अनुसन्धानकर्ता अपनी अनुसन्धान समस्या से सम्बन्धित उद्देश्य और परिकल्पनाओं का निरूपण कर लेता है तब वह अपनी परिकल्पनाओं का अनुभवपरक सत्यापन करना चाहता है। अनुभवपरक सत्यापन के लिए परिकल्पनाओं से सम्बन्धित तथ्यों और आँकड़ों की आवश्यकता होती है। यह तथ्य या आँकड़े किस योजना या अनुसन्धान व्यूह नीति के आधार पर एकत्र किए जायें कि परिकल्पनाओं की वैज्ञानिक और अनुभवपरक जाँच की जा सके और विश्वसनीय तथा वैद्य परिणाम प्राप्त किए जा सकें। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि अनुसन्धानकर्ता उपयुक्त रीतिविधान का निर्धारण करे और उपयुक्त अभिकल्प का चयन करे। वैज्ञानिक अनुसन्धानकर्ता को भी अनुसन्धान समस्या के अध्ययन के लिए अनेक साधन जुटाने पड़ते हैं। प्रायः उसे अपनी अनुसन्धान समस्या के लिए अनुसन्धान अभिकल्प की आवश्यकता होती है।

एकॉफ (1953) के अनुसार, "अभिकल्प वह प्रक्रिया है जिससे किसी समस्या समाधान के लिए निर्णयों को क्रियान्वित किया जाता है। किसी अपेक्षित परिस्थिति को नियन्त्रित करने की दिशा में यह एक संकलित पूर्वानुमान की प्रक्रिया है।"

"Design is the process of making decisions before the situation arises in which the decision is to be carried out. It is a process of deliberate anticipation directed towards bringing the expected situation under control."

—R. L. Ackoff

4.2 शोध विधि

प्रत्येक शोधकर्ता को अधिक विश्वसनीय एवं ठोस परिणामों की प्राप्ति हेतु कई विधियों का चयन करना होता है। शैक्षिक समस्याओं के समाधान हेतु सर्वेक्षण विधि सर्वाधिक प्रयोग की जाने वाली विधि है। प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है क्योंकि यह विधि व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित न होकर पूरे समूह से सम्बन्धित होती है और इसमें अधिक से अधिक व्यक्तियों को सम्मिलित किया जा सकता है।

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि को अपनाकर **गढ़कुंडार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति उच्चतर माध्यामिक स्तर के विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन** करने का प्रयास किया है।

- **सर्वेक्षण विधि**

सर्वेक्षण शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द Survey का हिन्दी रूपान्तरण है। Survey शब्द दो शब्दों (sur+vey) से मिलकर बना है। Sur शब्द का अर्थ ऊपर और Vey का अर्थ देखना है अर्थात सर्वेक्षण का अर्थ ऊपर से देखना या निरीक्षण करना है। विभिन्न विद्वानों के अनुसार सर्वेक्षण को निम्न प्रकार समझा जा सकता है—

मोर्स (1934) **के अनुसार,** " संक्षेप में सर्वेक्षण किसी सामाजिक स्थिति अथवा समस्या अथवा जनसंख्या के परिभाषित उद्देश्यों हेतु वैज्ञानिक तथा व्यवस्थित रूप में विश्लेषण की एक पद्धति है।"

"The Survey is, in brief, simply a method of analysis in scientific and orderly forms and for defined purposes of a given social situation or problem or population."

—H. N. Morse, The Social Survey in Town and Country Areas,

4.3 प्रतिदर्श चयन

किसी भी शोध कार्य के लिए प्रतिदर्श का चयन करने से पूर्व उसके अर्थ को समझना आवश्यक होता है। प्रतिदर्श को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है—

प्रतिदर्श को न्यादर्श भी कहते हैं। प्रतिदर्श जनसंख्या का वह छोटा भाग है, जिसे अनुसन्धानकर्ता के द्वारा वास्तविक अध्ययन के लिए चयनित किया जाता है। प्रतिदर्श जनसंख्या का प्रतिनिधित्व सूक्ष्म-रूप होता है तथा इससे प्राप्त सूचनाओं का सामान्यीकरण करके जनसंख्या के बारे में अनुमान लगाया जाता है। प्रतिदर्श के अंग्रेजी पर्याय Sample का उद्भव लैटिन भाषा के Exemplum शब्द से हुआ है, जिसका अर्थ है—Example अर्थात उदाहरण इस शाब्दिक अर्थ से भी संकेत मिलता है कि प्रतिदर्श जनसंख्या की कुछ ऐसी इकाइयों का संकलन होता है, जिन्हें जनसंख्या की विशेषताओं को स्पष्ट करने के लिए उदाहरण स्वरूप चुना जाता है।

गुडे और हाट (1960) **के अनुसार,** "प्रतिदर्श जैसा की इसके नाम से स्पष्ट है, विस्तृत समूह का छोटा प्रतिनिधि है।"

"A sample as the name applies is a smaller representation of a large whole."

—Methods in Social Research, Goode & Hatt.

प्रतिदर्श संकलन हेतु शोधकर्ता द्वारा सुविधा अनुसार प्रति चयन विधि का प्रयोग किया गया है

- **सुविधानुसार प्रतिचयन**

सुविधानुसार प्रतिचयन का प्रयोग सर्वेक्षणात्मक शोध में किया जाता है जहाँ शोधकर्ता को तथ्य का सस्ता सन्निकटन प्राप्त करना हो। जैसा कि इस विधि के नाम से पता चलता है, इसमें प्रतिदर्श का चयन इसलिए किया जाता है क्योंकि यह सुविधाजनक होता है। इसे **अव्यवस्थित या आकस्मिक प्रतिचयन** भी कहा जाता है, क्योंकि यह विधि उन लोगों पर लागू

होती है जो टहलते हुए अचानक मिल जायें या उन लोगों पर लागू होती है जिसकी शोध में विशेष रुचि हो स्वयंसेवकों का उपयोग सुविधानुसार प्रतिचयन का एक उदाहरण है। इस विधि का प्रयोग परिणामों का सकल आकलन प्राप्त करने के लिए प्राथमिक अनुसन्धान प्रयासों के दौरान किया जाता है। इस विधि से प्रतिदर्श का चयन करने में कोई खर्च या समय व्यर्थ नहीं जाता।

अतः शोधकर्ता द्वारा प्रदत्त संकलन गूगल फॉर्म के माध्यम से करने का निश्चय किया गया, इस हेतु महाविद्यालयों के शिक्षकों द्वारा अध्ययन-अध्यापन के लिए विद्यार्थियों के व्हाट्सएप ग्रुप में गूगल फॉर्म का लिंक प्रेषित कर तथा मोबाइल रखने वाले कुछ विद्यार्थियों से सीधा सम्पर्क कर विद्यार्थियों का न्यादर्श रूप में चयन किया गया।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध गढ़कुंडार दुर्ग के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता के अध्ययन से सम्बन्धित है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में शोधकर्ता द्वारा विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में अध्यनरत 103 विद्यार्थियों का चयन सुविधाअनुसार प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया जिसका विवरण निम्नवत है

तालिका संख्या 4.3.0

न्यादर्श वितरण तालिका

चर	वर्ग	संख्या	कुल संख्या
लिंग	छात्र	58	103
	छात्राएं	45	

4.4 शोध उपकरण

उपकरण वे उपकरण हैं जिनका उपयोग करके अनुसन्धान में डाटा एकत्र किया जाता है। यह अध्ययन के लिए डाटा संग्रह का साधन बन जाता है। यह विश्वसनीय और सटीक होना चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में तथ्यों के संकलन के लिये प्रायोगिक विधि में किसी उपकरण/यन्त्र का उपयोग होता है। इसके साथ-साथ निरीक्षणों का भी सहारा लिया जाता है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में प्रदत्त संकलन के लिए शोधकर्ता द्वारा शोध उपकरण के रूप में **स्वनिर्मित प्रश्नावली** का प्रयोग किया गया है

प्रश्नावली प्रश्नों की वह सूची है जो शोध समस्या के संबंध में बनाई जाती है, और जिसकी सहायता से अध्ययन इकाइयों से तत्वों का संकलन करके शोध समस्या का अध्ययन पूर्ण किया जाता है, शोधकर्ता के समक्ष उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों में गढ़कुंडार दुर्ग के प्रति जागरूकता का अध्ययन करने के लिए कोई मानकीकृत उपकरण उपलब्ध न होने के कारण स्वर्ण निर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया गया । इसका निर्माण अध्ययन के लिए आवश्यक है इस उपकरण

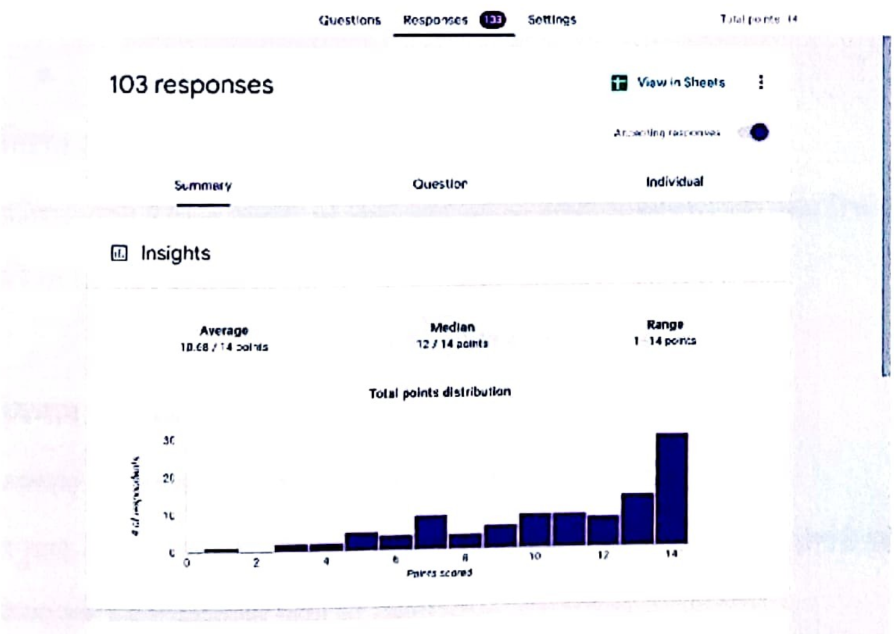
का निर्माण अनुसंधान करता ने शोध समस्या के उद्देश्य एवं समस्या के घटकों को ध्यान में रखकर किया है। गढ़कुंडार दुर्ग से संबंधित जागरूकता के अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा 20 प्रश्नों का निर्माण किया गया (परिशिष्ट-V)। समस्या के उद्देश्य एवं न्यादर्श के स्तर के आधार पर संकलन हेतु बंदर प्रश्नावली का चयन किया गया इनमें कथनों को विकलात्मक बनाया गया जिसमें चार विकल्प दिए गए इन चार में से एक विकल्प को चुना ,प्रश्नावली निर्माण के पश्चात ऐसे विशेषज्ञों को दिखाया गया उनके द्वारा निरर्थक एवं दोहराव वाले प्रश्नों को हटाया गया तथा कुछ नवीन प्रश्न जोड़े गए अतः सुझावों के पश्चात प्रश्नावली में प्रश्नों को कम भर रखा गया तथा अंतिम रूप से कुल 14 प्रश्न बने (परिशिष्ट-VI)।

4.5 परीक्षण का प्रशासन

प्रश्नावली को गूगल फॉर्म में तैयार कर विद्यार्थियों के व्हाट्सएप ग्रुप में भेज कर भरवाया न्यादर्श में दिनांक 13.10.2024 तक प्राप्त विद्यार्थियों की अनुक्रियाओं को ही न्यादर्श में सम्मिलित किया गया इस प्रकार अंतिम रूप से कुल 103 विद्यार्थियों की नया न्यादर्श के रूप में अनुक्रियाएं प्राप्त हुई।

4.6 परीक्षण का फलांकन

शोधकर्ता ने प्रश्नावली का निर्माण गूगल फॉर्म के माध्यम से प्रश्नावली के रूप में किया जिसमें प्रत्येक प्रश्न के लिए एक अंक निर्धारित था सही उत्तर के लिए एक अंक तथा गलत उत्तर के उत्तर देने पर जीरो अंक प्रदान किया गया गूगल फॉर्म में रिस्पांस पर सेलेक्ट करने पर स्वत: उसका फलांकन करके परिणाम प्रस्तुत कर देता है



4.7 सांख्यिकीय प्रविधियाँ

सांख्यिकी, गणित की वह शाखा है, जिसमें आँकड़ों का संग्रहण, प्रदर्शन, वर्गीकरण और उसके गुणों का आकलन तथा अध्ययन किया जाता है। सांख्यिकी एक गणितीय विज्ञान है, जिसमें किसी वस्तु/अवयव/तन्त्र/समुदाय से सम्बन्धित आँकड़ों का संग्रह, विश्लेषण, व्याख्या या स्पष्टीकरण और प्रस्तुति की जाती है।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध में प्रश्नावली की सहायता से संग्रहित किए गये आँकड़ों से प्राप्त सूचनाओं का विवेचनात्मक अध्ययन करने से पहले इनको एक निश्चित रूप प्रदान करना था। इसके लिए शोधकर्ता ने सामान्य सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया।

शोध के उद्देश्य तथा आँकड़ों की प्रकृति के आधार पर निम्नलिखित सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया—

- प्रतिशत
- मध्यमान
- प्रमाप विचलन
- वैषम्यतातथाकुकुदता
- सामान्यसम्भावनावक्र
- क्रान्तिक अनुपात
- दण्ड आरेख

4.7.1 प्रतिशत (Percentage)

प्रतिशत गणित में किसी अनुपात को व्यक्त करने का एक तरीका है। इसे (%) द्वारा व्यक्त किया जाता है। प्रतिशत को ज्ञात करने का सूत्र निम्नवत है—

$$\text{प्रतिशत}(\%) = (\text{प्राप्तांक}/\ \text{पूर्णांक}) \times 100$$

4.7.2 मध्यमान (Mean)

मध्यमान को समान्तर माध्य या अंकगणितीय माध्य भी कहा जाता है।

किंग के अनुसार—"समंक माला के पदों के योग में उनकी संख्या से भाग देने पर जो अंक प्राप्त होता है उसी को अंकगणितीय माध्य या मध्यमान के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।"

"The arithmetic average may be defined as the sum of aggregate of a series of items, divided by their number.

—W. I. King

मध्यमान प्राप्तांकों का केन्द्रीय मान होता है जो सभी आँकड़ों का प्रतिनिधित्व करता है। मध्यमान के आधार पर एक समूह की दूसरे समूह से तुलना की जाती है।

मध्यमान की गणना निम्नलिखित सूत्र के द्वारा की जाती है—

$$\overline{X} = \frac{\sum X}{N}$$

यहाँ—

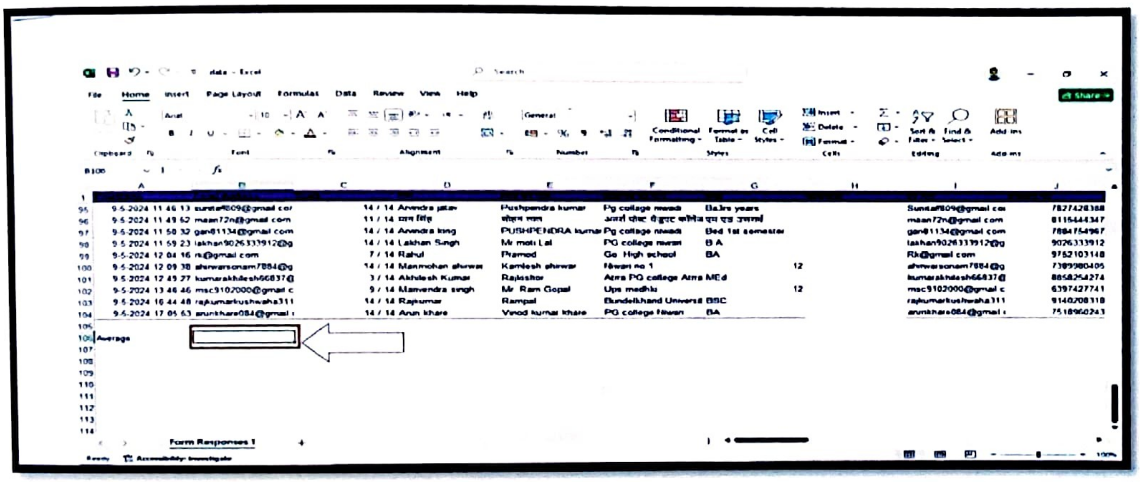
$\bar{x}$ = मध्यमान

$\sum x$ = प्राप्तांकों का योग

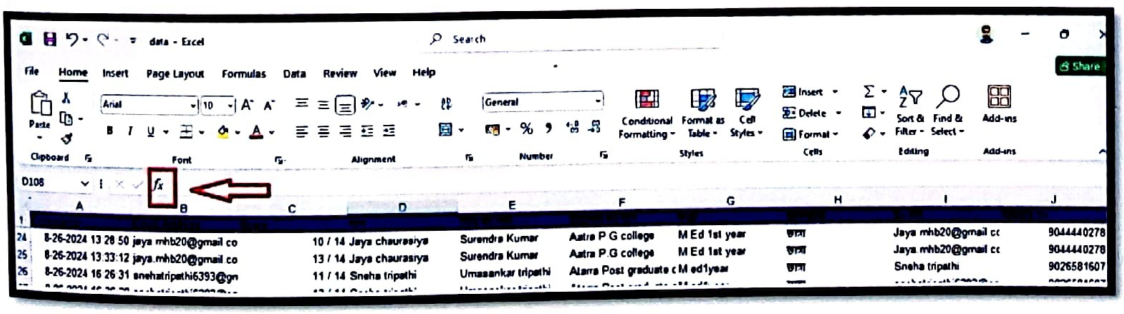
N = विद्यार्थियों की कुल संख्या

मध्यमान की गणना हेतु एम० एस० एक्सेल के चरण—

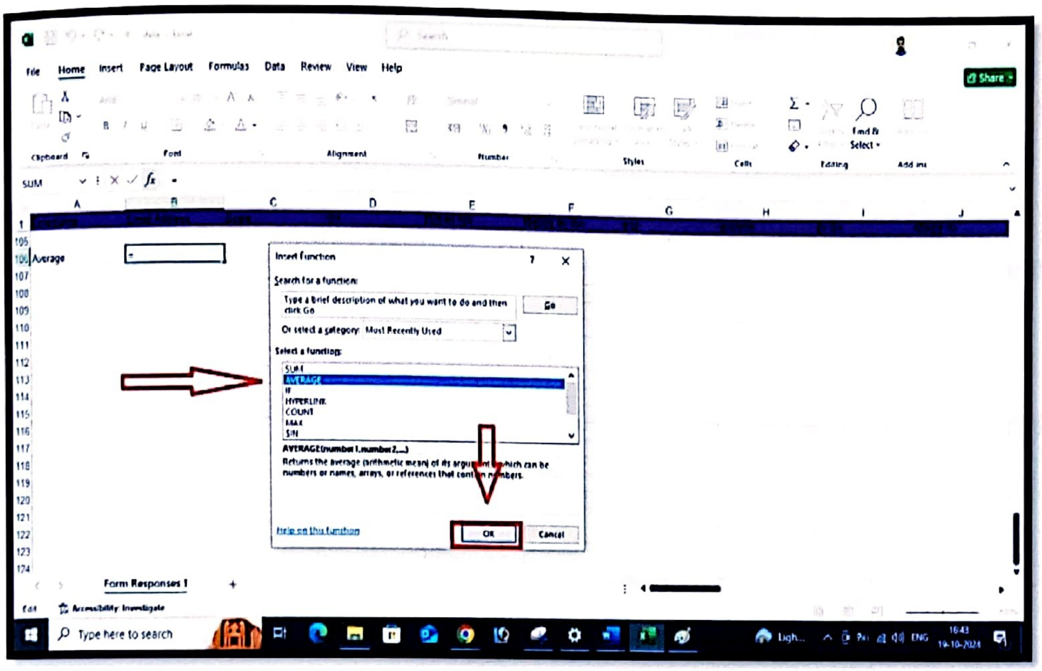
(i) किसी भी संख्या समूह का मध्यमान निकालने के लिए एक्सेल केAVERAGE Function का प्रयोग करते हैं। एक्सेल स्प्रेडशीट में संख्याओं को प्रविष्ट करके जहाँ पर एवरेज जानना चाहते हैं, वहाँ पर क्लिक करें।



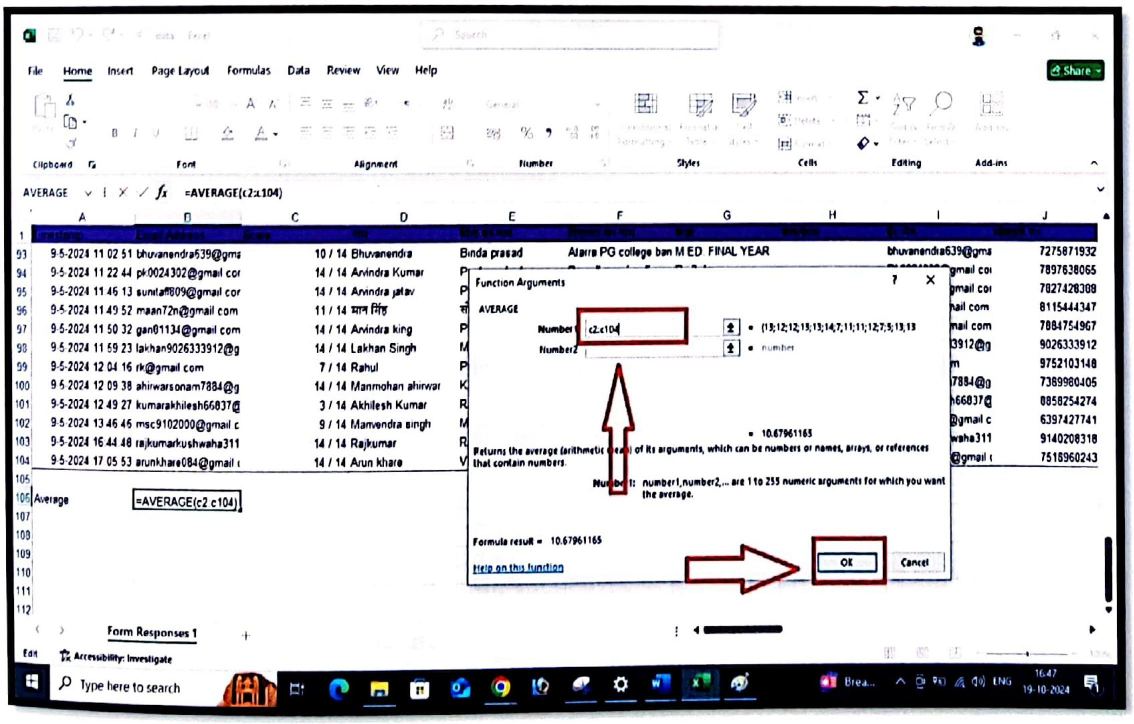
(ii) Formulas में क्लिक करें और 'Insert Function' tab को चुनें। एक्सेल स्प्रेडशीट की row या column में enter करें।



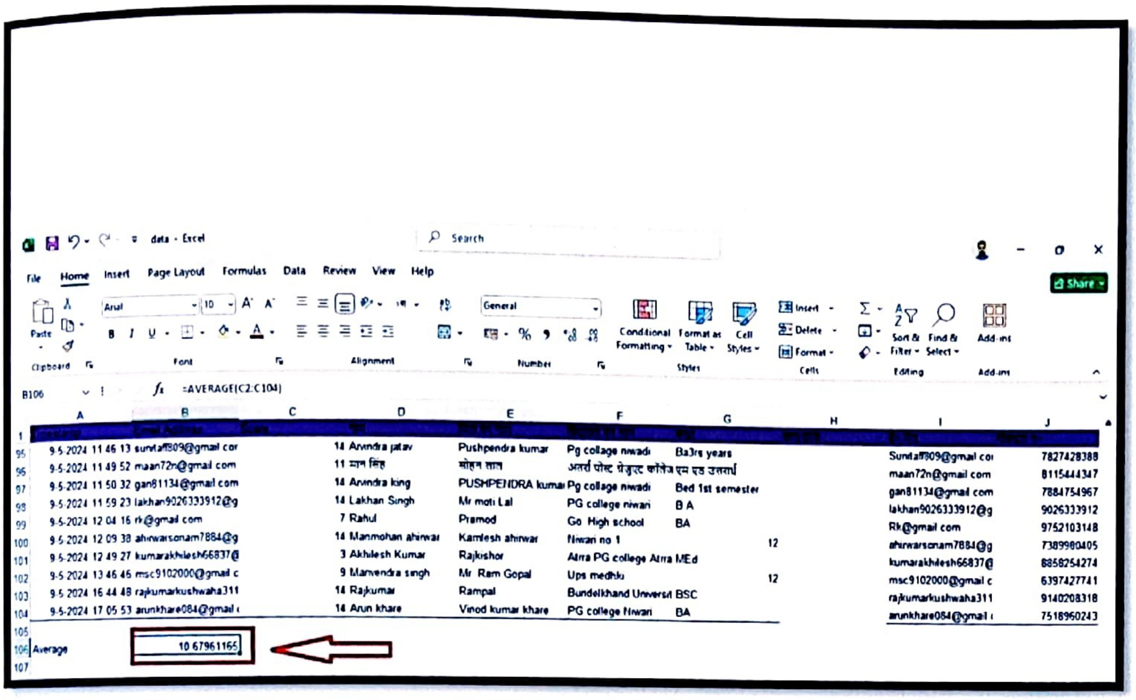
(iii) नीचे स्क्रॉल करें औरAVERAGE Function चुनें।



(iv) नम्बर 1 box में आपके नम्बर की लिस्ट के लिए, एक cell range (जैसे—A1:A200) enter करें और ok क्लिक करें।



(v). अब आपके द्वारा चुनी हुई cell में उस लिस्ट का मध्यमान (average) नजर आयेगा।



जब आपको इस फंक्शन का प्रयोग करने की आदत हो जायेगी फिर आप 'Insert Function' feature process का इस्तेमाल करना बन्द कर सकते हैं और इसकी जगह पर cell में सीधे इस सूत्र को type कर सकते हैं—

Mean- "=AVERAGE (cell range)"

e.g. "AVERAGE (A1:A200)"

4.7.3 प्रमाप विचलन (Standard Deviation)

प्रमाप विचलन समंक माला के विभिन्न पदों के समान्तर माध्य से लिए गये विचलनों के वर्गों के समान्तर माध्य का वर्गमूल होता है।

एलहान्स के अनुसार— "मानक विचलन अंकगणितीय माध्य से मापे गये विचलनों के वर्गों के माध्य का वर्गमूल होता है।"

"Standard deviation is the square root of the arithmetic average of the squares of deviations measured from the mean."

—Elhance.

प्रमाप विचलन को मानक विचलन या प्रामाणिक विचलन भी कहा जाता है। इसका संकेताक्षर σ है।

प्रमाप विचलन की गणना करने का सूत्र निम्नलिखित है—

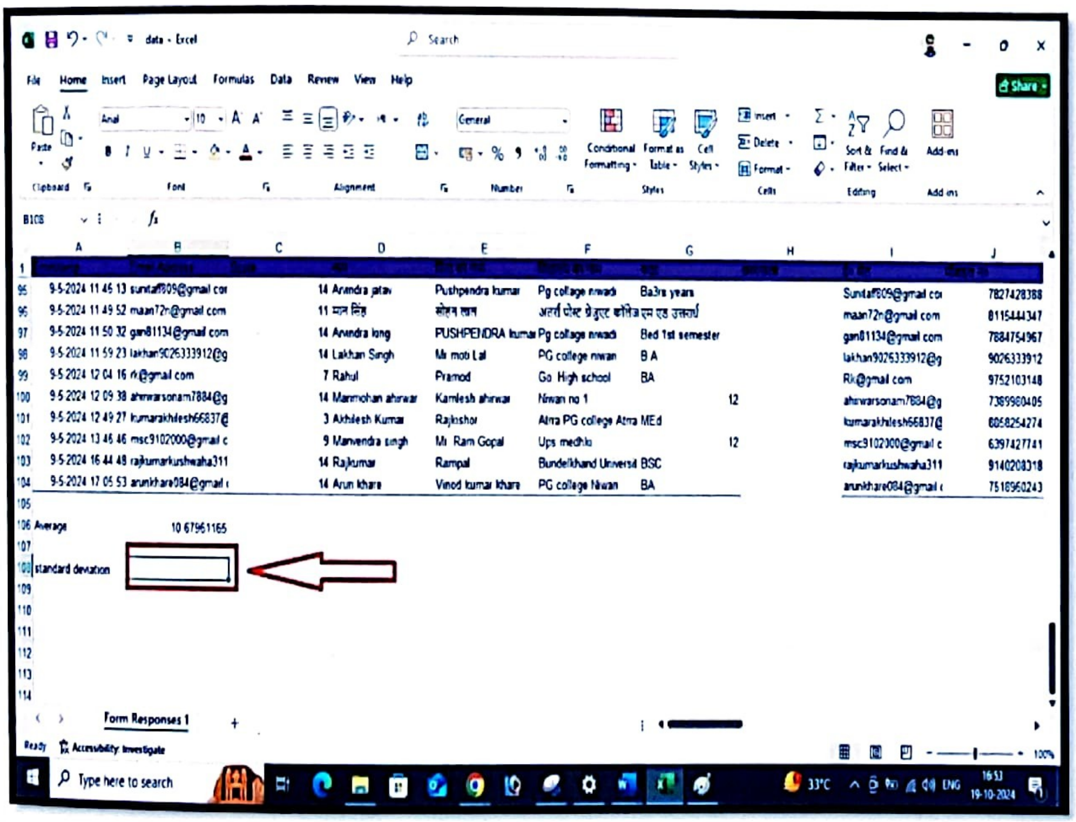
$$\sigma = \sqrt{\frac{\sum (x - \text{mean})^2}{n}}$$

- x is a set of numbers
- mean is the average of the set of numbers
- n is the size of the set
- σ is the standard deviation

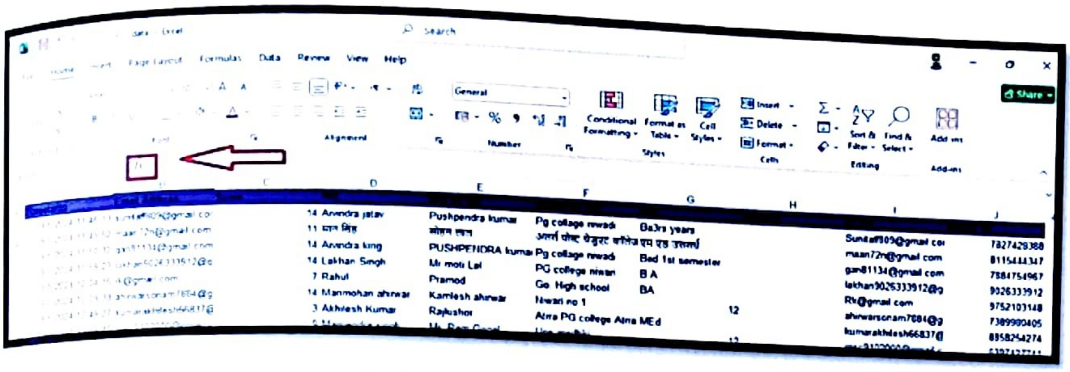
प्रमाप विचलन की गणना हेतु एम० एस० एक्सेल के चरण—

(i) प्रमाप विचलन की गणना के लिएSTDEVP Function का प्रयोग करें।

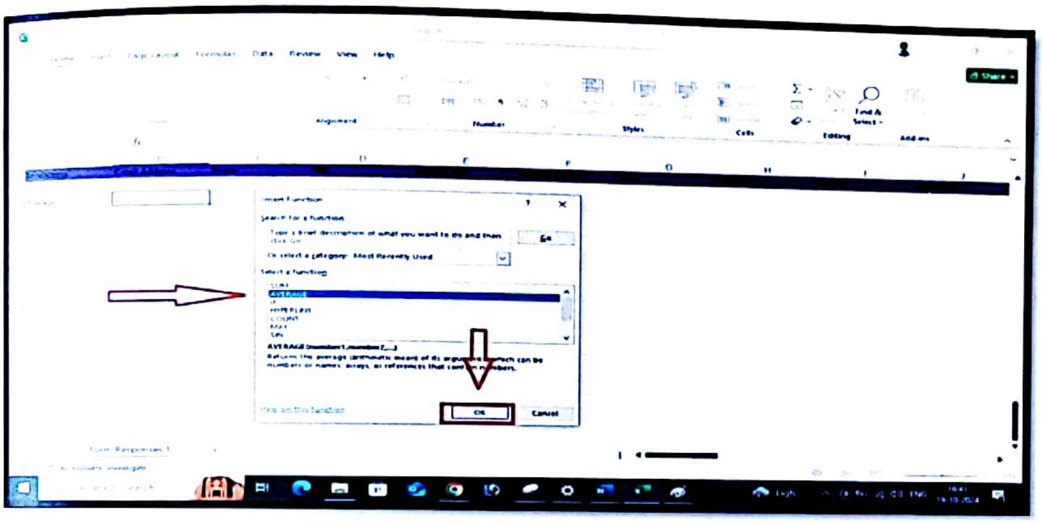
आपके कर्सर को उस जगह पर रखें, आप जहाँ इसे देखना चाहते हैं।



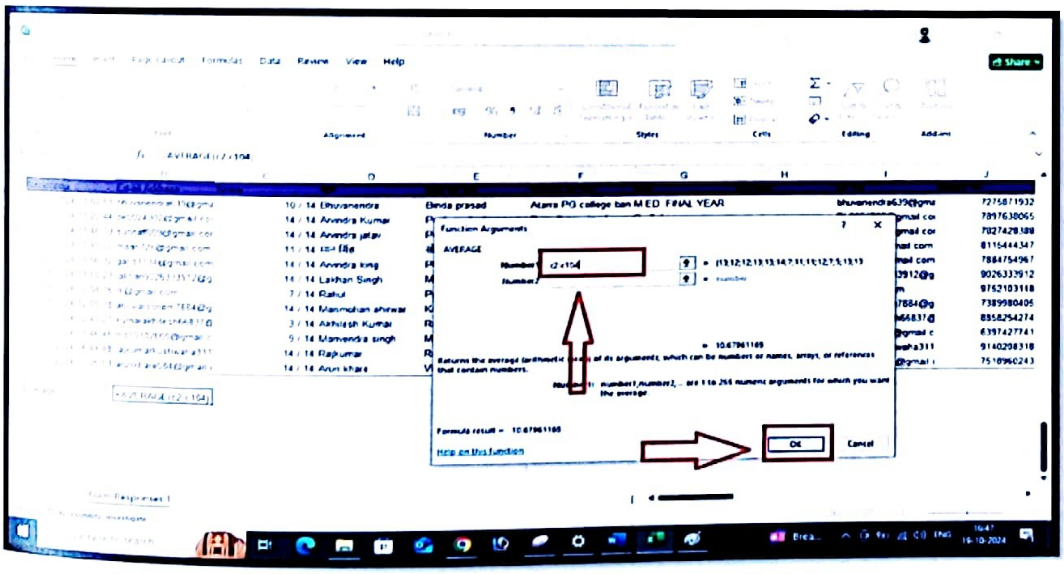
(ii). FORMULAS पर क्लिक करें और एक बार फिर सेInsert Function tab चुनें।



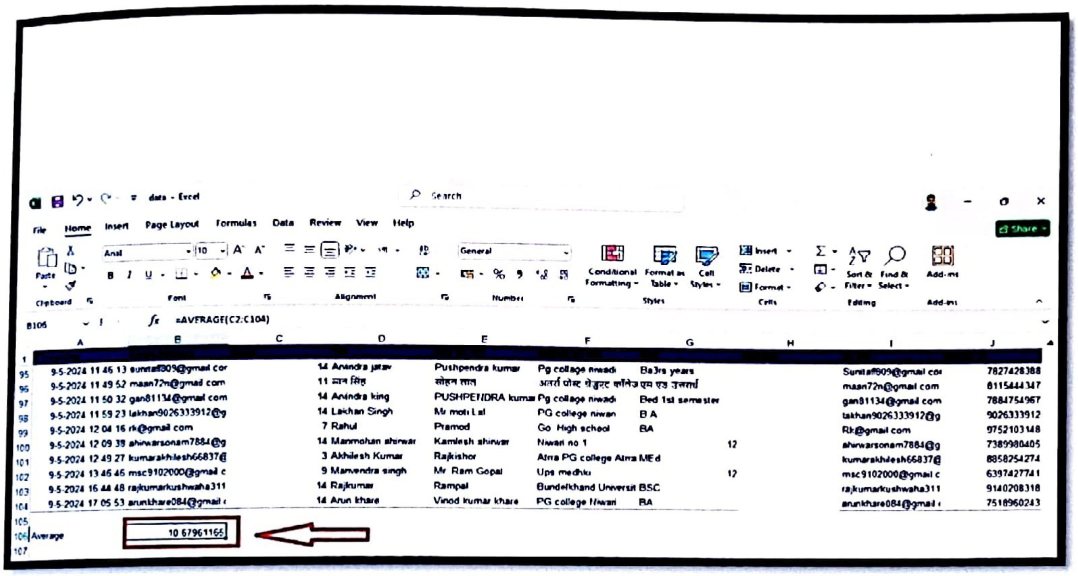
(iii). Dialog box पर scroll down करें औरSTDEVP Function चुनें।



(iv) नम्बर 1 box में आपके नम्बर की लिस्ट के लिए cell range enter करें और ok करें।



(v) अब आपके द्वारा चुनी हुई cell में उस लिस्ट का प्रमाप विचलन नजर आयेगा।



जब आपको इस फंक्शन का प्रयोग करने की आदत हो जायेगी फिर आप Insert Function feature process का प्रयोग करना बन्द कर सकते हैं और इसकी जगह पर cell में सीधे सूत्र को type कर सकते हैं।

Standard Deviation- "STDEVP (Cell range)

e.g. "STDEVP (A1:A200)"

4.7.4 वैषम्यतातथा कुकुदता (Skewness and Kurtosis)

वैषम्यता से तात्पर्य सामान्य वक्र में होने वाले अपसरण से है, जो किसी जनसंख्या के माध्य और माध्यिका में होने वाले अंतर से उत्पन्न होता है। सामान्य वक्र में माध्य, माध्यिका तथा बहुलांक वक्र की आधार रेखा के मध्य एक ही बिन्दु पर पड़ते हैं तथा इन तीनों का मान भी संख्यात्मक रूप से भी बराबर होता है। इसके फलस्वरूप सामान्य वक्र का चित्र काफी सन्तुलित दिखाई पड़ता है क्योंकि इसका दायाँ और बायाँ भाग समान ढाल वाला और एक दूसरे के बराबर होता है। परन्तु जब वितरण सामान्य न होकर विषम होता है तो माध्य तथा माध्यिका एक ही बिन्दु पर न पड़कर अलग-अलग पड़ते हैं और प्राप्तांकों का केन्द्रीकरण वितरण के बायीं या दायीं ओर हो जाता है। सामान्य वक्र में माध्य और माध्यिका दोनों बराबर होते हैं इसलिएविषमता शून्य होती है, परन्तु विषम वितरण में माध्य और माध्यिका में अन्तर होता है, यह अन्तर जितना ज्यादा होता है; विषमता उतनी अधिक होती है।

'विषमता' को इन दो 'सूत्रों' द्वारा ज्ञात किया जा सकता है–

(क) $Sk = \frac{3\,(\text{माध्य} - \text{मध्यिका})}{\sigma}$

यहाँ – Sk = विषमता, σ = मानक विचलन।

(ख) $Sk = \frac{(P_{99} + P_{10})}{2} - P_{50}$

जहां, SK = विषमता

P_{90} = प्रतिशतता 90

P_{10} = प्रतिशतता 10

P_{50} = प्रतिशतता 50 या मध्यिका

- If skewness is less than -1 or greater than 1, the distribution is highly skewed.
- If skewness is between -1 and -0.5 or between 0.5 and 1, the distribution is moderately skewed.
- If skewness is between -0.5 and 0.5, the distribution is approximately symmetric.

सामान्य वैषम्यता प्रसार

एक 'आवृत्ति वितरण वक्र', प्रसामान्य वक्र की तुलना में कितना चपटा अथवा शिखरीय है, इसकी जानकारी कुकुदता से मिलती है।

'ककुदता या 'कुर्टोसिस' को नीचे दिये गये 'सूत्र' द्वारा निकाला जा सकता है।

$Ku = \frac{Q}{(P_{90} + P_{10})}$ (प्रतिशत के आधार पर वक्रता को निकालना।)

जहां, Ku = ककुदता

Q = चतुर्थक विचलन

P_{90} = प्रतिशतता 90

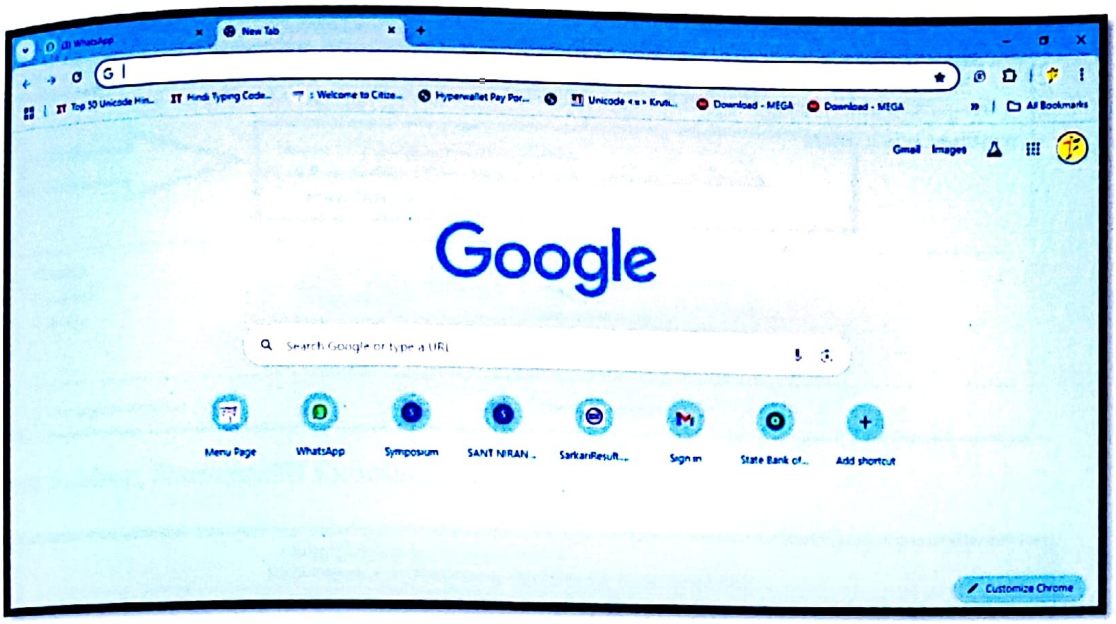
P_{100} = प्रतिशतता 10

सामान्य कुकुदता प्रसार

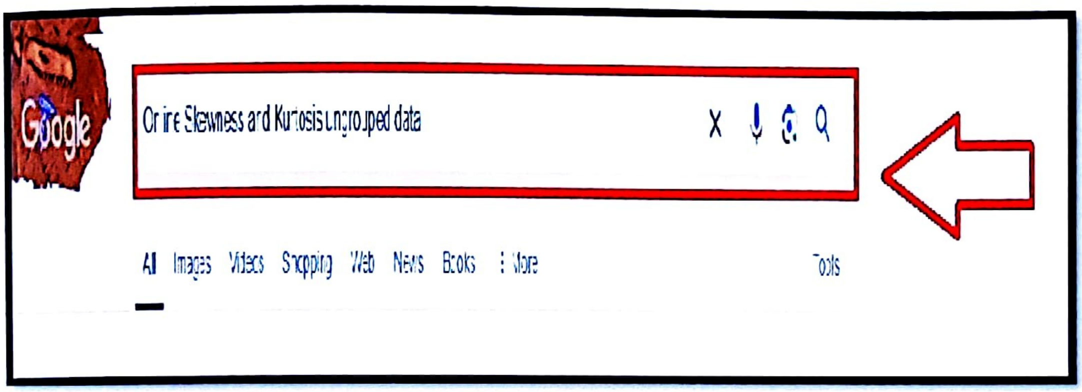
A standard normal distribution has kurtosis of 3 and is recognized as mesokurtic. An increased kurtosis (>3) can be visualized as a thin "bell" with a high peak whereas a decreased kurtosis corresponds to a broadening of the peak and "thickening" of the tails.

ऑनलाइन वैषम्यता और कुकुदता ज्ञात करने के चरण—

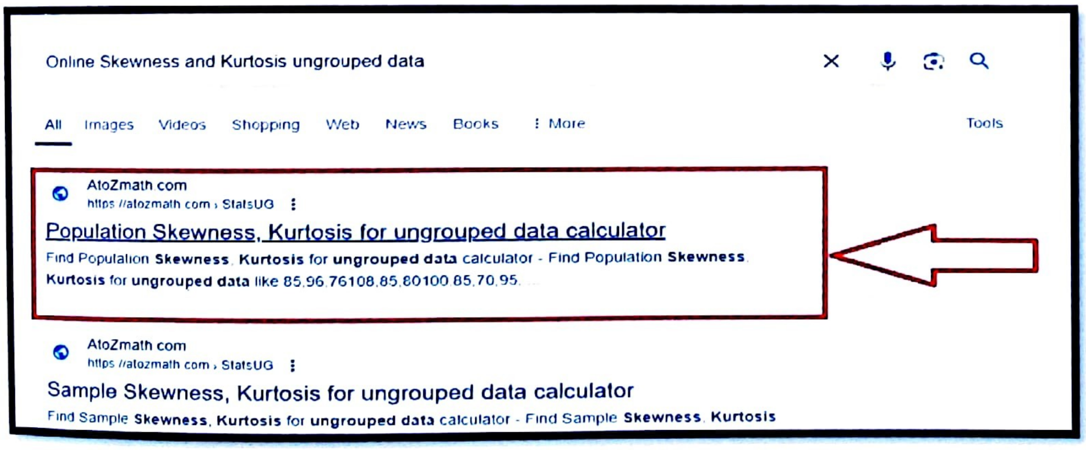
Step 1: सबसे पहले गूगल क्रोम ब्राउज़र को खोलें।



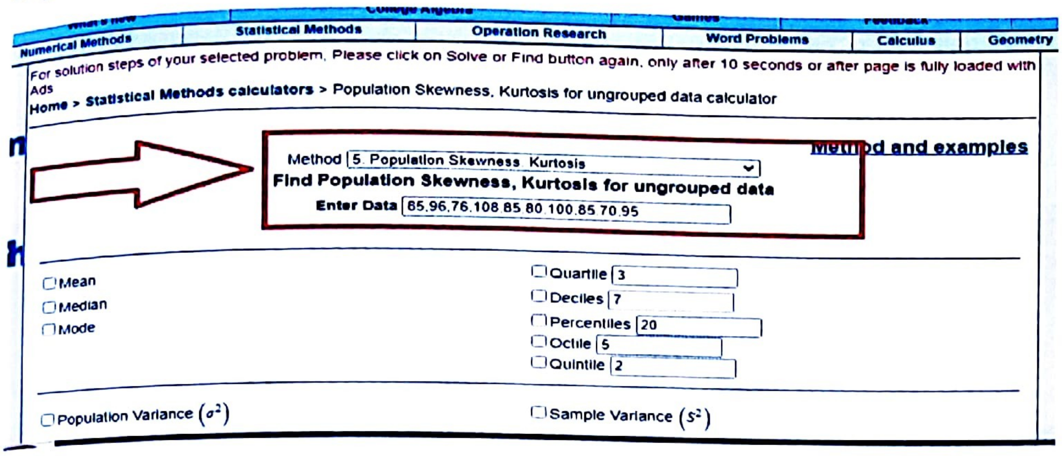
Step 2: Online Skewness and Kurtosis ungrouped data खोजें।



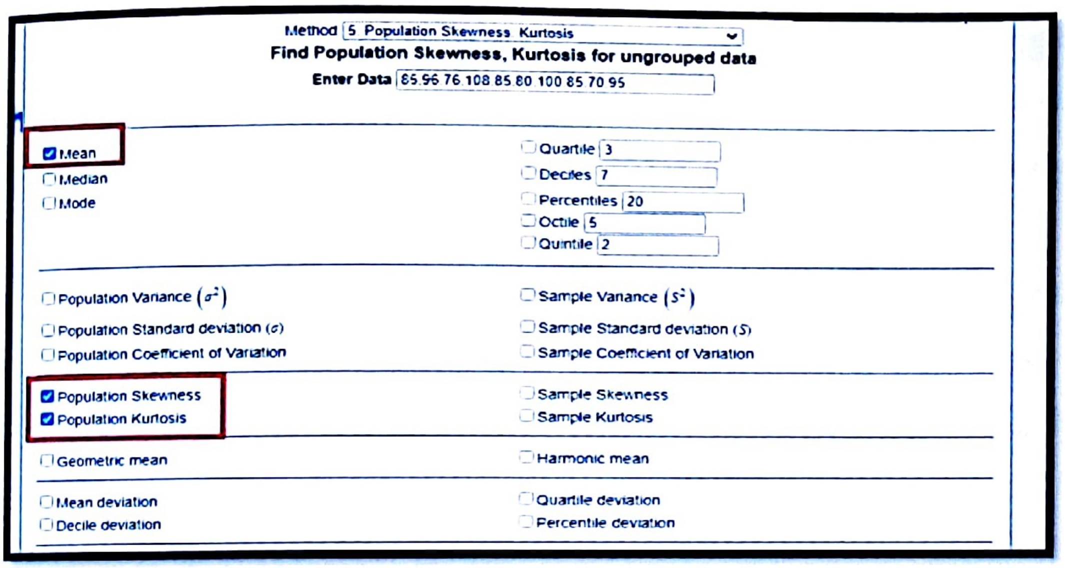
Step 3: पहले सर्च रिजल्ट (A to Z math) को खोलें।



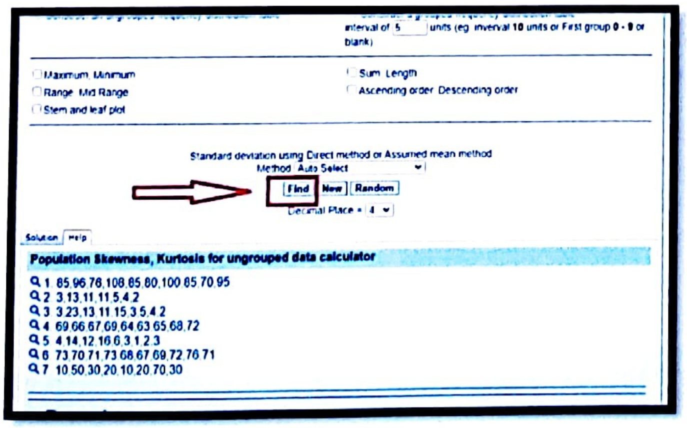
Step 4: Data enterकरें।



Step 5: Mean, Skewnessतथा Kurtosis option को select करें।



Step 6: Find पर click करें।



Step 7: आपका Result आपके सामने Open हो जायेगा।

$$\text{Population Skewness} = \frac{\sum (x-\bar{x})^3}{n \cdot S^3}$$

$$= \frac{2430}{10 \cdot (11.0272)^3}$$

$$= \frac{2430}{10 \cdot 1340.9123}$$

$$= 0.1812$$

$$\text{Population Kurtosis} = \frac{\sum (x-\bar{x})^4}{n \cdot S^4}$$

$$= \frac{317284}{10 \cdot (11.0272)^4}$$

$$= \frac{317284}{10 \cdot 14786.56}$$

$$= 2.1458$$

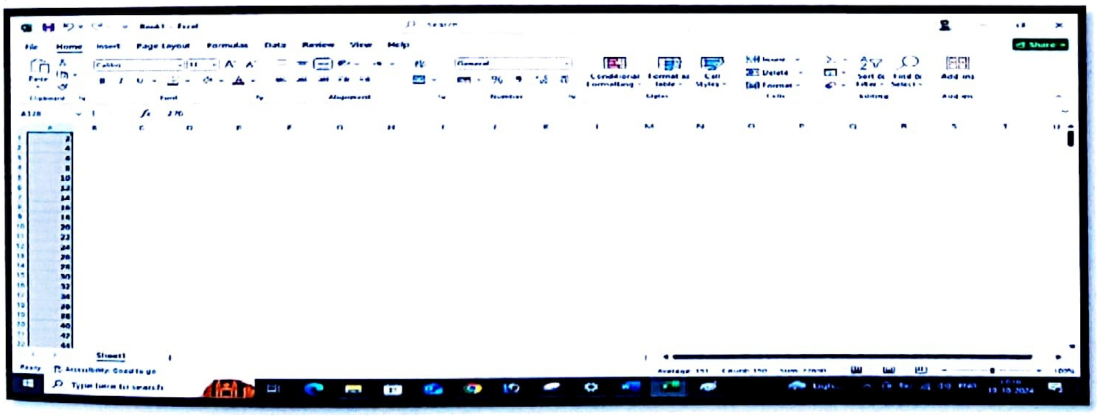
4.7.5 सामान्य सम्भाव्यता वक्र (Normal Probability Curve)

सामान्य सम्भाव्यता वक्र को सामान्य वक्र भी कहते हैं। इसका विकास 'त्रुटि के नियम' के आधार पर हुआ है। इस वक्र के जन्मदाता ए० डी०मोरे कहे जाते हैं। वे एक फ्रेंच गणितज्ञ थे और उन्होंने जुएं के खेल में संयोग की घटना की व्याख्या सामान्य सम्भाव्यता के आधार पर की।खगोलविद कार्ल फ्रेडरिक गॉस ने भी भौतिक विज्ञान में निरीक्षण सम्बन्धित त्रुटियों की व्याख्या सामान्यता के आधार पर की तथा त्रुटियों का सामान्य वक्र बनाया।

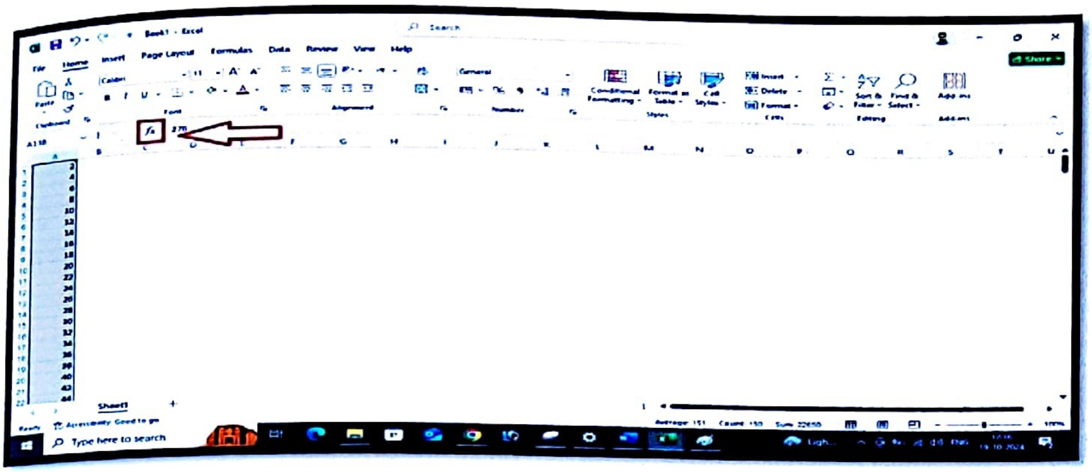
सामान्य वितरण की विशेषता यह होती है कि वितरण के मध्य में सर्वाधिक प्राप्तांक होते हैं तथा क्रमशः दोनों किनारों पर घटते जाते हैं। इसी सामान्य वितरण के आधार पर जो वक्र बनता है, उसे सामान्य वितरण वक्र या सामान्य सम्भाव्यता वक्र या सामान्य वक्र कहते हैं। यह वक्र सममित होता है तथा इसकी ऊँचाई मध्य में सर्वाधिक होती है। दोनों किनारों की ओर इसकी ऊँचाई घटती जाती है परन्तु आधार रेखा को स्पर्श नहीं करती है।

सामान्य सम्भाव्यता वक्र की गणना हेतु एम० एस० एक्सेल के चरण—

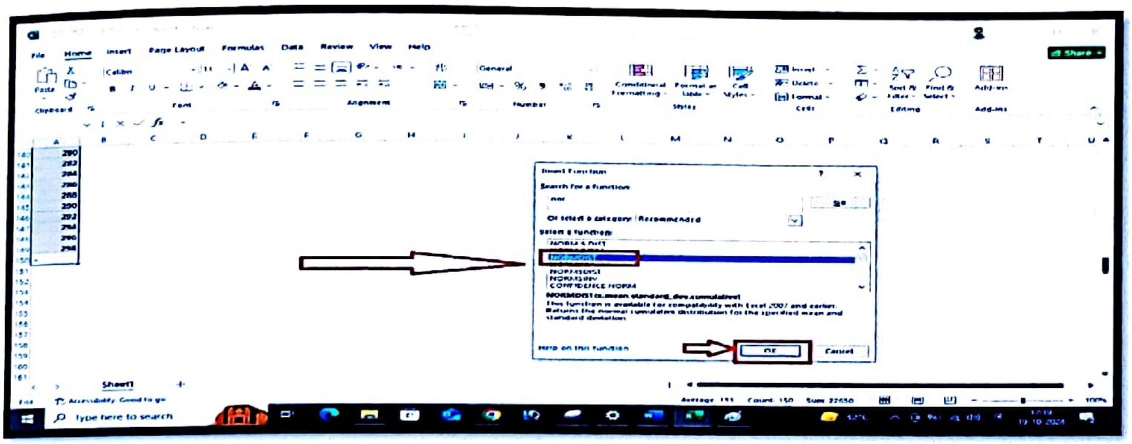
Step 1: Ms Excel में first cell lowest range से लेकर highest range तक data enter करें।



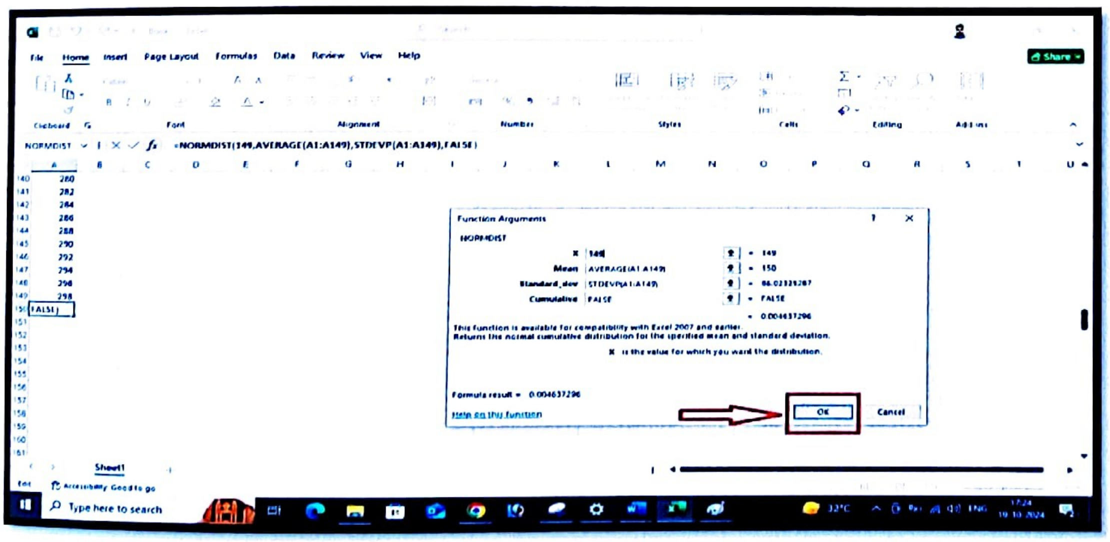
Step 2: Function option पर click करें।



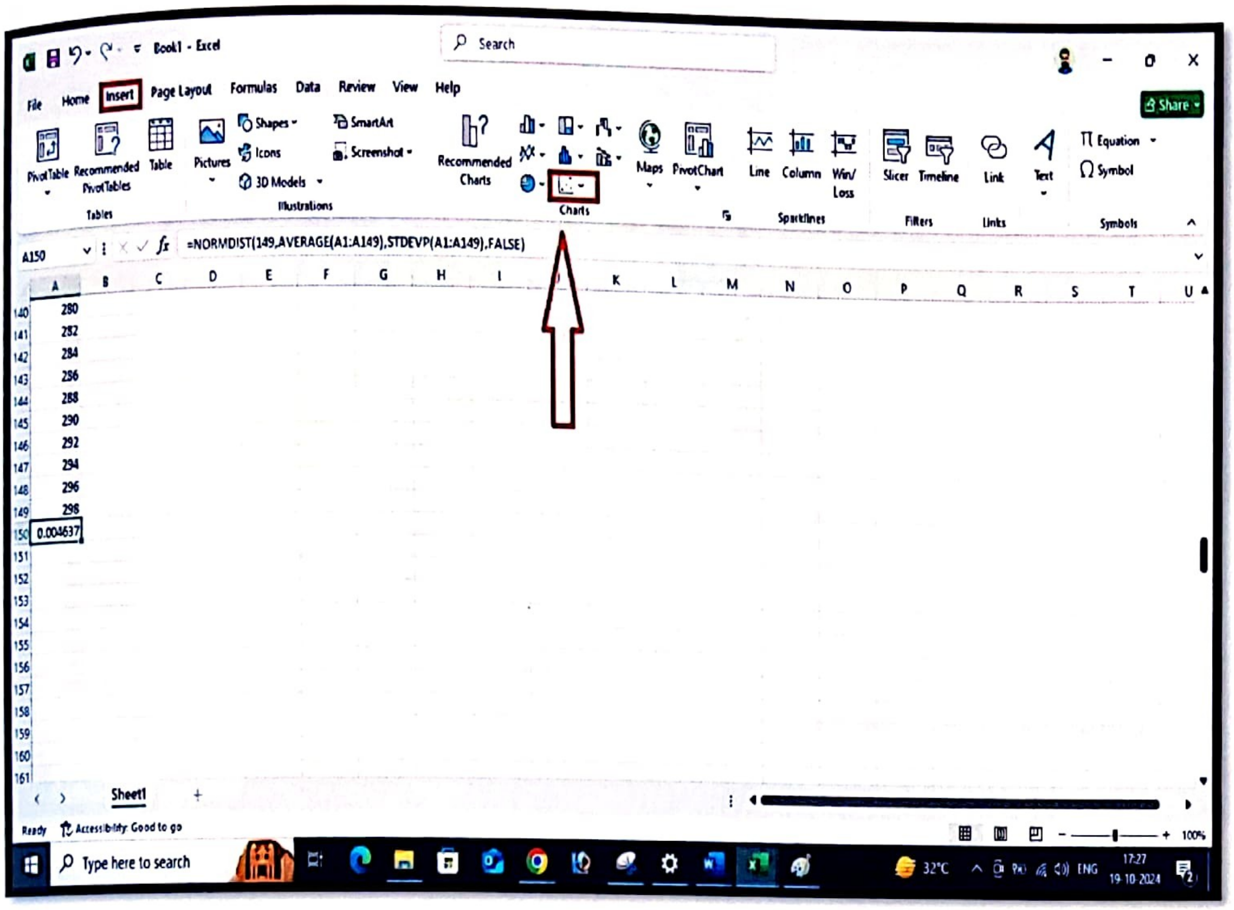
Step 3: NORMDISTको सेलेक्ट करें।



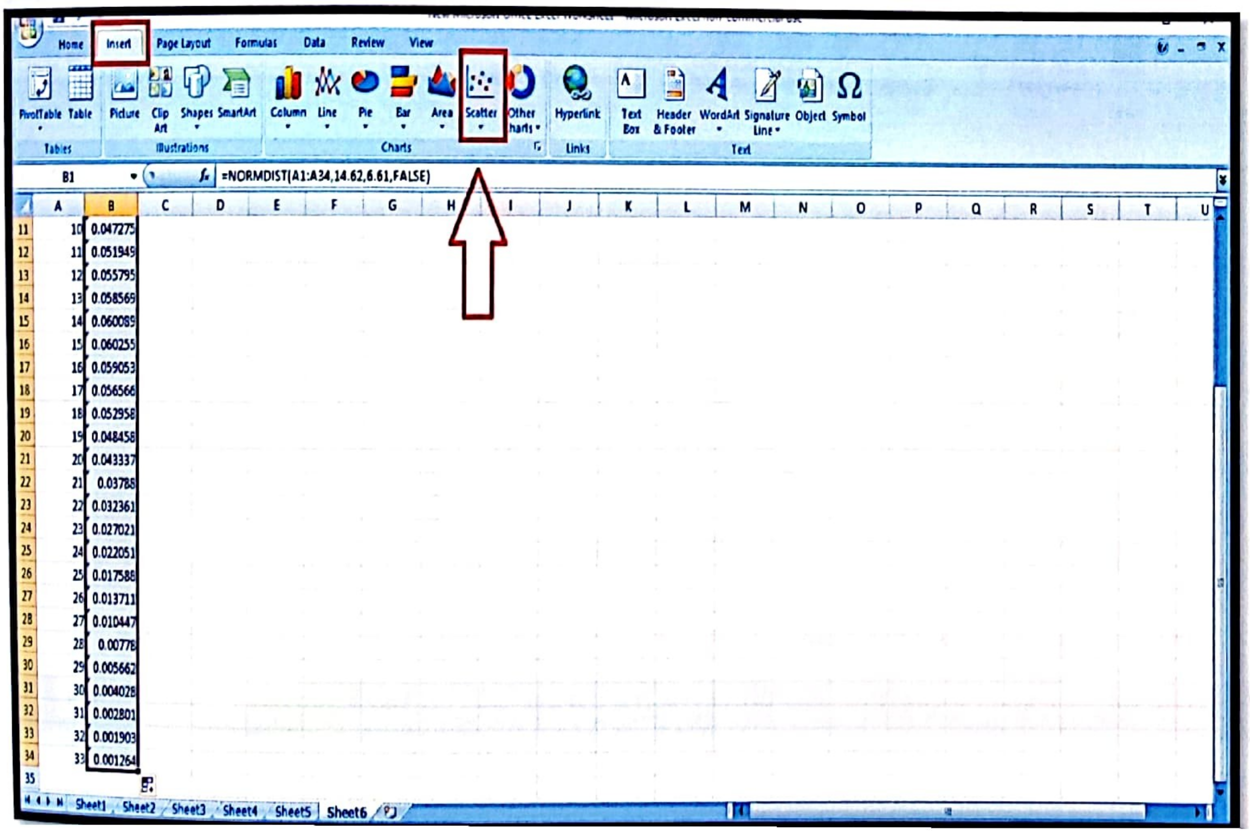
Step 4: Cell range, Mean, Standard deviation तथा Cumulative Frequency को भरें।



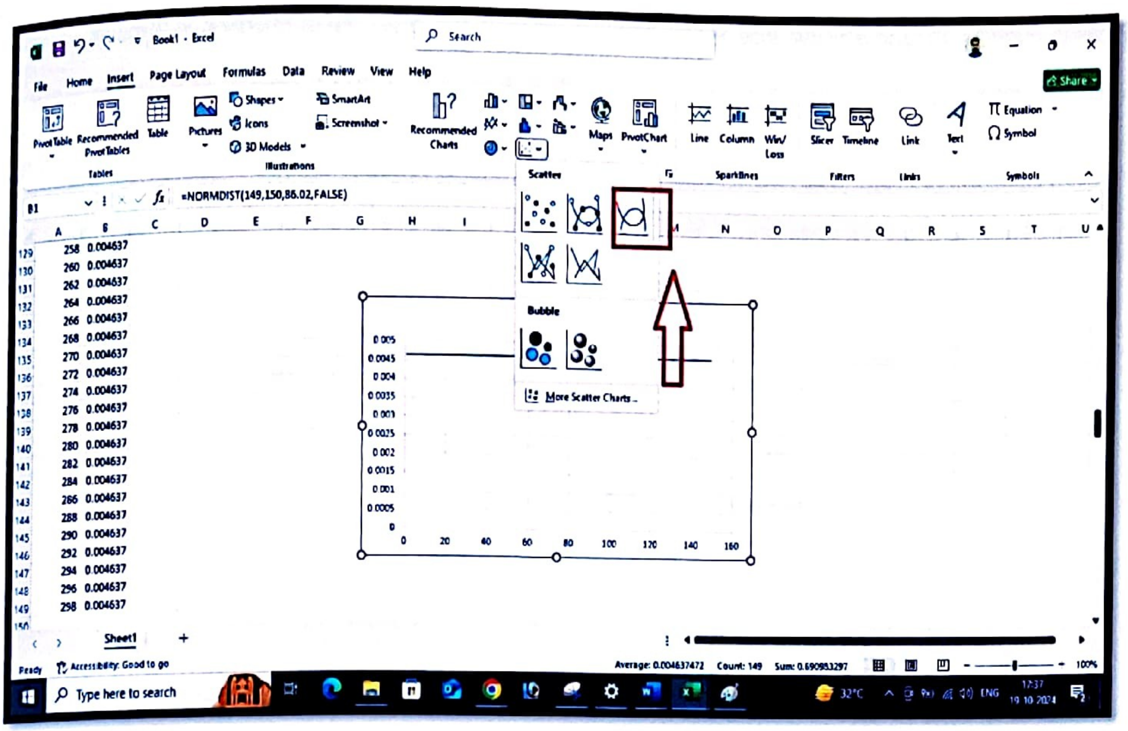
Step 5: चयनित cell तक Drag करें।



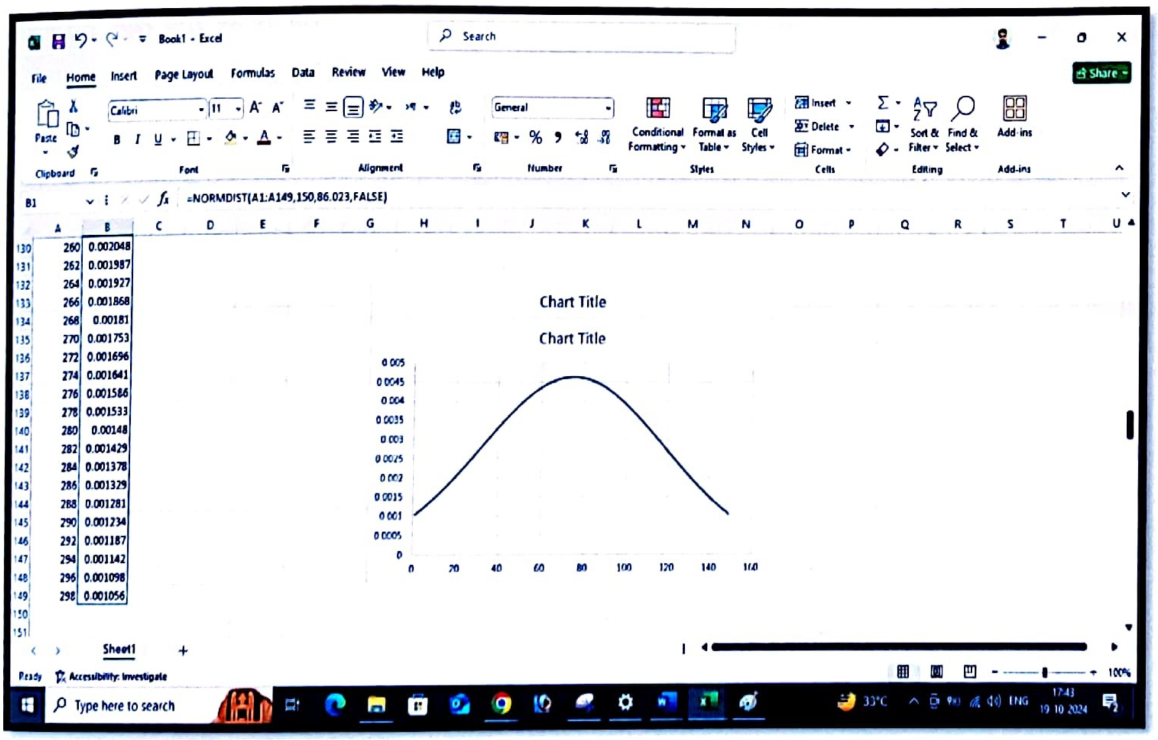
Step 6: Insert option पर जाकर Scatter को select करें।



Step 7: Scatter with smooth lines select करें।



Step 8: अब आपको NPC नजर आएगा।



4.7.6 क्रान्तिक अनुपात (Critical Ratio)

दो समूहों के मध्यमानों के मध्य अन्तर की सार्थकता की जाँच करने के लिए क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग तब किया जाता है जब समूह के प्राप्तांकों की संख्या 30 या 30 से अधिक होती है। क्रान्तिक अनुपात की गणना निम्नलिखित सूत्र के द्वारा की जाती है—

$$t = \frac{(X_1 - X_2)}{\sqrt{\frac{(S_1)^2}{n_1} + \frac{(S_2)^2}{n_2}}}$$

जहाँ–

X_1 = पहले समूह का मध्यमान

X_2 = दूसरे समूह का मध्यमान

n_1 = पहले समूह का आकार

n_2 = दूसरे समूह का आकार

S_1 = पहले समूह का प्रमाप विचलन

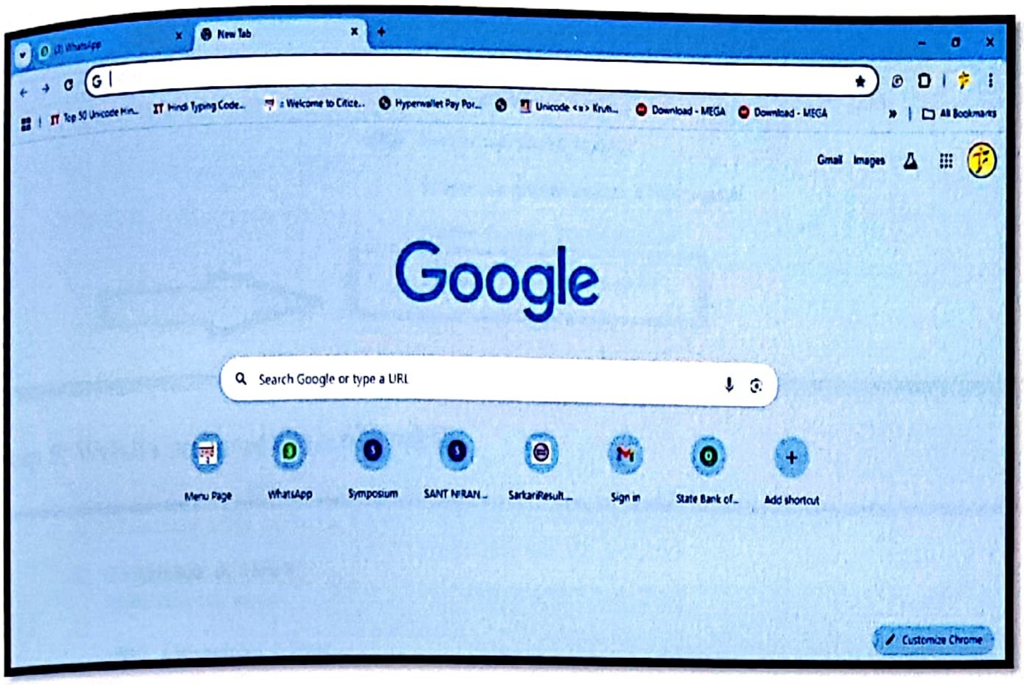
S_2 = दूसरे समूह का प्रमाप विचलन

स्वतन्त्रता की कोटि (df) को सूत्र– $df = (N_1+N_2) - 2$ द्वारा ज्ञात किया गया है। क्रान्तिक अनुपात गणना मान की सार्थकता टी- तालिका में .05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान से तुलना करके ज्ञात किया जाता है।

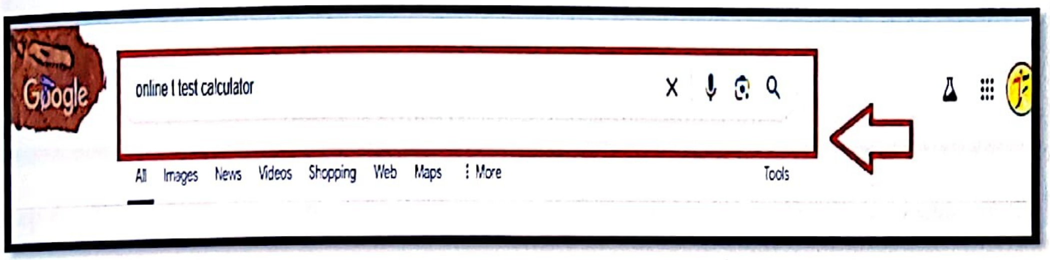
क्रान्तिक अनुपात की online गणना के चरण—

Online माध्यम से क्रान्तिक अनुपात की गणना निम्नलिखित चरणों में करते हैं—

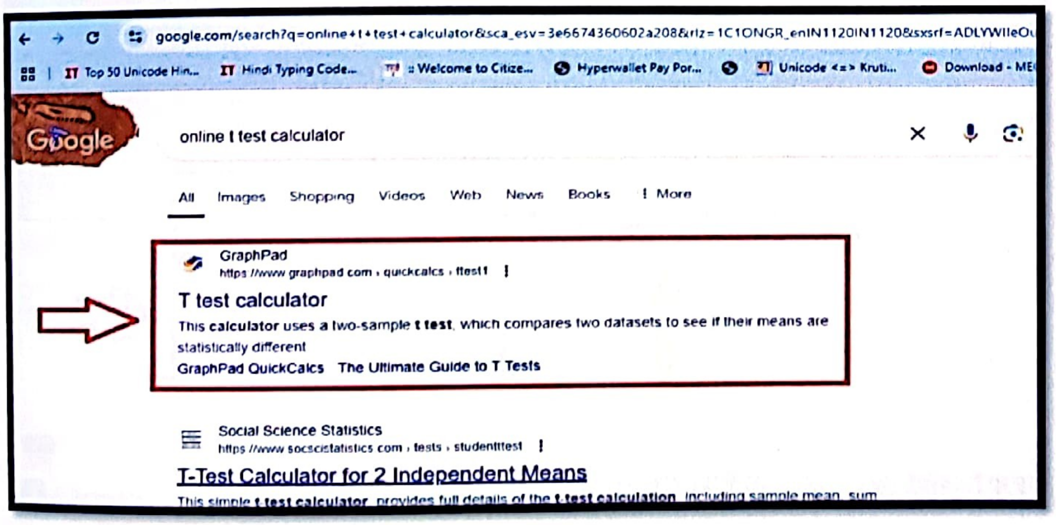
Step 1: सर्वप्रथम Google chrome browser को open करते हैं।



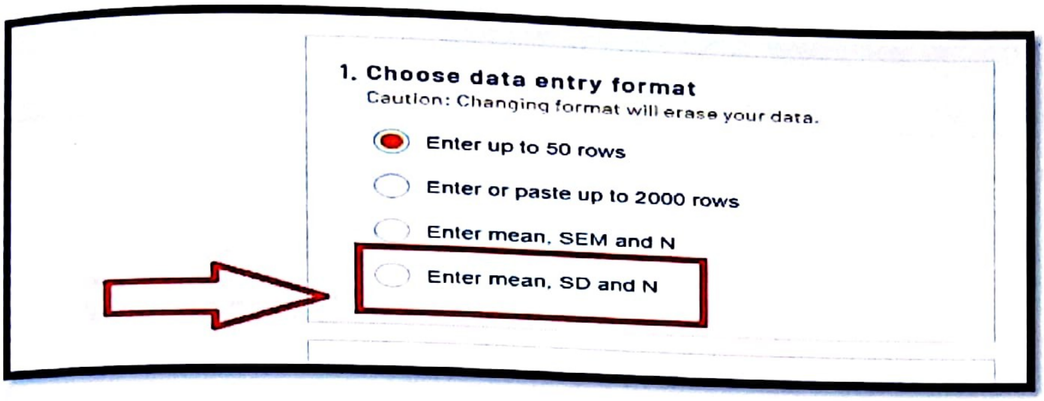
Step 2: Chrome में online t-test calculator search करते हैं।



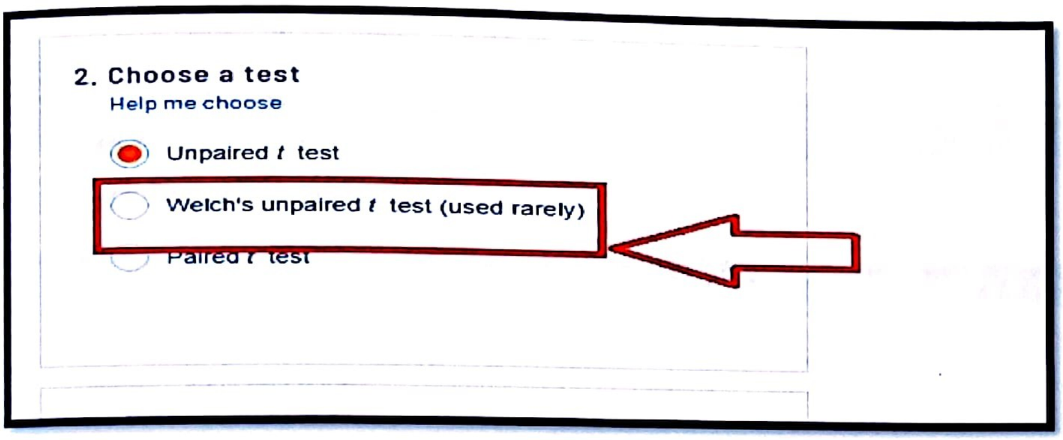
Step 3:



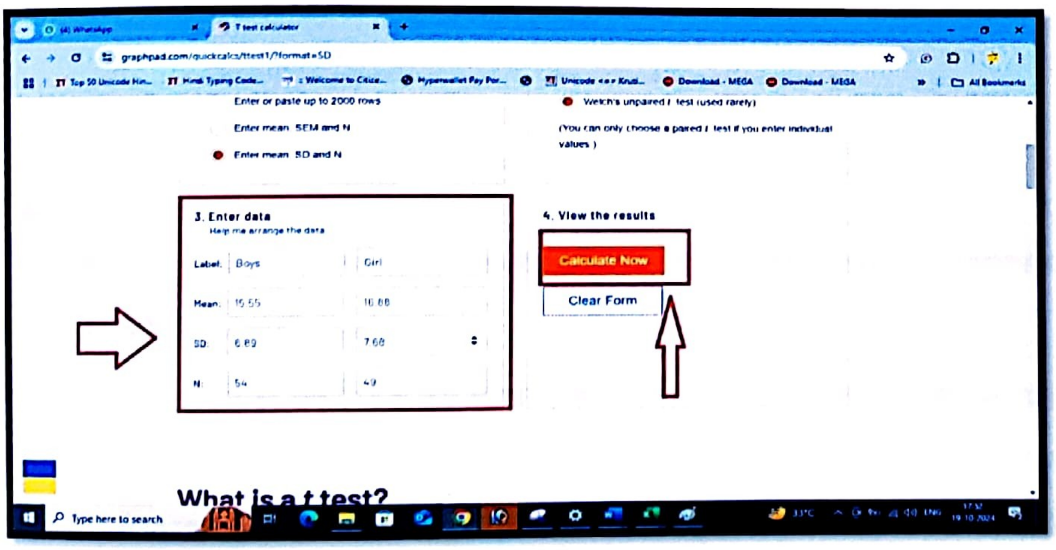
Step 4: Mean, S.D. तथा N Data fill करने वाले option पर क्लिक करते हैं।



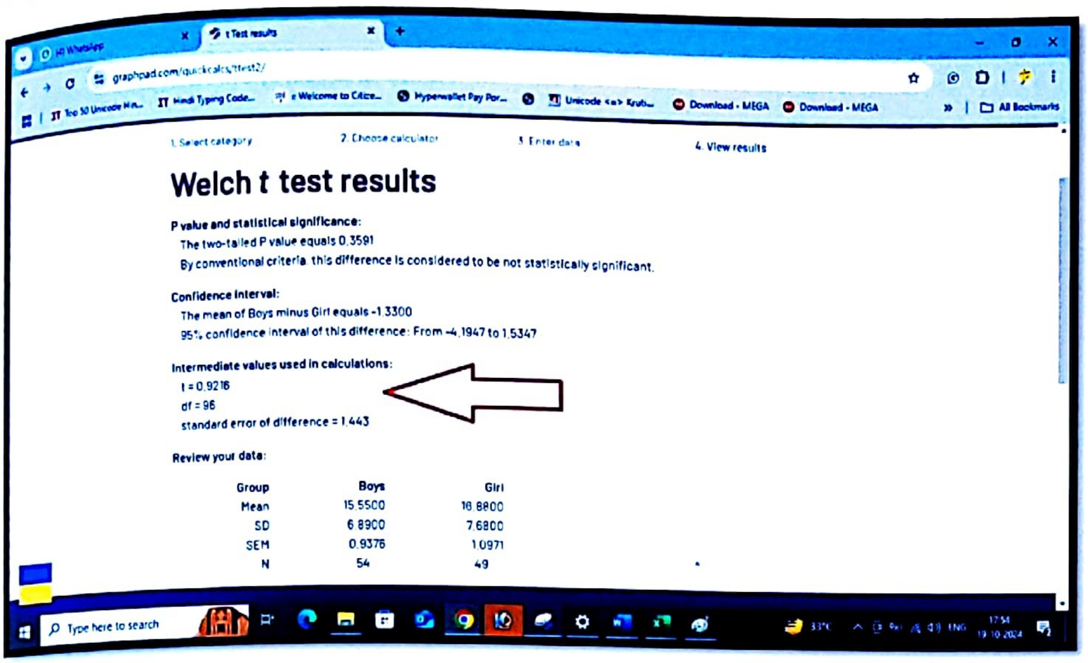
Step 5: Welch's unpaired t-test को चुनते हैं।



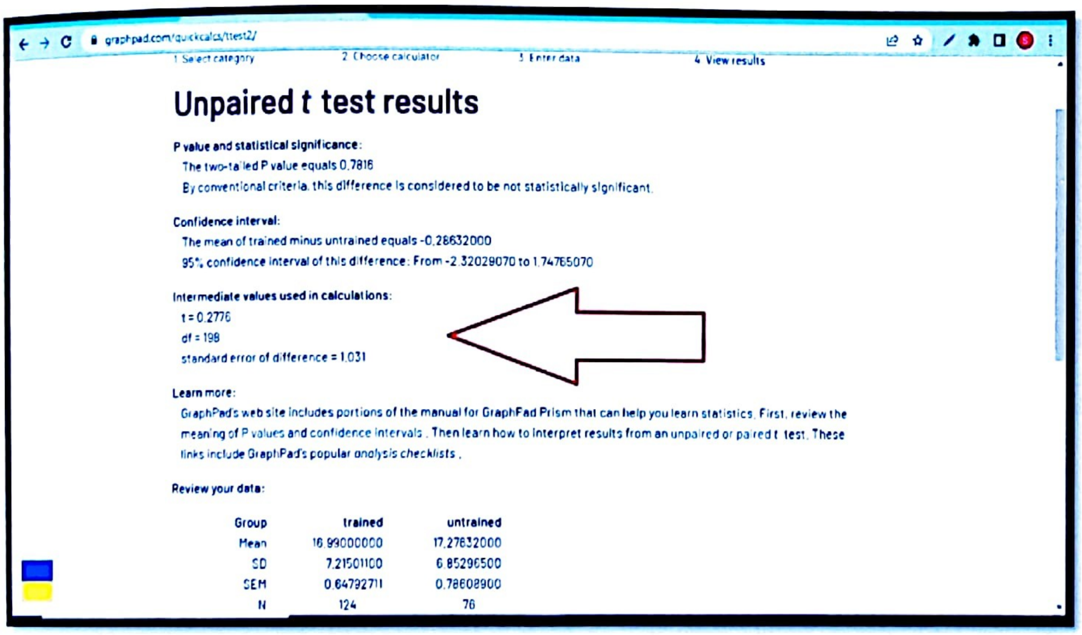
Step 6—आपके सामने data enter करने वाला option आयेगा। यहाँ पर प्रश्न में उपलब्ध data enter करते हैं। Group one में पहले समूह का data तथा Group two में दूसरे समूह का data enter करते हैं।



Step 7— परिणाम देखने के लिए calculate now पर क्लिक करते हैं।



आपका परिणाम निम्न प्रकार दिखायी देगा—



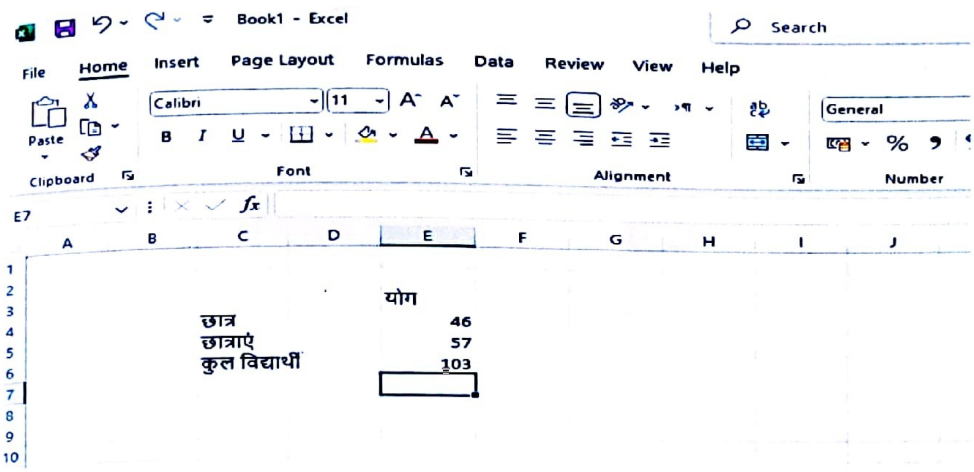
4.7.7 दण्ड आरेख (Bar Graph)

जब प्राप्त आँकड़ों को ग्राफ पेपर पर खड़े स्तम्भों के रूप में प्रदर्शित किया जाता है तो उसे दण्ड आरेख या स्तम्भ आरेख कहते हैं। इसका प्रयोग सामान्यतः स्कूलों में छात्रों और शिक्षकों की संख्या और साक्षर-निरक्षरों की संख्या आदि स्पष्ट करने के लिए किया जाता है। दण्ड आरेख के द्वारा दो या दो से अधिक समूहों की मध्यमान योग्यता को भी स्पष्ट किया जा

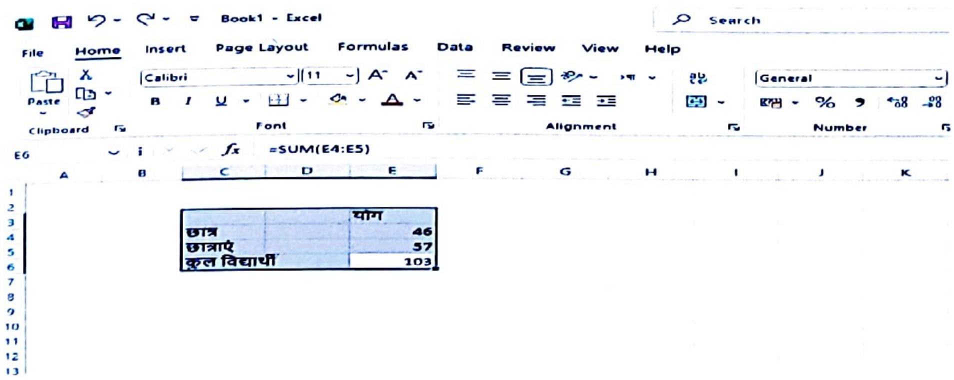
सकता है। दण्ड आरेख लम्बवत या क्षैतिज किसी भी दिशा में बनाए जा सकते हैं परन्तु सामान्यतः इन्हें लम्बवत ही बनाया जाता है।

दंड आरेख की गणना हेतु एम एस एक्सेल के चरण:

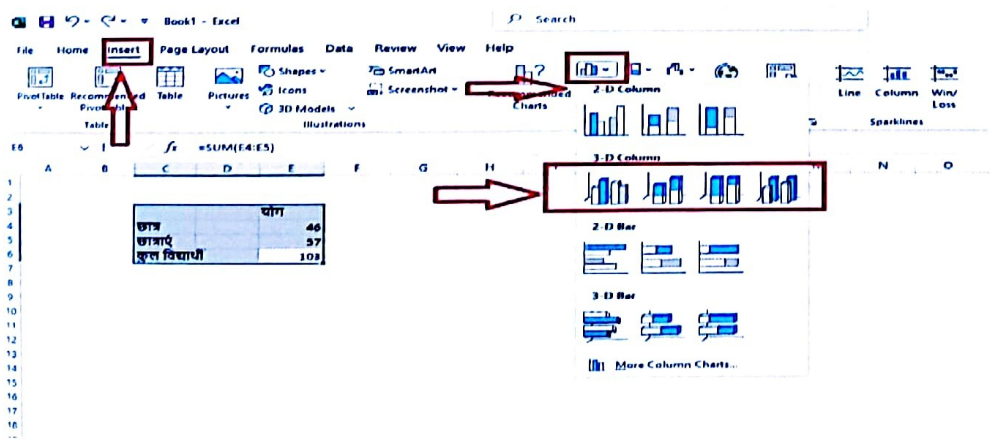
Step 1:एम एस एक्सेल में सेल में डाटा को भरें।



Step 2:चयनित सेल तक ड्रैग करें।

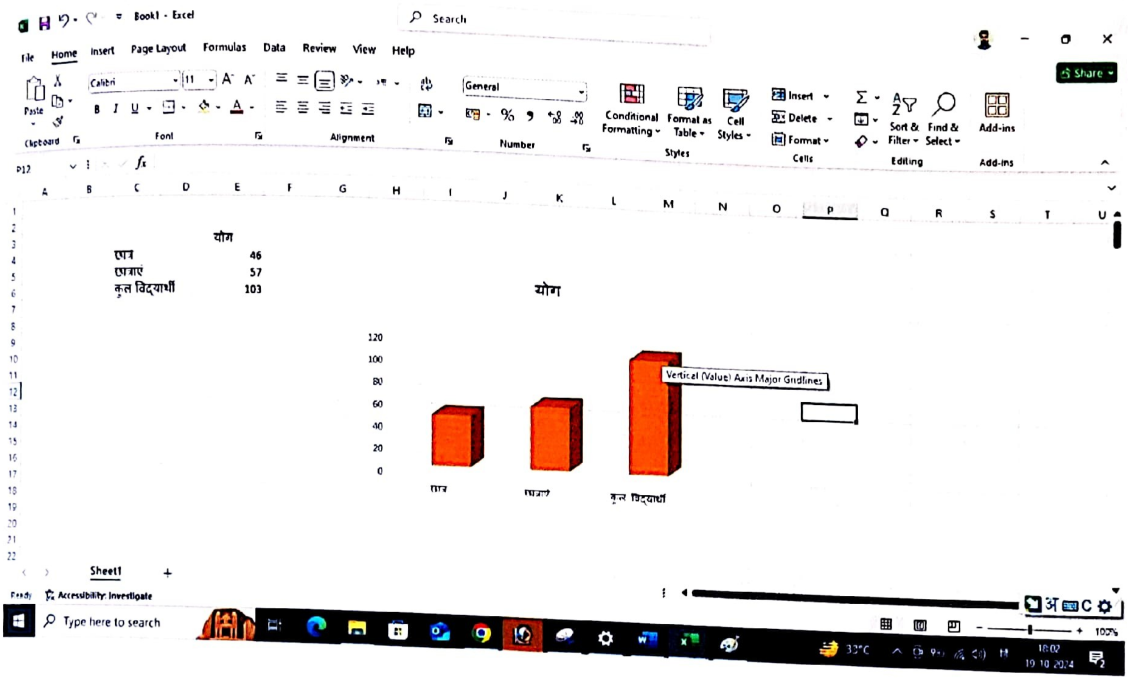


Step 3: Insert Option पर जाकर column को select करें।



Step 4:अब किसी भी design के option को चुनें।

Step 5:अब आपको दंड आरेख नजर आएगा।



अध्याय पंचम

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन

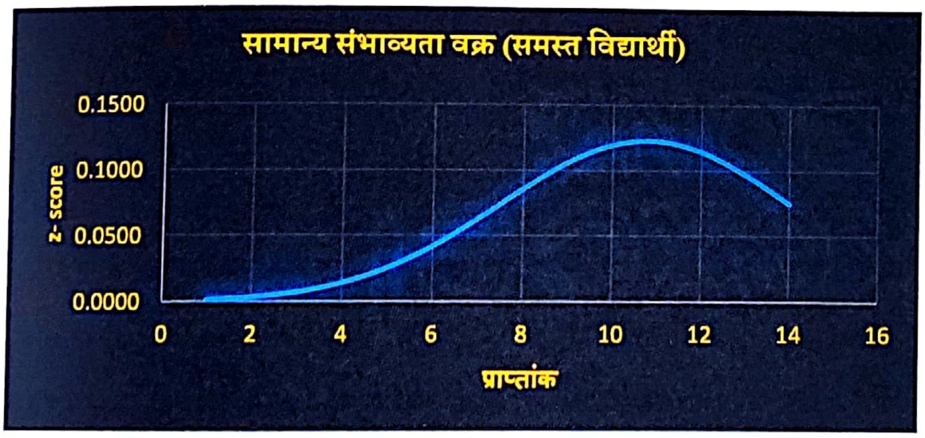
प्रस्तुत अध्याय का उद्देश्य वर्णित शोध-विधि द्वारा एकत्रित प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण तथा विवेचन करना है। प्रस्तुत अध्याय में सांख्यिकी गणना से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण किया गया है।

5.1 गढ़कुंडार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति छात्र-छात्राओं की जागरूकता का अध्ययन करना।

तालिका संख्या 5.1

गढ़कुंडार की ऐतिहासिक विरासत के प्रति छात्र छात्राओं की जागरूकता विश्लेषण तालिका

लिंग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	माध्यिका (Md)	प्रामाणिक विचलन (S.D.)	विषमता (Sk)	कुकुदता (Ku)
छात्र	58	10.43	11	3.479	-0.7194	2.5399
छात्राएं	45	11.22	13	2.866	-0.8123	2.297
कुल विद्यार्थी	103	10.77	12	3.249	-0.8064	2.6473

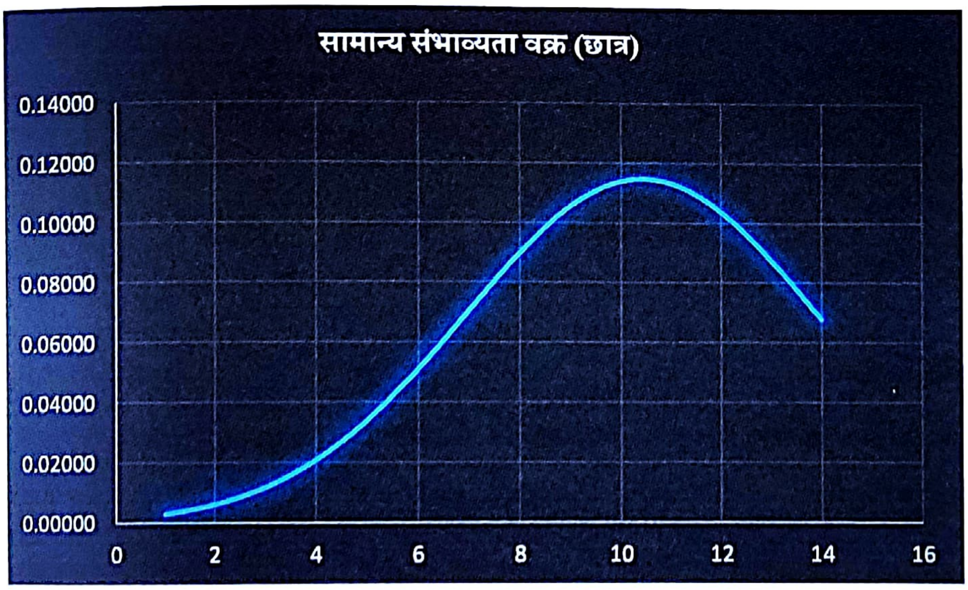


चित्र संख्या 5.1.1

कुल विद्यार्थियों की जागरूकता से संबंधित सामान्य संभावना वक्र (NPC)

विश्लेषण—छात्र-छात्राओं की जागरूकता का अध्ययन करने के सम्बन्ध में शोधकर्ता ने जागरूकता प्रश्नावली पर प्राप्त अंको के वितरण की प्रकृति का विश्लेषण किया। तालिका संख्या 5.1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल विद्यार्थियों के लिए वैषम्यता का मान -0.8064 है, जब वैषम्यता का मान -0.5 तथा 0.5 के मध्य होता है तब वितरण सममित/सन्तुलित माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में कुकुदता 2.6473 पाई गयी, जब कुकुदता का स्तर -3 से 3 के मध्य होता है तब वितरण सामान्य माना जाता है।

विवेचना—न्यादर्श में कुल विद्यार्थियों की संख्या पर्याप्त न होने के कारण वैषम्यता का स्तर सामान्य नहीं है जबकि कुकुदता का स्तर सामान्य है/सामान्य वितरण के अनुरूप है, जो चित्र संख्या 5.1.1 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर कुछ सीमा तक लागू किया जा सकता है।

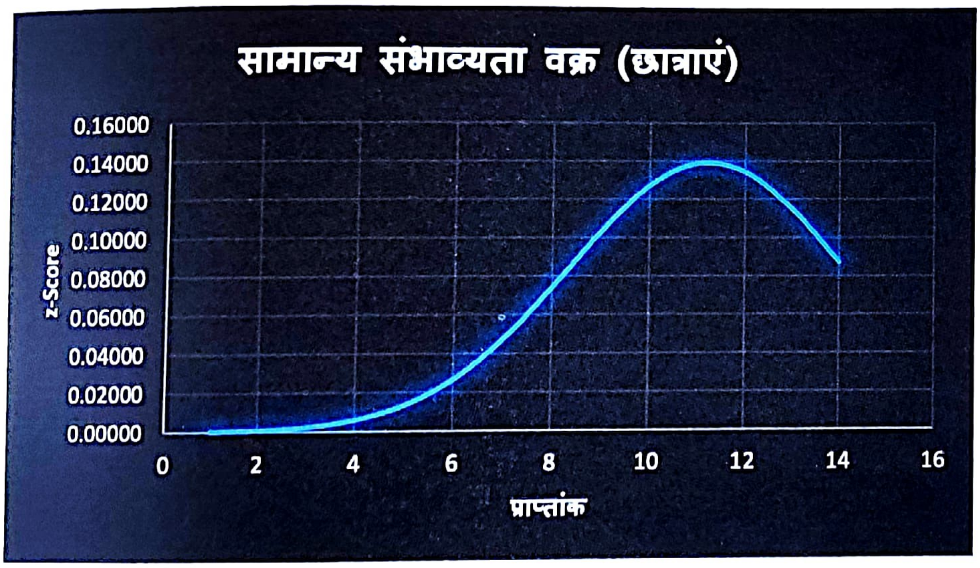


चित्र संख्या 5.1.2

छात्रों की जागरूकता से संबंधित सामान्य संभावना वक्र (NPC)

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि छात्रों का मध्यमान 10.43 तथा प्रमाप विचलन 3.479 है। छात्रों के लिए वैषम्यता का मान -0.7194 है, जब वैषम्यता का मान -0.5 तथा 0.5 के मध्य होता है तब वितरण सममित/सन्तुलित माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में कुकुदता 2.5399 पाई गयी, जब कुकुदता का स्तर -3 से 3 के मध्य होता है तब वितरण सामान्य माना जाता है।

विवेचना— न्यादर्श में छात्रों की संख्या पर्याप्त न होने के कारण वैषम्यता का स्तर सामान्य नहीं है जबकि कुकुदता का स्तर सामान्य है/सामान्य वितरण के अनुरूप है, जो चित्र संख्या 5.1.2 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर कुछ सीमा तक लागू किया जा सकता है।



चित्र संख्या 5.1.3

छात्राओं की जागरूकता से संबंधित सामान्य संभावना वक्र (NPC)

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि छात्राओं का मध्यमान 11.22 तथा प्रमाप विचलन 2.866 है। छात्राओं के लिए वैषम्यता का मान -0.8123 है, जब वैषम्यता का मान -0.5 तथा 0.5 के

मध्य होता है तब वितरण सममित/सन्तुलित माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में कुकुदता 2.297 पाई गयी, जब कुकुदता का स्तर -3 से 3 के मध्य होता है तब वितरण सामान्य माना जाता है।

विवेचना— न्यादर्श में छात्राओं की संख्या पर्याप्त न होने के कारण वैषम्यता का स्तर सामान्य नहीं है जबकि कुकुदता का स्तर सामान्य है/सामान्य वितरण के अनुरूप है, जो चित्र संख्या 5.1.3 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर कुछ सीमा तक लागू किया जा सकता है।

5.2 गढ़कुंडार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण

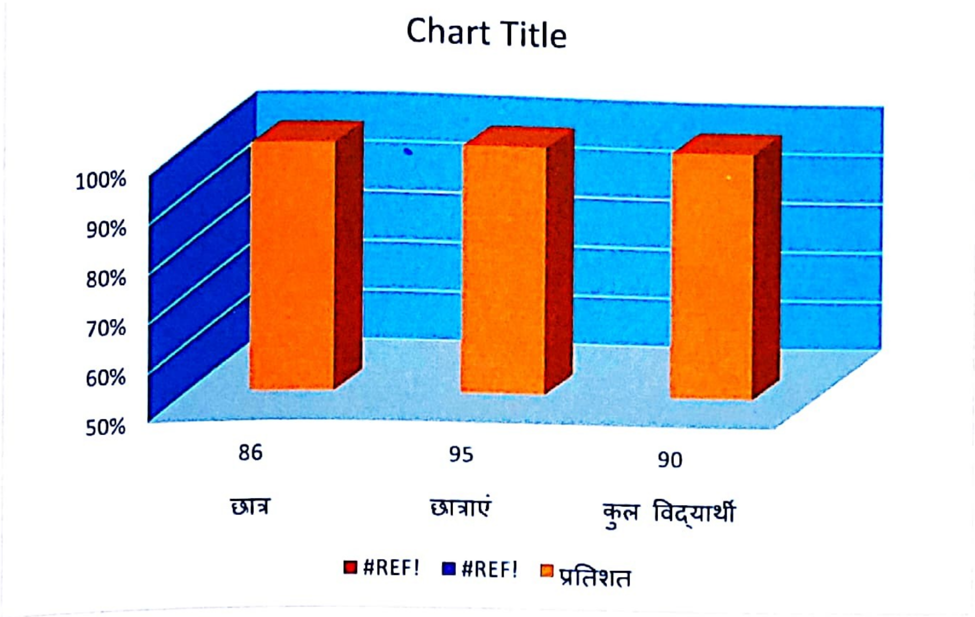
प्रश्न 1. गढ़कुंडार दुर्ग किस राज्य में स्थित है?

सही उत्तर- मध्यप्रदेश

तालिका संख्या 5.2.1

प्रश्न 1 के सम्बंध में विद्यार्थियों की जागरुकता

		सही उत्तर	
लिंग	**N**	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
छात्र	58	50	86
छात्राएं	45	43	95
कुल विद्यार्थी	103	93	90



चित्र संख्या - 5.2.1

प्रश्न संख्या 1 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

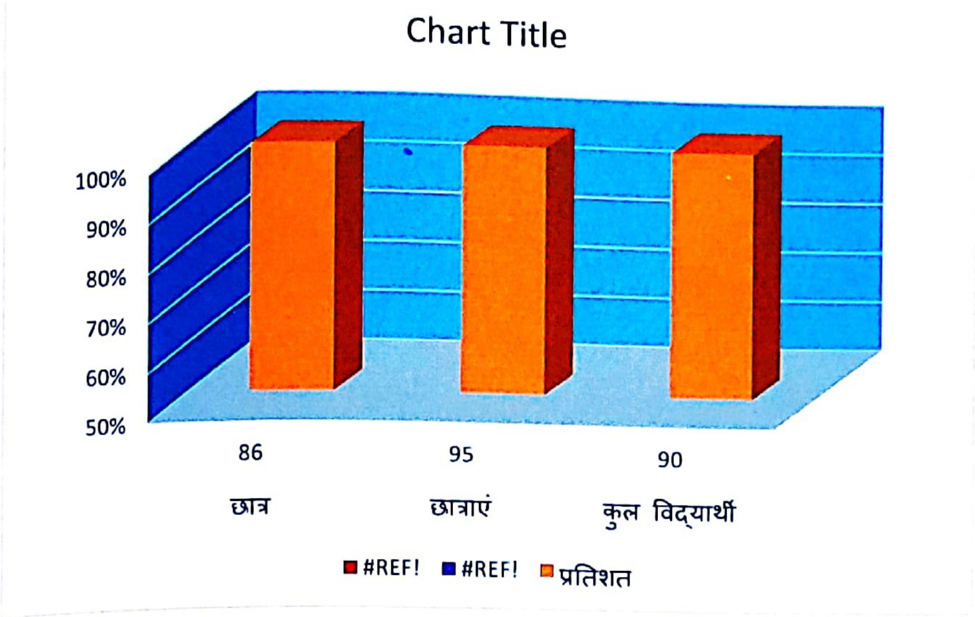
विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.2.1 एवं चित्र संख्या 5.2.1 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि " गढ़कुंडार दुर्ग मध्यप्रदेश राज्य में स्थित है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 86 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 95 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 90 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है, कि अधिकांश विद्यार्थी " गढ़कुंडार दुर्ग मध्यप्रदेश राज्य में स्थित" होने से परिचित हैं।

प्रश्न 2. निवाड़ी जिले में स्थित ऐतिहासिक दुर्ग है –

सही उत्तर - गढ़कुंडार दुर्ग

तालिका संख्या 5.2.2



चित्र संख्या - 5.2.1

प्रश्न संख्या 1 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.2.1 एवं चित्र संख्या 5.2.1 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि " गढ़कुंडार दुर्ग मध्यप्रदेश राज्य में स्थित है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 86 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 95 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 90 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है, कि अधिकांश विद्यार्थी " गढ़कुंडार दुर्ग मध्यप्रदेश राज्य में स्थित" होने से परिचित हैं।

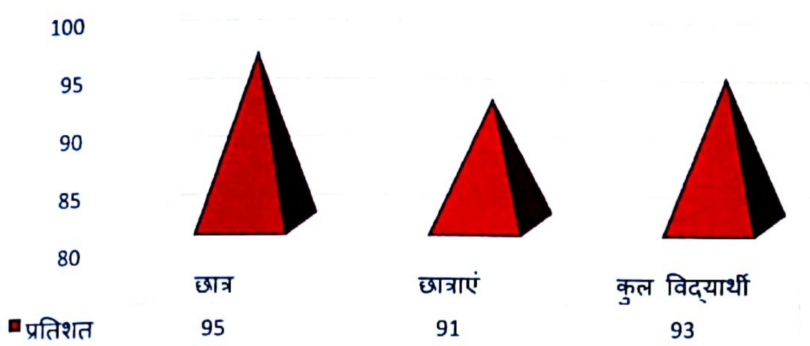
प्रश्न 2. निवाड़ी जिले में स्थित ऐतिहासिक दुर्ग है –

सही उत्तर - गढ़कुंडार दुर्ग

तालिका संख्या 5.2.2

प्रश्न 2 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

		सही उत्तर	
लिंग	N	आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	58	55	95
छात्राएं	45	41	91
कुल विद्यार्थी	103	96	93



चित्र संख्या – 5.2.2

प्रश्न संख्या 2 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:-उपर्युक्त तालिका संख्या 5.2.2 एवं चित्र संख्या 5.2.2 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि " निवाड़ी जिले में स्थित गढ़कुंडार ऐतिहासिक दुर्ग है।" के प्रति सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 95 पाया गया, वहीं छात्राओं का प्रतिशत 91 पाया गया तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 93 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश विद्यार्थी " निवाड़ी जिले में स्थित गढ़कुंडार ऐतिहासिक दुर्ग होने" से परिचित हैं।

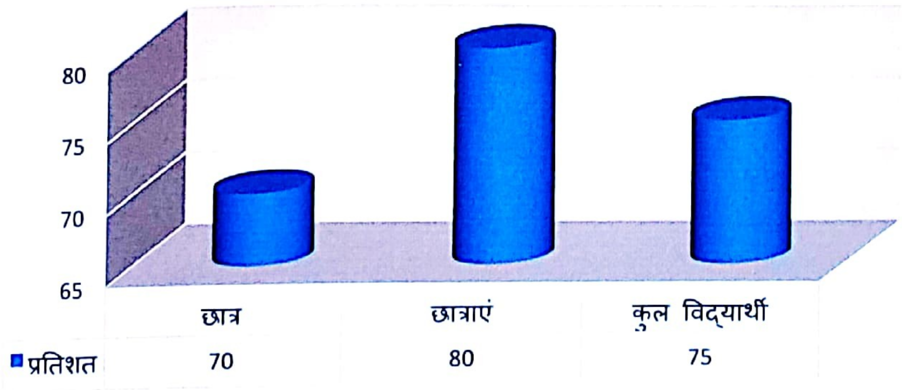
प्रश्न 3. गढ़कुंडार दुर्ग का निर्माण किसने करवाया?

सही उत्तर - चंदेल

तालिका संख्या 5.2.3

प्रश्न 3 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

		सही उत्तर	
लिंग	**N**	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
छात्र	**58**	**41**	**70**
छात्राएं	**45**	**36**	**80**
कुल विद्यार्थी	**103**	**77**	**75**



चित्र संख्या - 5.2.3

प्रश्न संख्या 3 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:-उपर्युक्त तालिका संख्या 5.2.3 एवं चित्र संख्या 5.2.3 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि " गढ़कुंडार दुर्ग का निर्माण चंदेल ने करवाया ।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 70 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 80 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 75 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि आधे से भी अधिक विद्यार्थी " गढ़कुंडार दुर्ग का निर्माण चंदेल ने करवाया" होने से परिचित हैं। आधे से कुछ अधिक छात्र इस तथ्य से परिचित हैं, जबकि तीन चौथाई छात्राएँ इससे परिचित हैं।

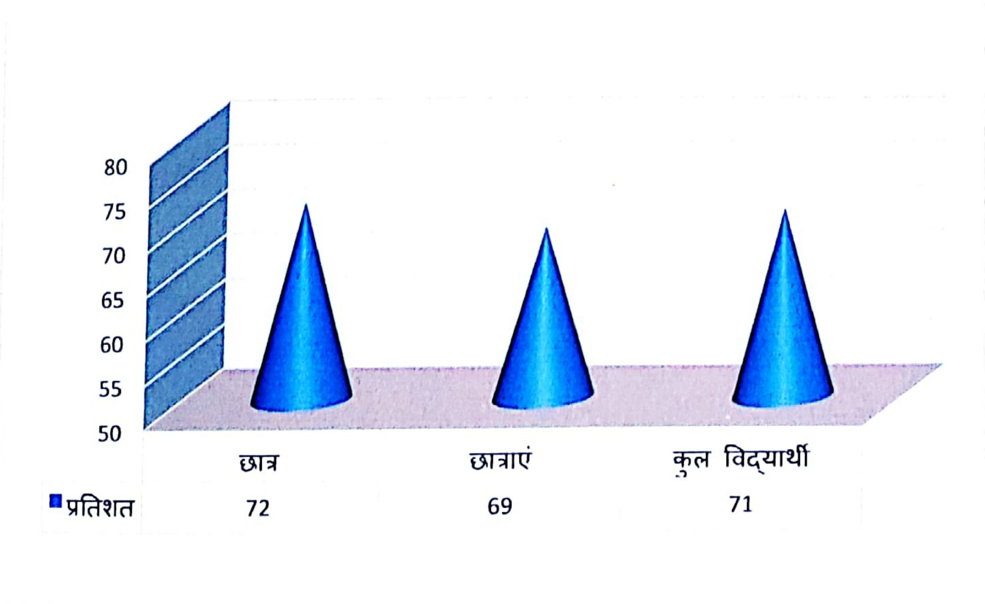
प्रश्न 4. गढ़कुंडार दुर्ग किन प्रस्तरों से निर्मित है?

सही उत्तर - बलुआ पत्थर

तालिका संख्या 5.2.4

प्रश्न 4 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	58	42	72
छात्राएं	45	31	69
कुल विद्यार्थी	103	73	71



चित्र संख्या - 5.24

प्रश्न संख्या 4 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषणः- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.2.4 एवं चित्र संख्या 5.2.4 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि " गढ़कुंडार दुर्ग बलुआ पत्थर से निर्मित है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 72 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 69 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 71 पाया गया।

विवेचनाः- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि लगभग तीन चौथाई विद्यार्थी " गढ़कुंडार दुर्ग बलुआ पत्थर से निर्मित" होने से परिचित हैं।

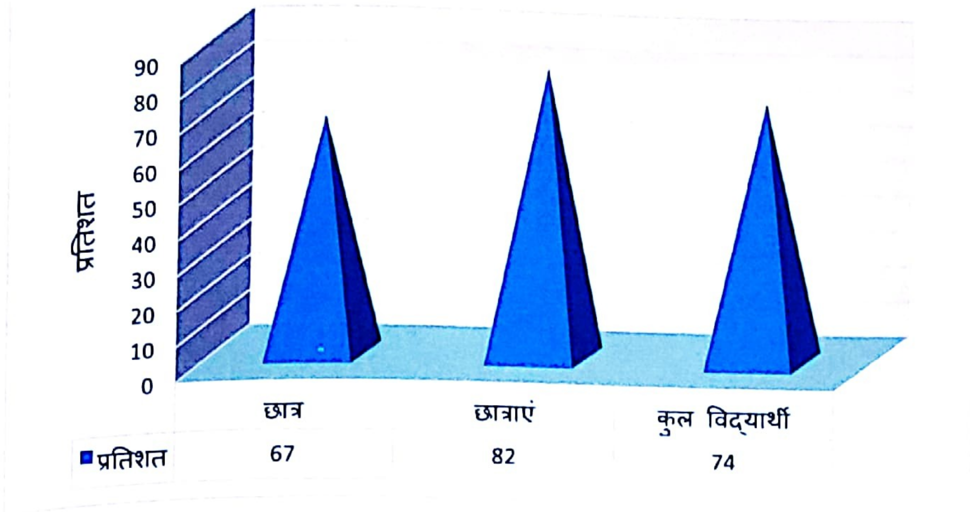
प्रश्न 5. गढ़कुंडार दुर्ग कितने खंड में बना है?

सही उत्तर–5 खंड

तालिका संख्या 5.2.5

प्रश्न 5 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	58	39	67
छात्राएं	45	37	82
कुल विद्यार्थी	103	76	74



चित्र संख्या – 5.3.5

प्रश्न संख्या 5 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.2.5 एवं चित्र संख्या 5.2.5 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि " गढ़कुंडार दुर्ग 5 खंड में बना है" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 67 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 82 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 74 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि लगभग तीन चौथाई विद्यार्थी "गढ़कुंडार दुर्ग 5 खंड में बने होने से" परिचित हैं। आधे से अधिक छात्र इस तथ्य से छात्रों की तुलना में परिचित हैं, छात्राएं इस तथ्य से अथिक परिचित हैं। ऐसा इसलिए हो सकता है कि छात्राओं को हर चीज को बारीक नजर से देखने का स्वभाव होता है।

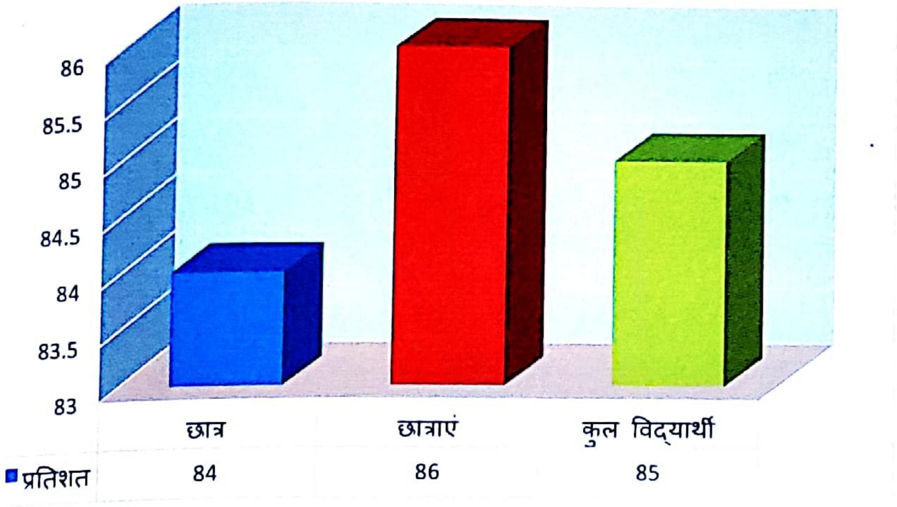
प्रश्न 6. किस शासक ने गढ़कुंडार को अपनी राजधानी बनाई?

सही उत्तर– खेत सिंह खंगार

तालिका संख्या 5.2.6

प्रश्न 6 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	58	49	84
छात्राएं	45	39	86
कुल विद्यार्थी	103	88	85



चित्र संख्या - 5.3.6

प्रश्न संख्या 6 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.2.6 एवं चित्र संख्या 5.2.6 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि " **खेत सिंह खंगार ने गढ़कुंडार को अपनी राजधानी बनाई।**" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 84 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 86 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 85 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश विद्यार्थी " खेत सिंह खंगार ने गढ़कुंडार को अपनी राजधानी बनाई जाने से परिचित हैं।"

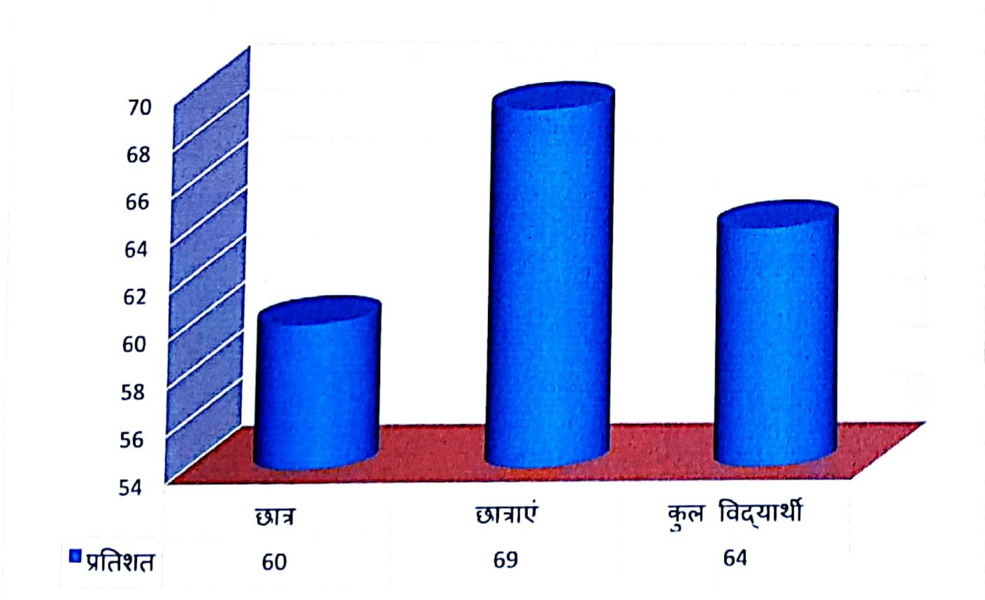
प्रश्न 7. गिद्ध वाहिनी देवी किसका स्वरूप है?

सही उत्तर– सीता

तालिका संख्या 5.2.7

प्रश्न 7 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	58	35	60
छात्राएं	45	31	69
कुल विद्यार्थी	103	66	64



चित्र संख्या – 5.2.7

प्रश्न संख्या 7 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:-उपर्युक्त तालिका संख्या 5.2.7 एवं चित्र संख्या 5.2.7 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि " गिद्ध वाहिनी देवी सीता का स्वरूप" होने से परिचित है। ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 60 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 69 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 64 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि आधे से कुछ अधिक विद्यार्थी "गिद्ध वाहिनी देवी सीता का स्वरूप है" से परिचित हैं। लगभग दो तिहाई छात्राएं इस तथ्य से परिचित हैं, जबकि छात्र अपेक्षाकृत इस तथ्य से कम परिचित हैं, ऐसा इसलिए हो सकता है कि छात्राओं की धार्मिक प्रवृत्ति अधिक होती है।

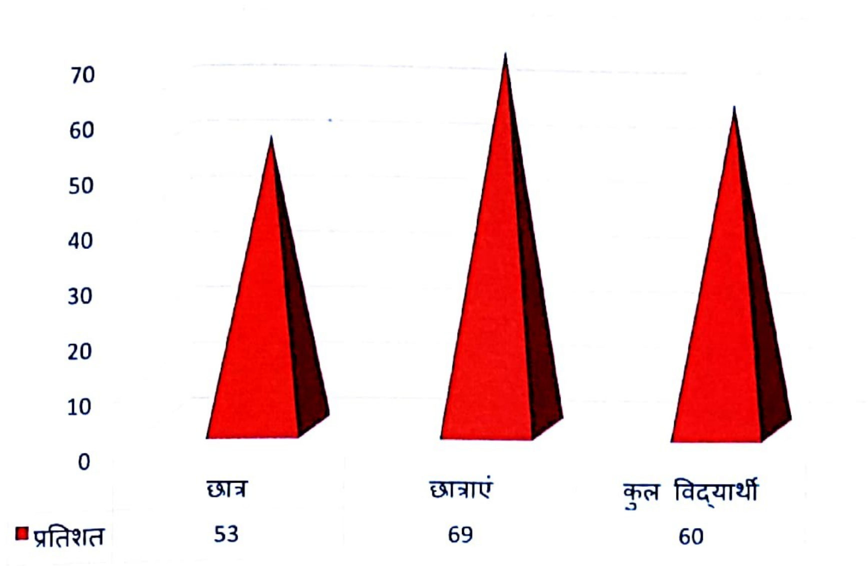
प्रश्न 8. गढ़कुंडार दुर्ग के पास स्थित तालाब है-

सही उत्तर– मोती सागर

तालिका संख्या 5.2.8

प्रश्न 8 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	सही उत्तर		
	N	आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	58	31	53
छात्राएं	45	31	69
कुल विद्यार्थी	103	62	60



चित्र संख्या – 5.2.8

प्रश्न संख्या 8 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.2.8 एवं चित्र संख्या 5.2.8 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि " गढ़कुंडार दुर्ग के पास स्थित मोती सागर तालाब है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 53 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 69 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 60 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि आधे से अधिक विद्यार्थी "गढ़कुंडार दुर्ग के पास स्थित मोती सागर तालाब" होने से परिचित हैं। छात्रों कि अपेक्षा छात्राएं इस तथ्य से अधिक परिचित हैं।

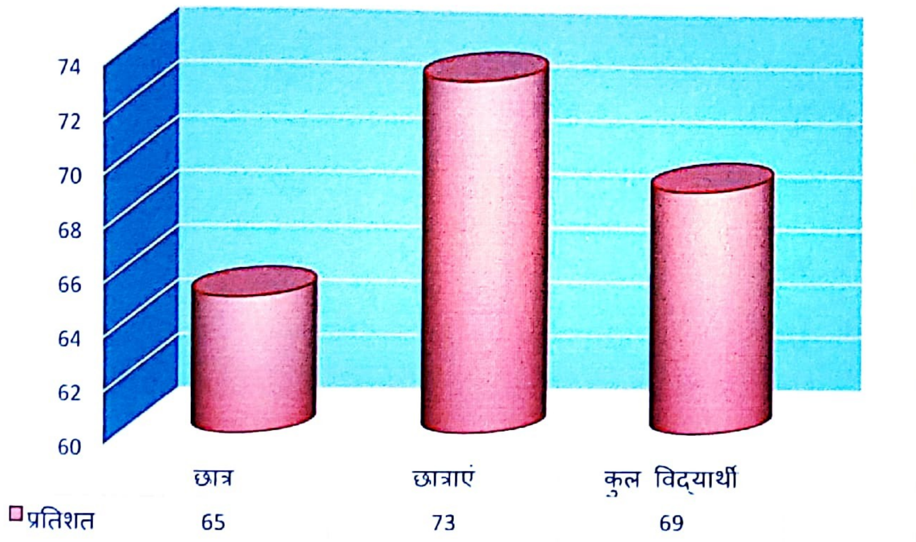
प्रश्न 9. गढ़कुंडार दुर्ग के प्रांगण में किसने जौहर किया था?

सही उत्तर– केसर दे

तालिका संख्या 5.2.9

प्रश्न संख्या 9 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	58	38	65
छात्राएं	45	33	73
कुल विद्यार्थी	103	71	69



चित्र संख्या - 5.2.9

प्रश्न संख्या 9 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.2.9 एवं चित्र संख्या 5.2.9 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि " गढ़कुंडार दुर्ग के प्रांगण में केसर दे ने जौहर किया था।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 65 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 73 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 69 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि लगभग दो तिहाई से कम विद्यार्थी " गढ़कुंडार दुर्ग के प्रांगण में केसर दे ने जौहर किया" होने से परिचित हैं। छात्रों कि अपेक्षा छात्राएं अधिक परिचित है ऐसा इस लिए हो सकता है कि छात्राओं कि इतिहास/कथाओं के प्रति जिज्ञासा अधिक होती है।

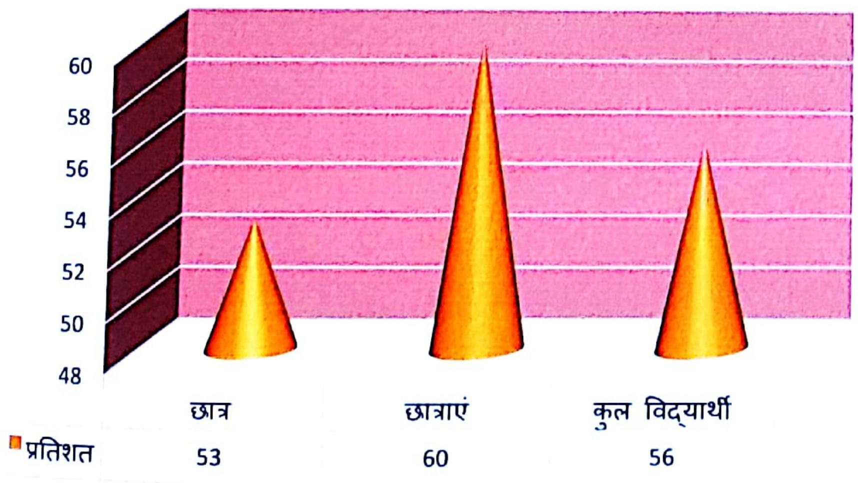
प्रश्न 10. गढ़कुंडार दुर्ग का जीर्णोद्धार किस शासक ने करवाया?

सही उत्तर– बुंदेला वीर सिंह देव

तालिका संख्या 5.2.10

प्रश्न 10 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	58	31	53
छात्राएं	45	27	60
कुल विद्यार्थी	103	58	56



चित्र संख्या – 5.2 10

प्रश्न संख्या 10 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:-उपर्युक्त तालिका संख्या 5.2.10 एवं चित्र संख्या 5.2.10 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि " गढ़कुंडार दुर्ग का जीर्णोद्धार बुंदेला वीर सिंह देव ने करवाया।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 53 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 60 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 56 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि से लगभग आधे विद्यार्थी " गढ़कुंडार दुर्ग का जीर्णोद्धार बुंदेला वीर सिंह देव ने करवाया'होने से परिचित हैं।

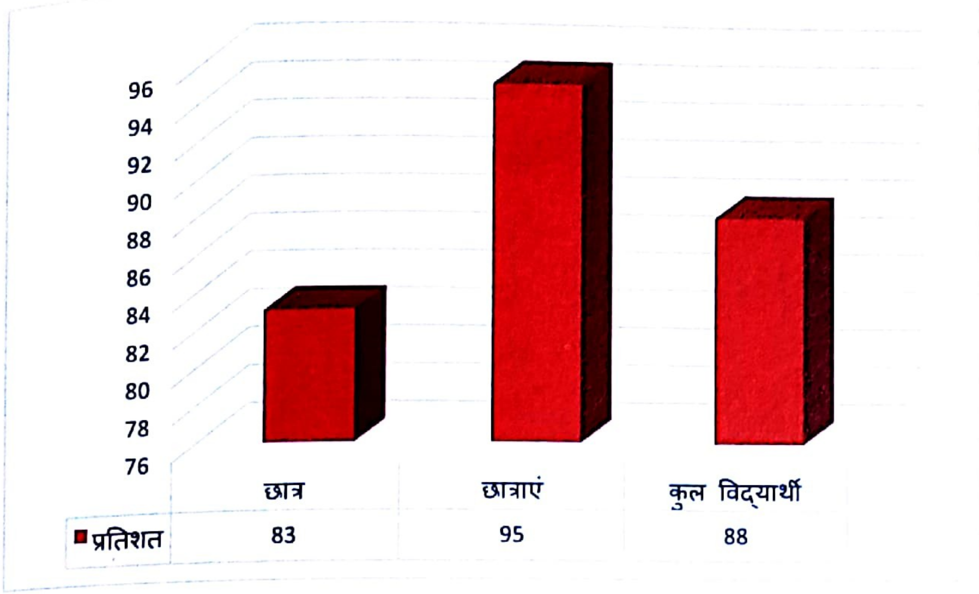
प्रश्न 11. गढ़कुंडार दुर्ग स्थित मंदिर किस पक्षी को समर्पित है?

सही उत्तर– गिद्ध

तालिका संख्या 5.2.11

प्रश्न 11 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	58	48	83
छात्राएं	45	43	95
कुल विद्यार्थी	103	91	88



चित्र संख्या - 5.2.11

प्रश्न संख्या 11 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.2.11 एवं चित्र संख्या 5.2.11 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "गढ़कुंडार दुर्ग स्थित मंदिर गिद्ध पक्षी को समर्पित है" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 83 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 95 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 88 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश विद्यार्थी "गढ़कुंडार दुर्ग स्थित मंदिर गिद्ध पक्षी को समर्पित" होने से परिचित हैं।

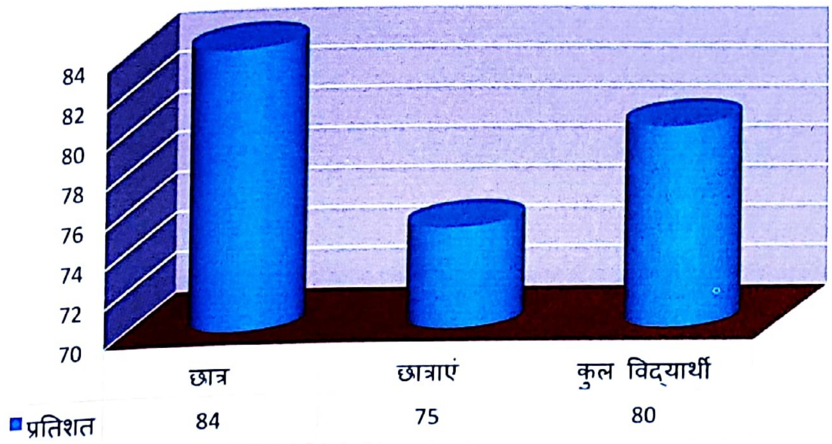
प्रश्न 12. गढ़कुंडार नामक उपन्यास के लेखक-

सही उत्तर– वृंदावन लाल वर्मा

तालिका संख्या 5.2.12

प्रश्न 12 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	58	49	84
छात्राएं	45	34	75
कुल विद्यार्थी	103	83	80



चित्र संख्या - 5.2.12

प्रश्न संख्या 12 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.2.12 एवं चित्र संख्या 5.2.12 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "गढ़कुंडार नामक उपन्यास के लेखक वृंदावन लाल वर्मा है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 84 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 75 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 80 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश विद्यार्थी "गढ़कुंडार नामक उपन्यास के लेखक वृंदावन लाल वर्मा है " होने से परिचित हैं।

प्रश्न 13. चित्र में प्रदर्शित द्वार कहलाता है-

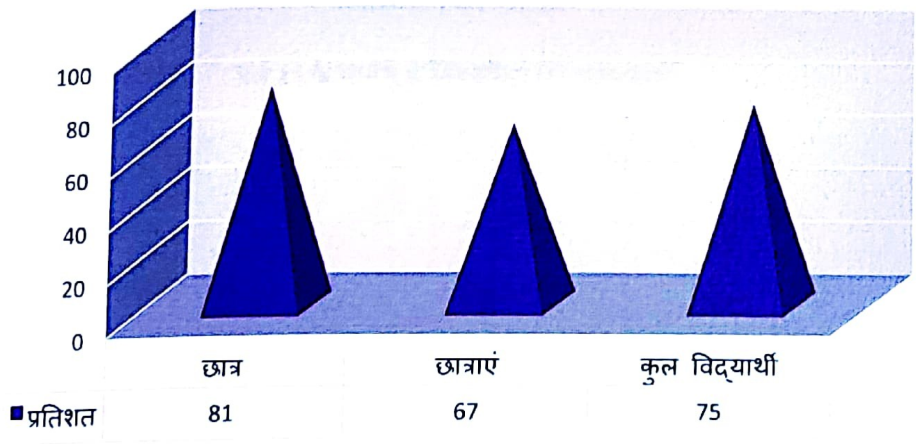


सही उत्तर– सिंह द्वार

तालिका संख्या 5.2.13

प्रश्न 13 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	58	47	81
छात्राएं	45	30	67
कुल विद्यार्थी	103	77	75



चित्र संख्या - 5.2.13

प्रश्न संख्या 13 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.2.13 एवं चित्र संख्या 5.2.13 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "चित्र में प्रदर्शित द्वार "सिंह द्वार" कहलाता है" । ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 81 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 67 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 75 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि तीन चौथाई विद्यार्थी " चित्र में प्रदर्शित द्वार "सिंह द्वार" कहलाता है।" इस तथ्य से परिचित हैं। छात्राओं कि अपेक्षा इस तथ्य से अधिक परिचित हैं।

प्रश्न 14. चित्र में प्रदर्शित है-

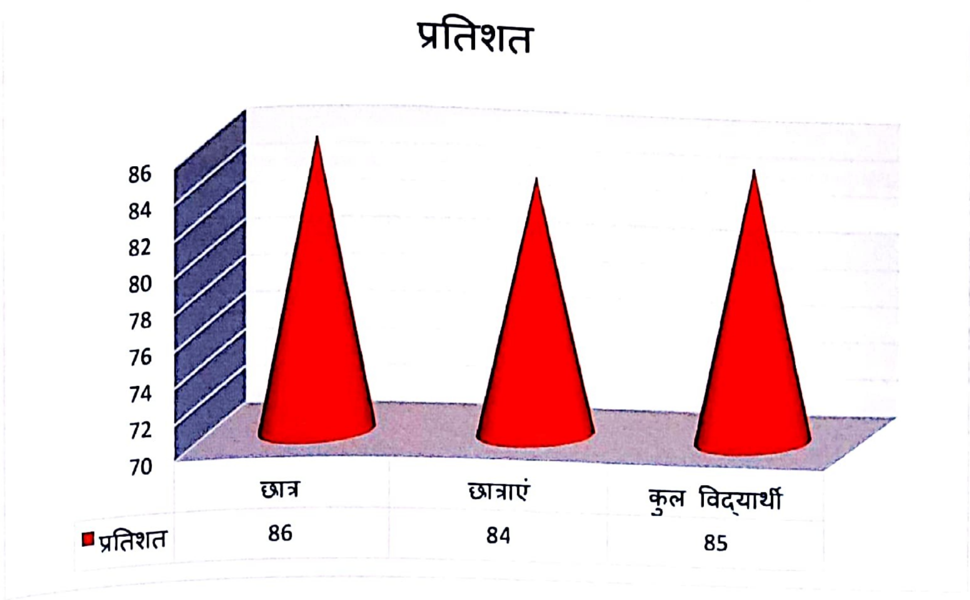


सही उत्तर– बावड़ी

तालिका संख्या 5.2.14

प्रश्न 14 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	58	50	86
छात्राएं	45	38	84
कुल विद्यार्थी	103	88	85



चित्र संख्या - 5.2.14

प्रश्न संख्या 14 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.2.14 एवं चित्र संख्या 5.2.14 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "चित्र में प्रदर्शित बावड़ी है" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 86 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 84 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 85 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश विद्यार्थी "चित्र में प्रदर्शित बावड़ी है।" इस तथ्य से परिचित हैं।

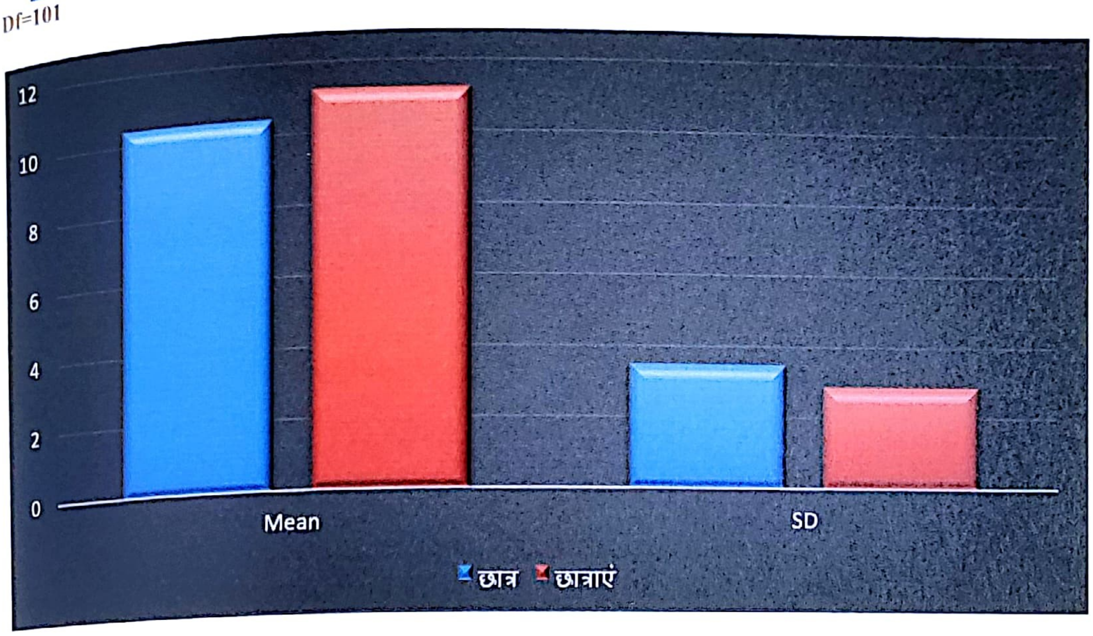
5.3 गढ़कुंडार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या 5.3

गढ़कुंडार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

श्रेणी	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	क्रान्तिक अनुपात गणना मान (CR)	't' तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
छात्र	58	10.43	3.479	1.2523	1.984	0.05	सार्थक अन्तर नहीं है।
छात्राएं	45	11.22	2.866				

Df=101



चित्र संख्या 5.3

गढ़कुंडार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन रेखा-चित्र

विश्लेषण — तालिका संख्या 5.3 एवं चित्र संख्या 5.3 से स्पष्ट है कि गढ़कुंडार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति छात्रों की जागरूकता का मध्यमान 10.43 तथा छात्राओं का मध्यमान 11.22 है। गणना द्वारा प्राप्त

CR मान 1.2523 है जो कि 103स्वतन्त्रांश के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर ‘t’ तालिका मान 1.984 से कम है।

अतः शून्य **परिकल्पना** "गढ़कुंडार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

विवेचना — तालिका संख्या 5.3 एवं चित्र संख्या 5.3 के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि गढ़कुंडार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति छात्र-छात्राओं की जागरूकता का स्तर समान है। छात्र एवं छात्राएँ समान रूप से जागरूक हैं। छात्र-छात्राओं की जागरूकता के मध्यमान मे जो थोडा बहुत अंतर दिखाई दे रहा है उसे संयोग जन्य माना जा सकता है।

अध्याय षष्ठ

निष्कर्ष एवं सुझाव

कोई भी शोध अध्ययन तब तक पूर्ण नहीं माना जाता जब तक उसके द्वारा किसी निष्कर्ष में न पहुँचा जाए।अनुसन्धान की वैज्ञानिक प्रक्रिया में तथ्यों को सापेक्षित कर, निष्कर्षों का सामान्यीकरण करके वर्ग विशेष के लिए अनुमोदित करना, अनुसन्धान का अन्तिम चरण माना गया। एक उत्तम शोध प्रबन्ध कीसबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि उसके निष्कर्ष वस्तुनिष्ठ तथा वैज्ञानिक विधियों द्वारा संग्रहित प्रदत्त पर आधारित हों, उन पर शोधार्थी की व्यक्तिगत धारणाओं एवं अनुमानों का किञ्चित मात्र भी प्रभाव न पड़े। इस अध्याय को निम्न सोपानों में प्रस्तुत किया गया है:

- अध्ययन के निष्कर्ष
- अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता
- अध्ययन के सुझाव
- अध्ययन की सीमाएं
- भावी शोध हेतु सुझाव

6.1 अध्ययन के निष्कर्ष

सम्पूर्ण शोध कार्य के विश्लेषण एवं व्याख्या के पश्चात मुख्य कार्य उद्देश्यों की पूर्ति करना है।प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध के उद्देश्यों के सन्दर्भ में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए –

उद्देश्य 1: गढ़कुंडार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत का अध्ययन करना

शोधकर्ता द्वारा अवलोकन विधि के माध्यम से दो बार गढ़ कुंडर दुर्ग निवाड़ी जाकर वंहा की एतिहासिक विरासत का गहन अध्ययन किया गया।

उद्देश्य 2:गढ़कुंडार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति विद्यार्थी जागरूकता प्रश्नावली का निर्माणकरना

शोधकर्ता द्वारा गढ़कुंडार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण किया गया, जिसमें 14 बहुविकल्पीय (4 विकल्प) प्रश्नों को सम्मिलित किया गया। इस जागरूकता प्रश्नावली का प्रशासन गूगल फॉर्म की सहायता से किया गया।

उद्देश्य 3: गढ़कुंडार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता का उनके लिंग अनुसार अध्ययन करना।

चयनित ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन निम्न परिकल्पना के अन्तर्गत किया गया है, जिनका निष्कर्ष निम्न प्रकार है:

परिकल्पना

गढ़कुंडार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति छात्र-छात्राओं की जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अथार्थ छात्र एव छात्राएं समान रूप से जागरूक है

उद्देश 4:- गढ़कुंडार दुर्ग के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का प्रश्न:श विश्लेषण करना।

गढ़कुंडार दुर्ग के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता को प्रश्न श विश्लेषण किया गया जिसके निष्कर्ष इस प्रकार है

मध्य प्रदेश- अधिकांश विद्यार्थी " गढ़कुंडार दुर्ग मध्यप्रदेश राज्य में स्थित" होने से परिचित हैं।

गढ़ कुंडार दुर्ग- अधिकांश विद्यार्थी " निवाड़ी जिले में स्थित गढ़कुंडार ऐतिहासिक दुर्ग होने" से परिचित हैं।

चंदेल- आधे से भी अधिक विद्यार्थी " गढ़कुंडार दुर्ग का निर्माण चंदेल ने करवाया" होने से परिचित हैं। एक तिहाई से कुछ अधिक छात्र इस तथ्य से परिचित हैं, जबकि छात्राएँ आधे से अधिक परिचित हैं।

बलुआ पत्थर- अधिकांश विद्यार्थी " गढ़कुंडार दुर्ग बलुआ पत्थर से निर्मित" होने से परिचित हैं।

5 खंड- आधे से भी कम विद्यार्थी "गढ़कुंडार दुर्ग 5 खंड में बने होने से" परिचित हैं। आधे से अधिक छात्र परिचित हैं, जबकि आधे से अधिक छात्राएं इस तथ्य से परिचित हैं।

खेत सिंह खंगार- दो तिहाई से कम विद्यार्थी " खेत सिंह खंगार ने गढ़कुंडार को अपनी राजधानी बनाई जाने से परिचित हैं।" दो तिहाई से अधिक छात्राएं इस तथ्य से परिचित हैं, जबकि आधे से अधिक छात्र इस तथ्य से परिचित हैं।

सीता-आधे से कुछ अधिक विद्यार्थी "गिद्ध वाहिनी देवी सीता का स्वरूप है" से परिचित हैं। दो तिहाई छात्राएं इस तथ्य से परिचित हैं, जबकि आधे से कुछ अधिक छात्र इस तथ्य से परिचित हैं,

मोती सागर-दो तिहाई विद्यार्थी ही "गढ़कुंडार दुर्ग के पास स्थित मोती सागर तालाब" होने से परिचित हैं।

केसर दे- एक तिहाई से कम विद्यार्थी " गढ़कुंडार दुर्ग के प्रांगण में केसर दे ने जौहर किया" होने से परिचित हैं।

बुंदेला वीर सिंह देव-एक तिहाई से कुछ अधिक विद्यार्थी " गढ़कुंडार दुर्ग का जीर्णोद्धार बुंदेला वीर सिंह देव ने करवाया"होने से परिचित हैं।

गिद्ध- कि आधे से अधिक विद्यार्थी "गढ़कुंडार दुर्ग स्थित मंदिर गिद्ध पक्षी को समर्पित" होने से परिचित हैं।

वृंदावन लाल वर्मा- कि आधे से अधिक विद्यार्थी "गढ़कुंडार नामक उपन्यास के लेखक वृंदावन लाल वर्मा है " होने से परिचित हैं।

सिंह द्वार -आधे ही विद्यार्थी " चित्र में प्रदर्शित द्वार "सिंह द्वार" कहलाता है।" इस तथ्य से परिचित हैं।

बावड़ी- कि दो तिहाई विद्यार्थी "चित्र में प्रदर्शित बावड़ी है ।इस तथ्य से परिचित हैं। दो तिहाई से अधिक छात्र इस तथ्य से परिचित हैं, जबकि आधे से अधिक छात्राएं इस तथ्य से परिचित हैं।

उद्देश्य 5: चयनित ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता संवर्धन के सम्बन्ध में सुझाव प्रस्तुत करना

गढ़कुंडार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति विद्यार्थी की जागरूकता संवर्धन के लिए सुझाव नीचे 'अध्ययन के सुझाव'शीर्षक के अन्तर्गत प्रस्तुत किए गये हैं-

6.2 अध्ययन के सुझाव

- विद्यालयों में समय-समय परस्थानीय ऐतिहासिक विरासतों से सम्बंधित कार्यक्रम किए जाए।
- विद्यार्थियों की जागरूकता के लिए स्थानीय सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहरों से संबंधित संगोष्ठी और कार्यशालाओं का आयोजन किया जाना चाहिए।
- स्थानीय ऐतिहासिक धरोहरों को शिक्षा के विभिन्न स्तरों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए अथवा जनपद की ऐतिहासिक विरासत से संबंधित सामग्री को पूरक पाठ्यपुस्तक के रूप में शिक्षा के विभिन्न स्तरों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए।
- निवाड़ी बस स्टैण्ड एवं रेलवे स्टेशन में इन विरासतों से सम्बन्धित बोर्ड लगाए जाने चाहिए।
- शिक्षण संस्थानों द्वारा विद्यार्थियों को स्थानीय मेलों के अवसर पर भारतीय स्काउट गाइड, एन.सी.सी, राष्ट्रीय सेवा योजना, रेड क्रॉस सोसाइटी इत्यादि संस्थाओं के माध्यम से ट्रैफिक कंट्रोल, प्याऊ अन्य सेवा कार्य हेतु ले जाया जाना चाहिए। इससे विद्यार्थी स्थानीय संस्कृति के महत्व से परिचित होंगे तथा अपना महत्वपूर्ण योगदान भी कर सकेंगे।
- विद्यार्थियों को विद्यार्थियों को सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण धरोहरों की गहराई सूक्ष्मता से निरीक्षण हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए। शिक्षकों द्वारा अपने मार्गदर्शन में विद्यार्थियों को इसका अभ्यास कराया जाना चाहिए।
- यहां पर गाइड की व्यवस्था की जानी चाहिए जो आने वाले पर्यटकों को गढ़कुंडार दुर्ग की विशिष्टताओं से अवगत करा सकें। शुरुआत में विभिन्न पर्वों के अवसर पर गाइड की व्यवस्था प्रारम्भ की जा सकती है।
- गढ़कुंडार दुर्ग में समीपवर्ती ऐतिहासिक स्थलों की दूरी भी दर्शाई जानी चाहिए ताकि पर्यटक उससे परिचित होकर वहां का भी भ्रमण कर सकें।
- घर-परिवार द्वारा स्थानीय परंपराओं को पीढ़ी दर पीढ़ी अक्षुण्ण बनाए रखने का यत्न पूर्वक प्रयास किया जाना चाहिए । गज-ग्राह जैसे विभिन्न पौराणिक आख्यान को शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर सम्मिलित किया जाना चाहिए ताकि विद्यार्थी भारतीय संस्कृति से परिचित हो सकें।

- एकल परिवार के स्थान पर संयुक्त परिवार को पूरा स्थापित करना होगा ताकि दादी-नानी की छत्र-छाया में बच्चे पौराणिक कथा कहानियों को सुनकर बड़े हों तथा भारतीय संस्कृति को आत्मसात कर सकें।
- गढ़कुंडार दुर्ग के मुख्य मंदिर में विग्रह की पुनर्स्थापना कर पूजा अर्चना प्रारम्भ की जानी चाहिए
- पुरातत्व विभाग द्वारा इसके पुनरुद्धार किए जाने की आवश्यकता है प्रशासन द्वारा दीपावली, देव दीपावली, गणेश चतुर्दशी इत्यादि के अवसर पर इस पर दीपदान की परंपरा को पुनर्जीवित किया जाना चाहिए।
- गढ़कुंडार दुर्ग के मुख्य मंदिर के चारों ओर उकेरी गई मूर्तियों/कलाकृतियों में कुछ भग्न अवस्था में है, जिसे देखकर विभिन्न पर्यटकों की आस्था पर गहरी चोट पहुंचती है। पुरातत्व विभाग द्वारा इसका जीर्णोद्धार कर वैभवशाली स्वरूप प्रदान किए जाने की आवश्यकता है।
- गढ़कुंडार दुर्ग परिसर स्थित बावली एवं मुख्य मंदिर के सम्मुख उसके इतिहास/महत्त्व/ विशिष्टताओं को दर्शाता शिलालेख लगाया जाना चाहिए ताकि पर्यटक उस से भली-भांति परिचित हो सकें और भ्रमण के समय उन विशिष्टताओं का अवलोकन करने में सक्षम हो सकें।
- गढ़कुंडार दुर्ग का पुनरुद्धार कर विश्व विरासत में दर्ज कराने का प्रयास किया जाना चाहिए।
- गढ़कुंडार दुर्ग में प्रवेश पर टिकट की व्यवस्था की जानी चाहिए, जिससे शहर के एक सुदूर कोने में स्थित होने के कारण यह स्थल असामाजिक तत्वों का अड्डा होने से बचे।
- गढ़कुंडार दुर्ग की बाउंड्री वॉल की मरम्मत की जानी चाहिए ताकि इसे अन्ना जानवरों एवं असामाजिक तत्वों के अनधिकृत प्रवेश से बचाया जा सके।
- विद्यालयों द्वारा शैक्षिक भ्रमण का आयोजन किया जाना चाहिए।
- गढ़कुंडार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत का विकीपीडिया पेज बनाया जाना चाहिए।
- गढ़कुंडार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत का सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर व्यापक प्रचार-प्रसार जाना चाहिए।
- निवाड़ी जिले की Official website (https://mpedistrict.gov.in/)के Menu Bar में Download का option होना चाहिए जिसके अन्तर्गत निवाड़ी का पर्यटन मानचित्र तथा पर्यटन स्थलों के ई-ब्रोशर डाउनलोड हेतु उपलब्ध होने चाहिए।

6.3 शैक्षिक उपादेयता

प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणाम शिक्षा जगत, विद्यार्थियों, शिक्षकों, इतिहासकारों, पुरातत्वविदों एवं समाज के लोगों के दृष्टिकोण को विकसित करने एवं ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं के समाधान में सहायक होंगे।

प्रस्तुत अध्ययन में दर्शनीय ऐतिहासिक विरासत पर विस्तृत चर्चा की गई है, साथ ही पर्यटन जैसे विश्वव्यापी महत्व वाले विषय पर प्रकाश डाला गया है। इसके साथ ही स्थानों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष से सम्बन्धित चर्चा की गई है। उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्तर पर ऐतिहासिक धरोहरों के प्रति विद्यार्थियों की अल्प जानकारी को भी प्रकाश में लाया गया है। प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों, शिक्षकों, पाठ्यक्रम निर्माताओं, प्रशासकों, इतिहासकारों, पुरातत्वविदों इत्यादि के लिए अत्यन्त सहायक सिद्ध होगा।

6.3.1 विद्यार्थियों के लिए

- विद्यार्थी गढ़कुंडार दुर्ग के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- विद्यार्थी अपनी क्षेत्रीय धरोहर के महत्व को जान सकेंगे।
- विद्यार्थी गढ़कुंडार दुर्ग के प्रति रुचि विकसित कर सकेंगे।
- विद्यार्थी गढ़कुंडार दुर्ग के प्रति आकर्षित होकर खाली समय पर भ्रमण हेतु जा सकेंगे।

6.3.2 शिक्षकों के लिए

- शिक्षक क्षेत्रीय धरोहर के महत्व को समझकर विद्यार्थियों को बता सकते हैं।
- विद्यार्थियों के मन में गढ़कुंडार दुर्ग के प्रति रुचि जागृति उत्पन्न कर सकते हैं।
- शिक्षक विद्यार्थियों को गढ़कुंडार दुर्ग शैक्षिक भ्रमण हेतु ले जा सकते हैं।
- शिक्षक विद्यार्थियो को गढ़कुंडार दुर्ग के प्रति जागरुक कर सकते हैं।
- शिक्षक अभिभावकों को शैक्षिक भ्रमण के महत्व का ज्ञान करा सकते हैं।

6.3.3 पाठ्यक्रम निर्माताओं के लिए

- ऐतिहासिक विरासतों को उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल करने हेतु नीति बनाने की आवश्यकता है।
- शैक्षिक भ्रमण को उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में विशेष महत्व दिया जाना चाहिए।

- इतिहास विषय के उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम में गढ़कुंडार दुर्ग को पूरक पाठ्य पुस्तक के रूप में सम्मिलित किया जा सकता है।

6.3.4 प्रशासकों के लिए

- जिले के प्रशासक गढ़कुंडार दुर्ग पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करा सकतेहैं।
- उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को गढ़कुंडार दुर्ग के शैक्षिक भ्रमण हेतु दिशा निर्देश जारी कर सकते हैं।
- निवाड़ी नगर के प्रशासक निवाड़ी बस स्टैण्ड एवं रेलवे स्टेशन में गढ़कुंडार दुर्ग से सम्बन्धित बोर्ड लगवा सकतेहैं।
- निवाड़ी नगर के मुख्य चौराहों पर गढ़कुंडार दुर्ग से सम्बन्धित बोर्ड लगवाए जा सकते हैं।
- प्रस्तुत शोध में दिए गये सुझावों के आधार पर देश तथा प्रदेश की पर्यटक वेबसाइट्स में गढ़कुंडार दुर्ग का उल्लेख किया जा सकता है।

6.3.5 इतिहासकारों के लिए

- इतिहासकार गढ़कुंडार दुर्ग मन्दिर से जुड़े इतिहास के विषय में गहन जानकारी एकत्रित कर सकते हैं।
- इतिहासकार गढ़ कुंडार दुर्ग की बावली तथा उसके तलों से जुड़े रहस्य के विषय में पता लगा सकते हैं।

6.3.6 पुरातत्वविदों के लिए

- पुरातत्वविद गढ़कुंडार दुर्ग के पेशवा कालीन मंदिर के विषय में खोज कर सकते हैं।
- गढ़कुंडार दुर्ग के मंदिर के गुम्बद में प्रदर्शित मूर्तियों के विषय में खोजबीन कर सकते हैं।

6.4 अध्ययन की सीमाएँ

- शोध में प्रयुक्त स्वनिर्मित उपकरण का समय व धन के अभाव के कारण मानकीकरण सम्भव नहीं हो पाया है।
- प्रयुक्त शोध में आँकड़े एकत्रित करने के लिए विद्यार्थियों का चयन उपलब्धता के आधार पर किया गया है।

6.5 भावी शोध हेतु सुझाव

शोध अध्ययन के क्षेत्र में सत्य की खोज निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। कोई भी शोधकार्य पूर्ण व अन्तिम नहीं होता वरन् यह एक ऐसी श्रृंखला जिसमें एक कड़ी के सम्पन्न होने के साथ ही दूसरी कड़ी की शुरुआत होती है। कोई भी अध्ययन एक निश्चित परिधि तक सीमित रहता है किन्तु उसी क्षेत्र में और कार्य अन्य शोधार्थियों द्वारा किए जा सकते हैं ताकि समस्या का अधिक स्पष्ट निरूपण हो सके। शोध अध्ययन के अधिक स्थिर एवं विश्वसनीय परिणाम प्राप्त करने के लिए एक ही शोध समस्या पर कई शोध अध्ययनों का किया जाना आवश्यक होता है। शोध समस्या के लिए अधिक समय व धन की आवश्यकता

होती है जो कि केवल एक शोधार्थी के लिए सम्भव नहीं होता, जिसके कारण वह एक विषय के विभिन्न पहलुओं पर कार्य नहीं कर पाता। एक शोध समस्या पर किया गया शोधकार्य, दूसरे शोधार्थी द्वारा किए गये शोध अध्ययन के लिए मार्गदर्शन एवं सुझाव का कार्य करता है। इस शोधकार्य के आधार पर भावी अध्ययनों के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत हैं–

- वर्तमान शोध अध्ययन उत्तर प्रदेश केनिवाड़ी जनपद के गढ़कुंडार दुर्ग तक सीमित है, भावी शोध अध्ययन में अन्यजनपदों/राज्योंकी अन्य ऐतिहासिक विरासतों को सम्मिलित किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन निवाड़ी जनपद की ऐतिहासिक विरासत गढ़ कुंडार दुर्ग तक ही सीमित है, भावी अध्ययन में निवाड़ी जनपद की अन्य ऐतिहासिक विरासतों को सम्मिलित किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं महाविद्यालयीन के विद्यार्थियों की जागरूकता तक सीमित है, भावी अध्ययन में प्राथमिक तथा उच्च स्तर के विद्यार्थियों को भी सम्मिलित किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श का चयन सुविधा अनुसार विधि से किया गया है, भावी अनुसन्धान में सम्भाव्य विधि द्वारा न्यादर्श का चयन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- *अवस्थी, निधि (2005)। 'ग्रामीण और नगरीय परिवारों की जनसंख्या नियन्त्रण के प्रति जागरूकता का अध्ययन'। एम०एड० लघु शोध प्रबन्ध। अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा (बाँदा)।*
- *पाठक, योगेश (2011)। ' पूर्वी उत्तर प्रदेश के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का सूचना क्रान्ति, परम्परागत विषयों तथा पर्यावरण जागरूकता के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन'। एम०एड० लघु शोध प्रबन्ध। अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा (बाँदा)।*
- *सिंह, लक्ष्मण (2016)। 'अलीगढ़ मण्डल के ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत शिक्षकों की पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन'। एम०एड० लघु शोध प्रबन्ध। अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा (बाँदा)।*
- *त्रिपाठी, शैलेन्द्र कुमार (2018)। 'अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में एड्स के प्रति जागरूकता एवं पर्यावरण ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन'। एम०एड० लघु शोध प्रबन्ध। अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा (बाँदा)।*
- *चौरसिया, पूजा(2019)। 'माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कालिंजर दुर्ग कि ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन'। एम०एड० लघु शोध प्रबन्ध। अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा (बाँदा)।*
- *कुमार, दीपक (2021)। 'विद्यार्थियों में मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता का अध्ययन'। एम०एड० लघु शोध प्रबन्ध। अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा (बाँदा)।*
- *पूनम राठौर, (2020)। 'अनुसूचित पिछड़े एवं सामान्य जाति के स्नातकोत्तर स्तर विद्यार्थियों के मानवाधिकार जागरूकता एवं व्यक्तिगत मूल्य विकास का तुलनात्मक अध्ययन'। एम०एड० लघु शोध प्रबन्ध।अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा (बाँदा)।*
- *चौहान, सागर सिंह (2022)। 'बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन'। एम०एड० लघु शोध प्रबन्ध। अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा (बाँदा)।*
- *सिंह, जैनेन्द्र (2022)। 'बुन्देलखण्डीय जल प्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन'। एम०एड० लघु शोध प्रबन्ध। अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा (बाँदा)।*

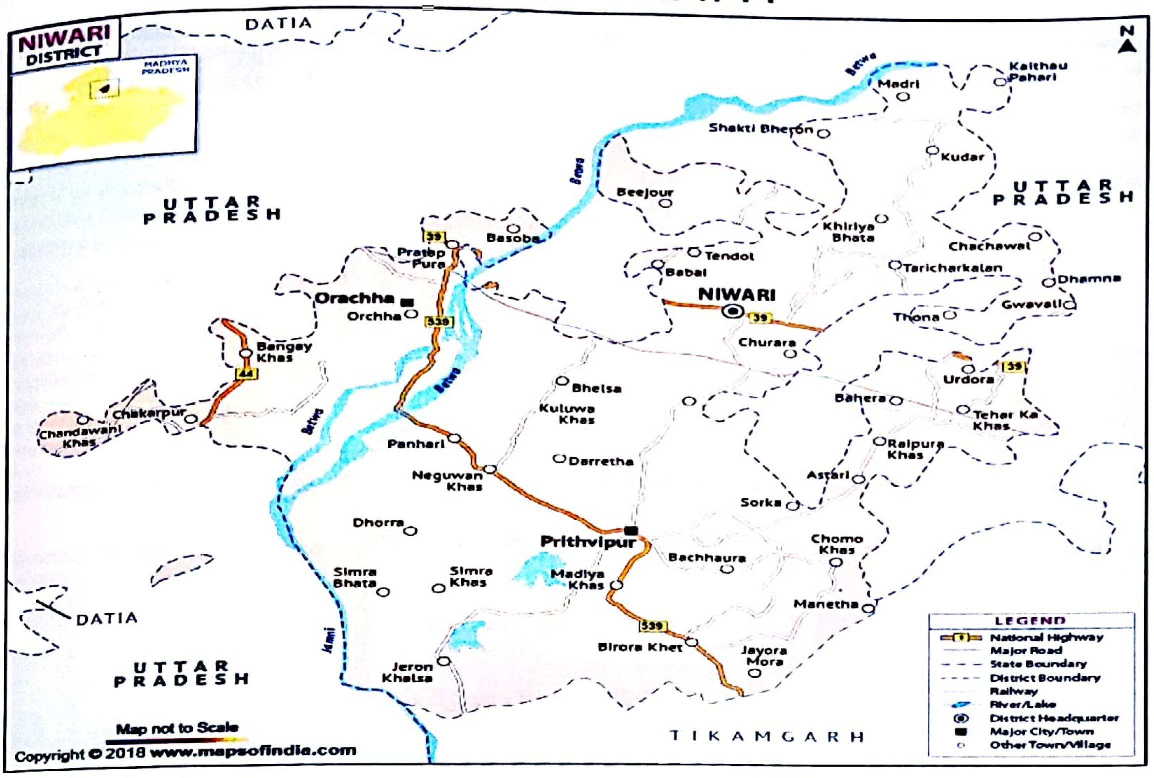
- वर्मा, धीरेन्द्र कुमार (2022)। 'गणेश बाग़ की ऐतिहासिक विरासत के प्रति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन'। एम०एड० लघु शोध प्रबन्ध। अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा (बाँदा)।
- प्रकाश, धर्म (2023)। ' 'महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में स्थानीय पक्षियों के प्रति जागरूकता का अध्ययन'। एम०एड० लघु शोध प्रबन्ध। अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा (बाँदा)।
- कुमार, अनुराग (2023)। 'मोरध्वज आश्रम के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन'। एम०एड० लघु शोध प्रबन्ध। अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा (बाँदा)।

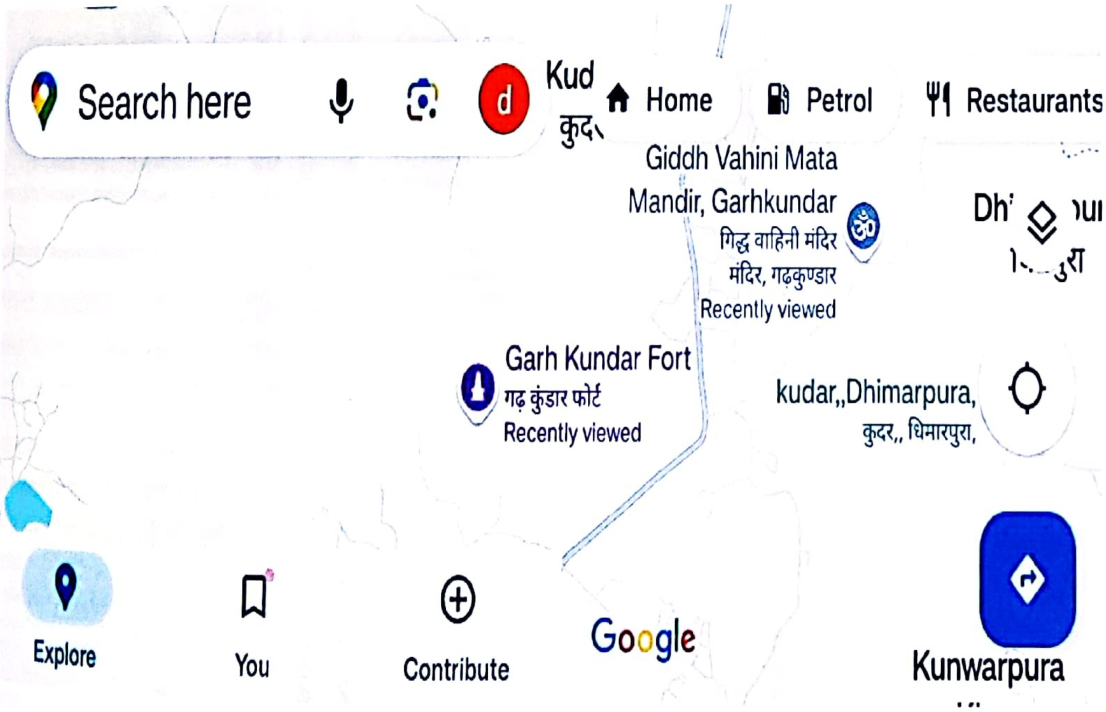
Webliography

- *Easyayurveda/ https://www.easyayurveda.com/*
- *MyUpchar/ https://www.myupchar.com/ayurveda*
- *Indiplant/ https://www.myupchar.com/ayurveda*
- *Plantnet/ https://identify.plantnet.org/hi*
- *Picturethis/ https://www.picturethisai.com/identify*
- *Plantid/Kindwise/ https://plant.id/*
- *Vikaspedia/Center for development of advanced computing, Hyderabad/ https://vikaspedia.in/InDG*
- *Wikipedia/ https://www.wikipedia.org/*
- *https://mp.gov.in/*
- *https://niwari.nic.in/*

परिशिष्ट-I

निवाड़ी जनपद का मानचित्र

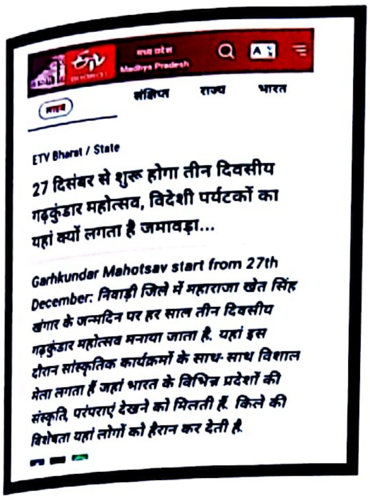




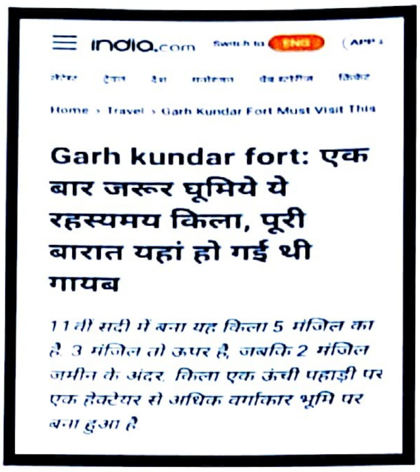
गढ़कुंडार दुर्ग की अवस्थिति

परिशिष्ट-II

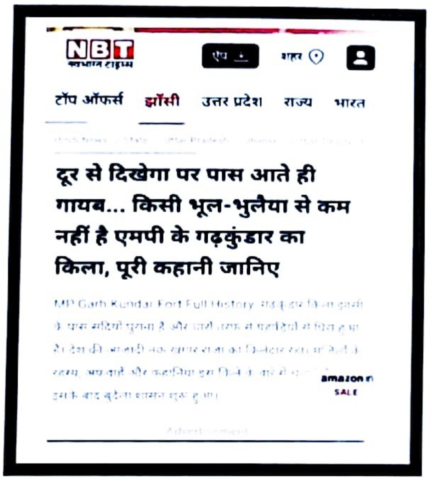
गढ़कुंडार दुर्ग से संबंधित समाचार, लेख इत्यादि















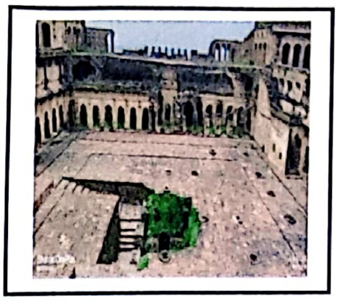
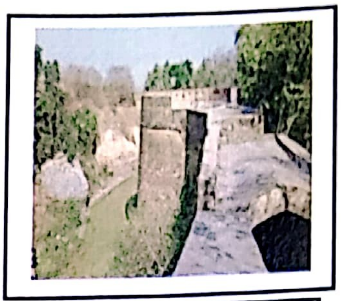


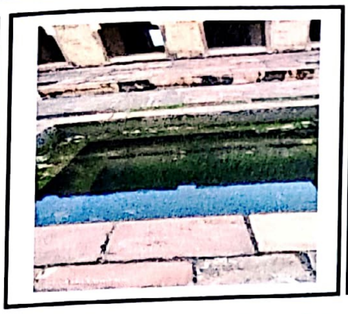
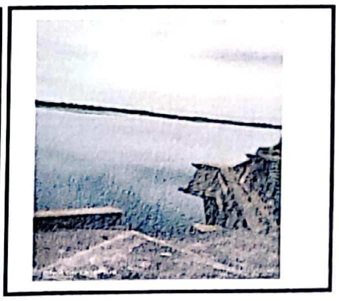


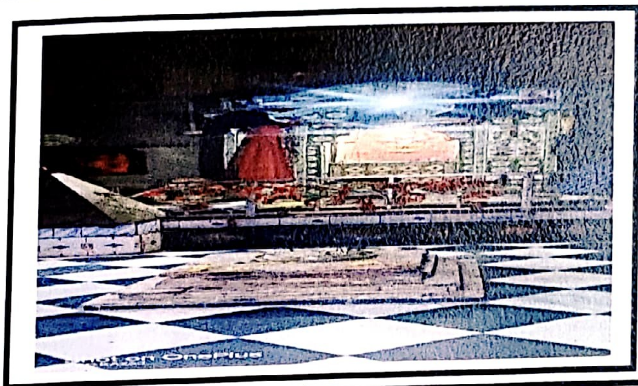
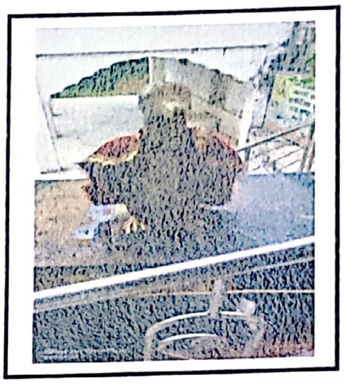
परिशिष्ट-III

गढ़कुंडार दुर्ग चित्रावली



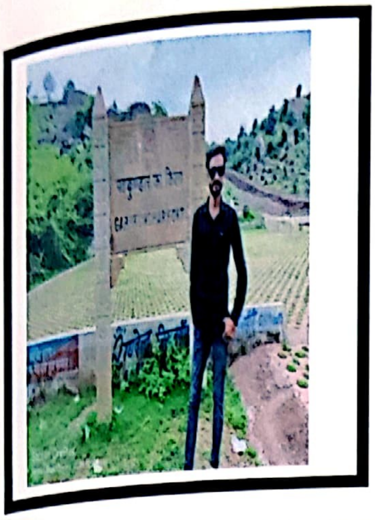
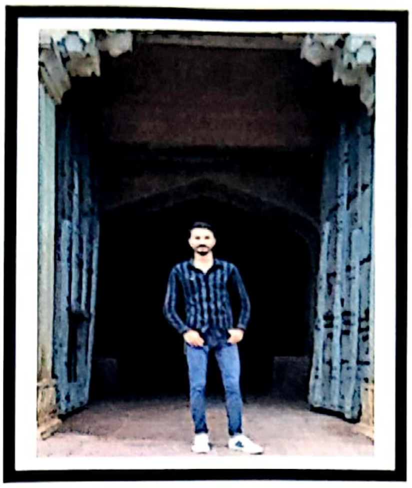



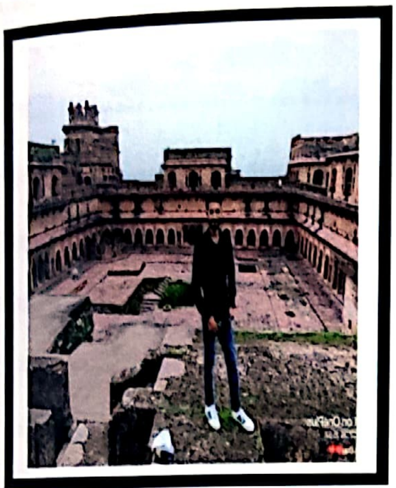
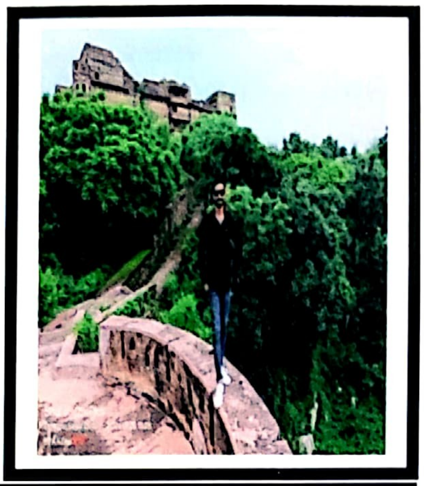




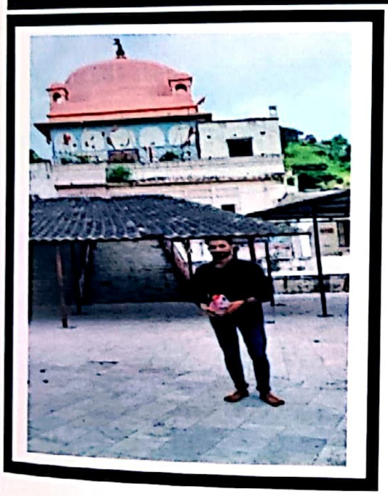


परिशिष्ट-IV

गढ़कुंडार दुर्ग से संबंधित भ्रमण चित्रावली





परिशिष्ट-V

गढ़कुंडार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरुकता प्रश्नावली-प्रथम प्रारूप

गढ़कुंडार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरुकता प्रश्नावली

मार्गदर्शक
डॉ0 राजीव अग्रवाल

शोधार्थी
दीपक कुमार

निम्न सूचनाए भरिए :

नाम...

पिता कानाम...

विद्यालय का नाम..

कक्षा...

मोबाइल नं...

ई-मेल...

निर्देश

प्रस्तुत प्रश्नावली विद्यार्थियों में गढ़कुंडार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता के अध्ययन से सम्बन्धित है। इसमें गढ़कुंडार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता सम्बन्धी प्रश्न दिए गये हैं। दिए गए विकल्पों में से किसी एक पर सही का चिह्न लगायें। सभी प्रश्न करने अनिवार्य है। आपके द्वारा दी गयी जानकारी केवल शोध कार्य में प्रयुक्त की जाएगी, अतः आप निष्पक्ष रूप से अपने विचार प्रकट करें।

प्रश्न-01:- गढ़कुंडार दुर्ग किस राज्य में स्थित है?

क-उत्तरप्रदेश खख-राजस्थान ग-मध्यप्रदेश घ-बिहार

प्रश्न-02:-निवाड़ी जिले में स्थित ऐतिहासिक दुर्ग है-

क-कालिंजर दुर्ग ख-बरुआसागर दुर्ग ग-गढ़कुंडार दुर्ग घ-रतनगढ़ दुर्ग

प्रश्न-03:-गढ़कुंडार दुर्ग का निर्माण किसने करवाया?

क-चंदेल ख-चौहान ग-बुंदेला घ-राजपूत

प्रश्न-04:-गढ़कुंडार दुर्ग किन प्रस्तरों से निर्मित है?

क- लाल पत्थर ख-चूना पत्थर ग-बलुआ पत्थर घ-ग्रेनाइट

प्रश्न-05:-गढ़कुंडार दुर्ग की ऊंचाई है-

क-100 फीट ख-150 फीट ग-200 फीट घ-250 फीट

प्रश्न-06:-गढ़कुंडार दुर्ग कितने खंड में बना है?

क-2 खंड ख-3 खंड ग-5 खंड घ-6 खंड

प्रश्न-07:-किस शासक ने गढ़कुंडार को अपनी राजधानी बनाई?

क-खेत सिंह खंगार ख-छत्रपाल सिंह ग-नंदपाल घ-मानसिंह

प्रश्न-08:- गिद्ध वाहिनी माता का मंदिर किसने बनवाया?

क-खेत सिंह खंगार ख-छत्रपाल सिंह ग-नंदपाल घ-सोहन पाल

प्रश्न-09:-गिद्ध वाहिनी देवी माता का मंदिर का निर्माण कब हुआ?

क-1182 ख-1213 ग-1210 घ-1190

प्रश्न-10:-गिद्ध वाहिनी देवी किसका स्वरूप है?

क-सीता ख-दुर्गा ग-काली घ-राधा

प्रश्न-11:-राजकुमारी केसर दे किस राजा की पुत्री थी?

क-खेत सिंह ख-भूप सिंह ग-मानसिंह घ-छत्रपाल सिंह

प्रश्न-12:-किले के मुख्य द्वार को क्या कहा जाता है?

क-सिंह द्वार खद-दुर्गा द्वार ग-अमृत द्वार घ-कीरत द्वार

प्रश्न-13:-खंगार राजवंश की स्थापना कब हुई?

क-1180 ख-1182 ग-1347 घ-1210

प्रश्न-14:-गढ़कुंडार दुर्ग के पास स्थित तालाब है-

क-मोती सागर ख-सिंधु सागर ग-कीरत सागर घ-विजयसागर

प्रश्न-15:-गढ़कुंडार दुर्ग के प्रांगण में किसने जोहर किया था?

क-केसर दे ख-रानी पद्मावती ग-रानी बाई घ-फूल कंवर

प्रश्न-16:-गढ़कुंडार दुर्ग का जीर्णोद्धार किस शासक ने करवाया?

क-बुंदेला वीर सिंह देव ख-खूब सिंह खंगार ग-खेत सिंह खंगार घ-परमल शासक सेवा

प्रश्न-17:-गढ़कुंडार दुर्ग स्थित मंदिर किस पक्षी को समर्पित है?

क-मोर ख-गिद्ध ग- कौआ घ-बाज

प्रश्न-18:-गढ़कुंडार नामक उपन्यास के लेखक-

क- सुभद्राकुमारी चौहान ख-मैथिलीशरण गुप्त ग-वृंदावन लाल वर्मा घ-जयशंकर प्रसाद

प्रश्न-19:-चित्र में प्रदर्शित द्वार कहलाता है-



क-सिंह द्वार ख- हनुमान द्वारा

ग-गणेश द्वार घ-लक्ष्मी द्वार

प्रश्न-20:-चित्र में प्रदर्शित है-



क- बावड़ी ख-रानी महल

ग-पंचमहल घ-सैन्य छावनी

परिशिष्ट-VI

अंतिम प्रारूप

विद्यार्थियों में गढ़कुंडार दुर्ग के प्रति जागरूकता का अध्ययन

B I U

Form description

Email *

Valid email

This form is collecting emails. Change settings

नाम *

Short answer text

पिता का नाम *

Short answer text

विद्यालय का नाम *

Short answer text

कक्षा *

Short answer text

छात्र/छात्रा *

- [ ] छात्र
- [ ] छात्रा

ई० मेल *

Short answer text

मोबाइल न० *

Short answer text

गढ़कुंडार दुर्ग किस राज्य में स्थित है ? *

- उत्तर प्रदेश
- मध्य प्रदेश
- गुजरात
- बिहार

निवाड़ी जिले में स्थित ऐतिहासिक दुर्ग है *

- बरुआसागर दुर्ग
- कालिंजर दुर्ग
- गढ़कुंडार दुर्ग
- रतन गढ़ दुर्ग

गढ़कुंडार दुर्ग का निर्माण किसने करवाया ? *

- चंदेल
- चौहान
- बुन्देला
- राजपूत

गढ़कुंडार दुर्ग किन प्रस्तरो से निर्मित है ? *

- लाल पत्थर
- चूना पत्थर
- बलुआ पत्थर
- संगमरमर

गढ़कुंडार दुर्ग कितने खण्ड में बना हुआ है ? *

- दो खण्ड
- तीन खण्ड
- सात खण्ड
- पाँच खण्ड

किस शासक ने गढ़कुंडार दुर्ग को अपनी राजधानी बनाई? *

- खेत सिंह खंगार
- छत्रपाल सिंह
- नन्द पाल सिंह
- मान सिंह

गिद्धवाहनी देवी माँ किसका स्वरूप हैं ? *

- सीता
- दुर्गा
- काली
- राधा

गढ़कुंडार दुर्ग के पास स्थित तालाब है *

- सिन्धु सागर
- कीरत सागर
- विजय सागर
- मोती सागर

गढ़कुंडार दुर्ग के प्रांगण में किसने जौहर किया था ? *

- केसर दे
- रानी पद्मावती
- फूल कुंवर
- रानी बाई

गढ़कुंडार दुर्ग का जीर्णोद्धार किस शासक ने करवाया था *

- खूब सिंह खंगार
- खेत सिंह खंगार
- बुंदेला वीर सिंह देव
- परमाल शासक शिवा

गढ़कुंडार दुर्ग के पास स्थित मंदिर किस पक्षी को समर्पित है ? *

- मोर
- गिद्ध
- कौआ
- बाज

गढ़कुंडार नामक उपन्यास के लेखक है *

- सुभद्रा कुमारी चौहान
- मैथलीशरण गुप्त
- जयशंकर प्रसाद
- वृंदावनलाल वर्मा

चित्र में प्रदर्शित द्वार कहलाता है *



- ◯ सिंह द्वार
- ◯ हनुमान द्वार
- ◯ गणेश द्वार
- ◯ लक्ष्मी द्वार

चित्र में प्रदर्शित है ? *



- ◯ सैन्य छावनी
- ◯ बावड़ी
- ◯ रानी महल
- ◯ पंच महल

परिशिष्ट-VII

प्रश्नावली उत्तर माला

प्रश्न-01:- गढ़कुंडार दुर्ग किस राज्य में स्थित है? **(मध्यप्रदेश)**

प्रश्न-02:-निवाड़ी जिले में स्थित ऐतिहासिक दुर्ग है- **(गढ़कुंडार दुर्ग)**

प्रश्न-03:-गढ़कुंडार दुर्ग का निर्माण किसने करवाया? **(चंदेल)**

प्रश्न-04:-गढ़कुंडार दुर्ग किन प्रस्तरों से निर्मित है? **(बलुआ पत्थर)**

प्रश्न-05:-गढ़कुंडार दुर्ग कितने खंड में बना है? **(5 खंड)**

प्रश्न-06:-किस शासक ने गढ़कुंडार को अपनी राजधानी बनाई? **(खेत सिंह खंगार)**

प्रश्न-07:-गिद्ध वाहिनी देवी किसका स्वरूप है? **(सीता)**

प्रश्न-08:-गढ़कुंडार दुर्ग के पास स्थित तालाब है- **(मोती सागर)**

प्रश्न-09:-गढ़कुंडार दुर्ग के प्रांगण में किसने जौहर किया था? **(केसर दे)**

प्रश्न-10:-गढ़कुंडार दुर्ग का जीर्णोद्धार किस शासक ने करवाया? **(बुंदेला वीर सिंह देव)**

प्रश्न-11:-गढ़कुंडार दुर्ग स्थित मंदिर किस पक्षी को समर्पित है? **(गिद्ध)**

प्रश्न-12:-गढ़कुंडार नामक उपन्यास के लेखक- **(वृंदावन लाल वर्मा)**

प्रश्न-13:-चित्र में प्रदर्शित द्वार कहलाता है- **(सिंह द्वार)**



प्रश्न-14:-चित्र में प्रदर्शित है- **(बावड़ी)**



परिशिष्ट-VIII

जीवन वृत्त



नाम— दीपक कुमार

माता का नाम— फूला देवी

पिता का नाम— राम प्रसाद

जन्म तिथि— 02 सितम्बर 1995

स्थाई पता— फ्रेंड्स कॉलोनी ग्वालियर रोड (U.P.)

पिन कोड—289204

मोबाइल नंबर— +8172892217,

ईमेल—deepakkumar7@gmail.com

शैक्षणिक योग्यताएं—

क्रमांक	परीक्षा का नाम	विश्वविद्यालय/बोर्ड/महाविद्यालय का नाम	वर्ष	प्राप्तांक	श्रेणी	प्रतिशत
1.	हाईस्कूल	यू०पी० बोर्ड, प्रयागराज	2011	361/500	द्वितीय	53.66%
2.	इण्टरमीडिएट	यू०पी० बोर्ड, प्रयागराज	2013	392/500	प्रथम	80.21%
3.	स्नातक	बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी	2017	920/1350	द्वितीय	56.2%
5	परास्नातक	बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी	2019	920/1350	द्वितीय	48.88%
4.	बी०एड०	बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी	2021	835/1200	प्रथम	74.67%

प्रकाशित पुस्तक—

क्रमांक	शीर्षक	वर्ष	पृष्ठ संख्या	ISBN	वेबसाइट
1.		-	-		

घोषणा: मैं एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि उपरोक्त सभी जानकारी मेरे संज्ञानानुसार सर्वोत्तम रूप से सत्य है।

दिनांक: 23/10/2024

स्थान: अतर्रा, बांदा

दीपक कुमार

विद्यार्थियों में गढ़कुंडार दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन

पत्थरों में गूँजती वीरों की गाथा,शौर्य की पहचान है गढ़कुंडार किला।
हर दीवार कहती है संघर्ष की बातें,गूँजता है अतीत यहाँ हर इक सिला।

सूरज भी सिर झुकाए चमकता यहाँ,इतिहास के पन्नों में दर्ज नाम यहाँ।
बुलंद इरादों की है यह मूक निशानी,बचाए रखी है वीरों की जुबानी।

सदियों से अडिग, ये गवाह रहा,रणबांकुरों की जंग का साक्षी बना
गढ़कुंडार किला गर्व से खड़ा,हर भारतवासी का मान बना!

ISBN: 978-9-33425-461-7
9 789334 254617